बागेश्वर धाम एवं मेहंदीपुर बालाजी के चरणों में समर्पित

दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

संस्कार उजाला

सच की हुंकार

sanskarujala@gmail.com

संस्थापक स्व० सुखराम शर्मा एवम शिवकुमार शर्मा, श्री प्रकाशवीर

सच की हुंकार

संस्थापक
स्व. श्री आर. के. शर्मा

गाजियाबाद से प्रकाशित, दिल्ली, नोएडा, गाजियाबाद, हरियाणा, सहारनपुर, मेरठ, मुरादाबाद, बरेली, हापुड, बुलंदशहर, मथुरा आगरा, इटावा, कानपुर एंव लखनऊ से प्रसारित

वर्ष : 12 अंक : 161 | बुधवार 02 अक्टूबर 2024, गाजियाबाद | RNI No-UPHIN / 2013 / 50466 | पेज: 8 मूल्य : 2 रुपया

[सुविचार]

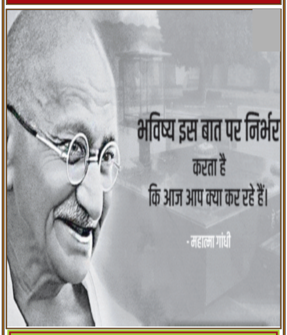

संक्षिप्त समाचार

फिल्म अभिनेता गोविंदा को लगी गोली, आईसीयू में भर्ती, खतरे से बाहर

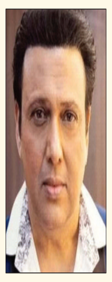

मुंबई। मशहूर फिल्म अभिनेता एवं शिवसेना नेता गोविंदा, गोली लगने से घायल हो गए हैं। उनके पैर में उस वक्त गोली लगी जब वे अपना लाइसेंसी रिवाल्वर साफ कर रहे थे। दरअसल हुआ ये कि गोविंदा को कोलकाता जाना था। इसकी तैयारी कर रहे थे, तभी उन्होंने अपना रिवाल्वर साफ किया और उसे कवर में रखने लगे। इसी बीच रिवाल्वर हाथ से छूट गया और जमीन पर गिरते ही फायर हो गया। इससे उनके पैर में गोली धस गई। हालांकि राहत की बात ये है कि उनकी हालत खतरे से बाहर है और डॉक्टरों ने गोली निकाल दी है। इस वक्त वह आईसीयू में हैं और उनका इलाज चल रहा है।

राफेल की कीमत हुई कम... भारत के लिए अच्छी खबर

नई दिल्ली। भारत और फ्रांस भारतीय विमानवाहकों के लिए आवश्यक राफेल मेरीन लड़ाकू जेट के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के करीब हैं, इससे दोनों पक्ष अधिग्रहण के लिए अंतिम बोली लगा सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि रक्षा मंत्रालय में कई दौर की वार्ता के बाद, डील के अंतिम मूल्य के प्रस्ताव में काफी कमी आई है, और सौदे को 2016 की डील पर बेंचमार्क किया जाएगा, जिसमें वायु सेना के लिए 36 राफेल जेट खरीदे गए थे। तीन सालों से चल रहा अधिग्रहण इस सप्ताह राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार अजीत डोभाल की पेरिस यात्रा के दौरान भी चर्चा में रहेगा। नौसेना लड़ाकू अधिग्रहण के साथ-साथ मुंबई में बनने वाली तीन अडिशनल कलवरी श्रेणी की पनडुब्बियों का ऑर्डर फ्रांस के साथ किए जा रहे दो प्रमुख रक्षा सौदे हैं।

पीएम मोदी ने की नेतन्याहू से फोन पर बात....

नई दिल्ली। इजरायल की ओर से चौतरफा जंग का आगाज किया गया है। हर तरफ तबाही मची हुई है। अब ये बात होने लगी हैं कि आखिर इजरायल कब रुकने वाला है। इस बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की इजरायल के पीएम बेंजामिन नेतन्याहू से फोन पर बातचीत नई चर्चा को जन्म दे दिया है। पीएम मोदी को लेकर पहले ही चर्चा हैं कि वे रूस और यूक्रेन के बीच युद्ध रोकने के लिए कोशिशों में लगे हैं। इस बीच प्रधानमंत्री मोदी का इजरायली प्रधानमंत्री नेतन्याहू से फोन पर बात करना फिर से चर्चाओं को शुरू कर चुका है। दरअसल, पीएम मोदी ने इजरायली प्रधानमंत्री से बात करने के बारे में जानकारी देकर कहा कि पीएम नेतन्याहू से पश्चिम एशिया में हाल के घटनाक्रमों के बारे में बात की। पीएम मोदी ने कहा कि हमारी दुनिया में आतंकवाद के लिए कोई जगह नहीं है। क्षेत्रीय तनाव को रोकने और सभी बंधकों की सुरक्षित रिहाई सुनिश्चित करना अहम है। भारत शांति और स्थिरता जल्द बहाल करने की कोशिशों को समर्थन देने के लिए प्रतिबद्ध है।

फिर आस्था से खिलवाड़: तिरुपति बालाजी के लड्डू में मिला गुटका पैकेट

-भक्त उठा रहे सवाल- आखिर लड्डू में पैकेट कहां से आया?

अमरावती। तिरुपति बालाजी के लड्डू प्रसादम् विवाद अभी ठंडा भी नहीं हुआ था कि नया मामला सामने आ गया। जानवरों की चर्बी के बाद तिरुपति के लड्डू में अब गुटका का पैकेट मिला है। यह देखकर प्रसाद खाने वाले भक्त कहने पर मजबूर हो गए कि भगवान यह क्या हो रहा है। क्या तिरुमाला तिरुपति देवस्थानम (टीटीडी) लोगों की भावनाओं से खेल रहा है। पिछली सरकार के दौरान पाया गया था कि लड्डू में जानवरों की चर्बी और मछली तेल का इस्तेमाल होता है। अब पिछले सप्ताह एक भक्त को प्रसाद के लड्डू में गुटखा का पैकेट मिला है। आंध्र प्रदेश के खम्मम जिले के ग्रामंतरा मंडल के तहत गोलागुडेम पंचायत कार्तिकेय टाउनशिप के निवासी डोंथु पद्मावती 19 सितंबर को तिरुमाला तिरुपति मंदिर दर्शन करने गए थे। मंदिर में पूजा करने के बाद उन्होंने लड्डू का प्रसाद लिया और घर लौट आए। इसके बाद 22 सितंबर को पड़ोसियों और रिश्तेदारों को प्रसाद बांटने के लिए जब इसे खोला गया तो लड्डू में गुटखा का पैक निकला। यह देखकर वह हैरान रह गए इसकी उन्होंने सोशल मीडिया पर नाराजगी जताई है।

-बुलडोजर केस में सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी

कोई भी मंदिर, मस्जिद...सार्वजनिक बाधा नहीं बन सकती

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने सार्वजनिक स्थल पर बने मंदिर, मस्जिद या किसी दूसरे धार्मिक स्थल को हटाने को लेकर सख्त टिप्पणी की है। बुलडोजर केस में सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने कहा है कि हम एक धर्मनिरपेक्ष देश हैं। हमारे निर्देश सभी के लिए हैं, चाहे वे किसी भी धर्म या समुदाय के हों। बेशक, सार्वजनिक स्थानों पर अतिक्रमण के लिए कहा है कि अगर यह सार्वजनिक सड़क या फुटपाथ या जल निकासी या रेलवे लाइन क्षेत्र पर है, तब स्पष्ट कर दिया है। अगर सड़क के बीच में कोई धार्मिक संरचना है, तब वह सार्वजनिक बाधा नहीं बन सकती।

सुनवाई के दौरान जस्टिस गवई ने कहा कि चाहे मंदिर हो, दरगाह हो या अन्य कोई दूसरा धार्मिक स्थल। जहां जनता की सुरक्षा की बात हो और सार्वजनिक स्थल पर हो तब उस हटाना ही होगा। जनता की सुरक्षा सर्वोपरि है। सुनवाई के दौरान जस्टिस केवी विश्वनाथन ने कहा कि अगर उल्लंघन करने वाले दो स्ट्रक्चर हैं और सिर्फ एक के खिलाफ ही कार्रवाई की जाती है, तब सवाल उठना लाजिमी है।

जस्टिस गवई ने कहा, हम ये साफ कर देते हैं कि सिर्फ इसकारण तोड़फोड़ नहीं की जा सकती, क्योंकि कोई व्यक्ति आरोपी या दोषी है। साथ ही, इससे ध्यान देना होगा कि तोड़फोड़ के आदेश पारित होने से पहले भी एक सीमित समय होना चाहिए। साल में 4 से 5 लाख डिमोलिशन की कर्रवाई होती हैं। पिछले कुछ सालों का आंकड़ा है। सुनवाई के दौरान जस्टिस विश्वनाथन ने कहा कि भले ही निर्माण अधिकृत ना हो, लेकिन एक्शन के बाद महिलाओं, बुजुर्गों और बच्चों को सड़क पर देखना अच्छा नहीं लगता है। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि फिलहाल देश भर में तोड़फोड़ पर अंतरिम रोक जारी रहेगी। सॉलीसिटर जनरल ने कहा कि इसमें से मात्र 2 प्रतिशत के बारे में हम अखबारों में पढ़ते हैं, इस लेकर विवाद होता है। जस्टिस गवई ने कहा बुलडोजर जस्टिस! उन्होंने कहा कि हम निचली अदालतों को निर्देश देंगे कि अवैध निर्माण के मामले में आदेश पारित करते समय सावधान रहें।

एसजी मेहता ने सुनवाई के बीच कहा कि हिंदू-मुस्लिम की बात क्यों आती है। वे हमेशा अदालत में आ सकते हैं, इसमें भेदभाव कहां हैं। जस्टिस विश्वनाथ ने कहा कि इसके लिए कुछ समाधान खोजना होगा, जैसे न्यायिक निरीक्षण किया जाए। कुछ घटनाओं को छोड़कर कोर्ट इसके लिए एक सामान्य कानून बनाए जाने पर विचार करे। जमीयत के वकील अभिषेक मनु सिंघवी ने कहा कि कोर्ट अतीत की बातों के बजाय भविष्य में इस लेकर नियम बनाने पर विचार करे।

दैनिक संस्कार उजाला
न्यूज एवं विज्ञापन के लिए संपर्क करें

संस्कार उजाला समाचार पत्र में रिपोर्टर, ब्यूरोचीफ, मार्केटिंग करने वालों लोगों की जरुरत है। तुरंत संपर्क करे।

महेश शर्मा
प्रबंध संपादक
मो.नं:-9911733939

पेट दर्द के चलते सुपरस्टार रजनीकांत अस्पताल में भर्ती, फैंस ने मांगी जल्द ठीक होने की दुआ

चेन्नई। पेट दर्द के चलते दक्षिण भारतीय सिनेमा के सुपरस्टार रजनीकांत को सोमवार देर रात चेन्नई के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। डॉक्टरों ने जानकारी दी कि उनकी हालत फिलहाल स्थिर है और वह डॉक्टर्स की निगरानी में हैं। बताया जा रहा है कि सुपरस्टार का मंगलवार को एक पूर्व निर्धारित उपचार ('इलेक्टिव प्रोसीजर') होना है। हालांकि, उनके परिवार या अस्पताल प्रशासन की ओर से अब तक कोई आधिकारिक बयान नहीं आया है, लेकिन प्रशंसकों के बीच चिंता का माहौल है। सोशल मीडिया पर उनके लाखों फैंस उनकी अच्छी सेहत और जल्द स्वस्थ होने के लिए दुआएं कर रहे हैं। कुछ साल पहले, सुपरस्टार ने सिंगापुर में किडनी ट्रांसप्लांट कराया था। इसके बाद से वह स्वास्थ्य कारणों को लेकर कई बार चर्चा में रहे हैं। हाल ही में, रजनीकांत ने अपने स्वास्थ्य के कारण राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा की थी, जिससे उनके समर्थकों को झटका लगा था। सिनेमा के थलाइवा के नाम से मशहूर रजनीकांत ने अपने चार दशक लंबे करियर में कई ब्लॉकबस्टर फिल्में दी हैं और भारतीय सिनेमा में एक अद्वितीय स्थान हासिल किया है। उनकी फिल्में न सिर्फ बॉक्स ऑफिस पर बड़ी सफलताएं रही हैं, बल्कि उनकी अभिनय शैली और चार्म ने उन्हें एक पंथनायक बना दिया है। फैंस उन्हें भगवान की तरह पूजते हैं, और उनकी हर फिल्म को एक महोत्सव के रूप में मनाया जाता है। रजनीकांत की आगामी फिल्म वेट्टैयान 10 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होने वाली है। इस फिल्म में उनके साथ बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन भी मुख्य भूमिका में नजर आएंगे। यह रजनीकांत की 170वीं फिल्म है, जिसके लिए फैंस बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। फिल्म का टाइटल और टीजर रजनीकांत के 73वें जन्मदिन पर जारी किया गया था, जिसे फैंस ने खूब सराहा था।

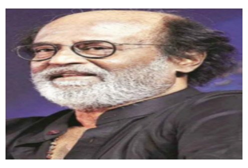

पीएम मोदी ने साधा पाकिस्तान पर निशाना

गोलियों का जवाब गोलों से दिया तो उनके होश ठिकाने आ गए...

नई दिल्ली (एजेंसी)। जम्मू कश्मीर में जारी विधानसभा चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री ने एक बड़ी चुनावी रैली को संबोधित किया। जिसमें उन्होंने राज्य की सभी बड़ी पार्टियों नेशनल कांफ्रेंस, कांग्रेस और पीडीपी पर जमकर हमला बोला। इसके साथ ही अपने भाषण में पीएम मोदी ने पाकिस्तान का जिक्र करते हुए उसे आड़े हाथों लिया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि राज्य की जनता कांग्रेस, नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी के शासन से त्रस्त हो चुकी हैं और लोग एक बार फिर से वही पुराना निजाम नहीं चाहते हैं, जिसमें लोगों के साथ भेदभाव हो और भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिले। उन्होंने बताया कि अब राज्य के लोग आतंकवाद, अलगाववाद और खून खराबे वाली राजनीति से दूर हो चुके हैं और अब लोग अमन और शांति की कामना करते हैं। इसीलिए अपने बेहतर भविष्य के लिए जम्मू कश्मीर की जनता भारतीय जनता पार्टी की सरकार बनाने का मन बना चुकी है। रैली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने दावा किया कि पिछले दो चरणों में हुई जबरदस्त

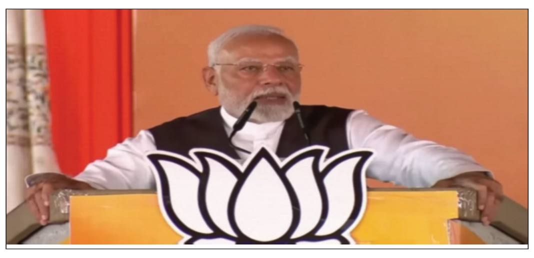

वोटिंग से माहौल बीजेपी के पक्ष में बन गया है। इसीलिए अब राज्य में बीजेपी की पूर्ण बहुमत की सरकार बनना तय है। उन्होंने मंदिरों के नगर जम्मू क्षेत्र के लोगों से सजग रहने की अपील करते हुए कहा कि यह उनकी पसंद की सरकार होगी। पीएम मोदी के मुताबिक, पिछले कई वर्षों से जम्मू के लोगों के साथ हो रहे भेदभाव को भाजपा समझती है और सरकार बनने के बाद उनकी सभी समस्याओं का प्रमुखता से निराकरण भी किया जाएगा। आने वाले नवरात्रि और विजयदशमी को प्रधानमंत्री मोदी ने जम्मू के लोगों के लिए शुभ समय बताते हुए कहा कि इस समय पूरे राज्य में 'जम्मू की यही पुकार, अबकी बार आ रही है भाजपा सरकार' का नारा गूंज रहा है। विपक्ष पर हमला बोलते हुए नरेंद्र मोदी ने कहा कि पिछली सरकारों ने सिर्फ अपने परिवारों पर ही ध्यान दिया है और राज्य की जनता को उनके हाल पर छोड़ दिया। इसीलिए अबकी बार जम्मू की जनता अपने वोट की बदौलत उन्हें करारा जवाब देगी और इतिहास रचेगी। उन्होंने कांग्रेस को घेरते हुए आरोप लगाया कि आजादी के बाद से ही कांग्रेस ने राज्य के लोगों को सिर्फ और सिर्फ तबाही ही दी है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पिछले 10 साल में हुई शांति बहाली पर कहा कि पिछली सरकार में पाकिस्तान भारत पर गोलियां चलाता था, लेकिन सरकार चुपचाप देखती रहती थी। जिसके बाद 2014 के बाद बीजेपी की सरकार ने दुश्मन देश को गोली का जवाब गोली से देने का काम किया है।

कोलकाता रेप-मर्डर मामला : पीड़ित को न्याय व अन्य मांगों को लेकर जूनियर डॉक्टर्स फिर हड़ताल पर

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में जूनियर डॉक्टरों ने फिर हड़ताल कर दी उन्होंने कामकाज पूरी तरह से ठप कर दिया है। यह प्रदर्शन कोलकाता के आरजी कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में एक ट्रेनी डॉक्टर के साथ दुष्कर्म और हत्या मामले के खिलाफ किया जा रहा है। डॉक्टरों ने बंगाल की ममता सरकार पर दबाव डालने का फैसला लिया है, जिसमें उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करने और स्वास्थ्य ढांचे में सुधार की मांगें शामिल हैं।

जूनियर डॉक्टरों ने बैठक के बाद यह फैसला लिया। बैठक में अस्पतालों की सुरक्षा को मजबूत करने, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और मरीजों के रिश्तेदारों द्वारा अस्पतालों में मारपीट और धमकी देने जैसे मामलों पर चर्चा की गई। डॉक्टरों की दस मांगें हैं और उनका कहा है कि जब तक उन्हें सुरक्षा और मरीजों की सेवाओं में सुधार के लिए स्पष्ट कार्रवाई नहीं मिलती, तब तक हड़ताल जारी रहेगी।

पश्चिम बंगाल जूनियर डॉक्टर्स फ्रंट ने कहा कि हम हड़ताल पर लौटने के लिए बाध्य हैं। जब तक सरकार हमारी मांगों का समाधान नहीं करती, हमारे पास कोई विकल्प नहीं है। उन्होंने सीबीआई जांच की धीमी गति पर भी चिंता जताई और कहा कि इससे असली अपराधियों को सजा नहीं मिल रही है।

डॉक्टरों ने सुप्रीम कोर्ट की ओर से इस जघन्य घटना की सुनवाई में तेजी लाने के लिए की गई पहल की सराहना की, लेकिन उन्होंने निराशा व्यक्त की कि कोर्ट ने केवल सुनवाई को स्थगित कर दिया है। डॉक्टरों ने कहा कि हमने सीएम ममता बनर्जी और मुख्य सचिव से अपनी मांगों के संबंध में चर्चा की है, लेकिन सरकार ने हमारे पत्रों का जवाब नहीं दिया। वे इस बात से भी नाराज हैं कि राज्य सरकार ने उनकी बैठक का आयोजन नहीं किया, जिसमें जूनियर डॉक्टरों का पर्याप्त प्रतिनिधित्व होता। इस हड़ताल से अस्पतालों में चिकित्सा सेवाएं प्रभावित हो सकती हैं, जिससे मरीजों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है।

ईएसआईसी अस्पताल नोएडा में राजभाषा पखवाड़ा समापन समारोह।

संस्कार उजाला

नोएडा ईएसआईसी आदर्श असपताल में हिंदी राजभाषा पखवाड़ा कार्यक्रम का आयोजन किया गया हिंदी को राजभाषा बनाने के 75 वर्ष पूरे होने पर कार्यक्रम में समस्त अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी का महत्व बताया गया सभी ने हिंदी में कार्य करना व हिंदी बोलने का संकल्प किया हिंदी राजभाषा पखवाड़ा के अवसर पर प्रतियोगिता हिंदी टिप्पण आलेखन राजभाषा प्रश्नोत्तरी हिंदी निबंध हिंदी वॉक

प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ हिंदी प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले समस्त मेधावी अधिकारी व कर्मचारियों को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया कार्यक्रम के मुख्य वक्ता निदेशक चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर संगीता माथुर ने बताया हिंदी भारत की एकता और अखंडता की पहचान है हिंदी भाषा ही देश की जान और शान है उप चिकित्सा अधीक्षक डॉक्टर सोना बेदी ने बताया हिंदी का मान सम्मान सर्वोपरि है उपनिदेशक वित्त आलोक कुमार ने कहा हिंदी भारत के एकता और अखंडता की पहचान है नर्सिंग अधिकारी राजकुमारी ने कहा हिंदी केवल एक भाषा ही नहीं संस्कार है हिंदी राजभाषा राजभाषा के आयोजन कर्ता सहायक निदेशक प्रशासन सुरेंद्र नेगी जी रहे इस अवसर पर उपनिदेशक प्रशासन अनिल कुमार स्वास्थ्य कर्मी टीकम सिंह डॉक्टर एस के पेरूमल डॉक्टर ब्रह्मनीश सितारा नर्सिंग अधिकारी सायरा, रेजी देवानंद ,शशि मैसी, निजी सचिव ललित पालीवाल ,अखिलेश मीना राजकुमार तिवारी ,संजय थपलियाल,रमेश उपाध्याय कार्यालय अधीक्षक यश जैन दीपक कुमार ,आशीष, दितेश मौजूद रहे।

चीन पर भरोसा नहीं भाई... लगातार पांचवीं सर्दी में तैनात रहेगी भारतीय सेना

नई दिल्ली। भारत और चीन के बीच भरोसे की कमी बनी हुई है। इससे, भारत अपनी सेना को वास्तविक नियंत्रण रेखा (एलएसी) पर इस बार की सर्दी में भी तैनात रखने की तैयारी कर रहा है। यह लगातार पांचवीं सर्दी होगी जब सेना एलएसी पर तैनात रहेगी। सैनिकों को पूर्वी लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के दुर्गम इलाकों में तैनात रखा जाएगा। हड्डियां गला देने वाली बर्फीली ठंड में भारतीय जांबाज एलएसी की सुरक्षा के लिए तैनात हैं। हालांकि, तनाव कम करने और हालात सामान्य करने के लिए भारत और चीन के बीच कई दौर की राजनीतिक और कूटनीतिक बातचीत हो चुकी है। इसमें कुछ प्रगति हुई है और मतभेद कम हुए हैं। लेकिन, शीर्ष रक्षा सूत्रों ने बताया है कि जमीनी स्तर पर चीन की सेना (पीएलए) पर भरोसा अभी भी बहुत कम है। चीन 3,488 किलोमीटर लंबी एलएसी पर अपनी सैन्य चौकियां मजबूत कर रहा है और स्थायी किलेबंदी का निर्माण कर रहा है। यह दिखाता है कि पीएलए जल्द ही मई 2020 से पहले वाली जगहों पर लौटने को तैयार नहीं दिख रहा है। सेना सर्दियों की तैनाती की तैयारी में जुटी है। सर्दियों के लिए सेना द्वारा बड़े पैमाने पर सामान जुटाया जा रहा है। सेना प्रमुख जनरल उपेंद्र द्विवेदी और सेना की सातों कमानों के प्रमुख 9-10 अक्टूबर को सिक्किम के गंगटोक में ऑपरेशनल स्टेटस की समीक्षा करने वाले है।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने 'वायु वीर विजेता रैली' को दिखाई हरी झंडी, 7000 किमी का सफर तय करेंगे वायु योद्धा

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय वायुसेना 8 अक्टूबर को अपनी 92वीं वर्षगांठ मनाने जा रही है। इस विशेष अवसर पर रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने मंगलवार को 'वायु वीर विजेता रैली' को दिल्ली से रवाना किया। रैली लद्दाख के थोइस से अरुणाचल प्रदेश के तवांग तक 7000 किलोमीटर लंबी तय करेगी। इस अवसर पर वायुसेना के एयर चीफ मार्शल अमनप्रीत सिंह समेत तमाम अधिकारी भी मौजूद रहे।

साथ ही दिल्ली भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा केंद्रीय मंत्री हर्ष मल्होत्रा बीजेपी सांसद बांसुरी स्वराज प्रवीण खंडेलवाल कमलजीत सेहरावत भी कार्यक्रम में शामिल हुए। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वायु सेना के जवानों को भी संबोधित किया। राजनाथ सिंह ने कहा, 'हमारे वायु वीर, आप सभी को मेरा नमस्कार। भारतीय वायुसेना विविधता, पराक्रम और बेहतरीन ऊंचाइयों के लिए जानी जाती है। हमें सर्वोच्च ऊंचाइयों को पार कर सदैव विजय रहना है। वायु वीरों के स्पर्श से ही भारतीय सेवा विजेता रहती है। गगन वीर, वायु वीर सेवा के आगे अपना सर झुकाता है।'

उन्होंने वायुसेना की उपलब्धियों पर जोर देते हुए कहा कि वायुसेना ने देश की सुरक्षा और नागरिकों को हर आपदा से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वायु वीर लंबे समय से देश की सेवा कर रहे हैं। आकाशीय सेना ने रक्षा में अनेक उपलब्धियां हासिल की हैं और यह दिखाया है कि दुश्मन को सबक सिखाने के लिए हम उसके घर में भी जवाब दे सकते हैं। हमारी सरकार ने वायु सेना को और सक्षम करने के साथ-साथ आधुनिक युद्धक विमानों से लैस करने का काम किया है और आगे भी करेगी।

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने आगे कहा कि इस रैली का उद्देश्य युवाओं को सेना के प्रति आकर्षित करना और वायु सेना के बारे में सही जानकारी देना है। वायुसेना की यह मुहिम अच्छे परिणाम देगी, ऐसा मुझे भरोसा है। जानकारी के मुताबिक मेगा कार रैली में महिलाओं समेत 52 वायु योद्धा शामिल होंगे। वायु योद्धा 16 पड़ावों पर रुकेंगे, जहां वे विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में छात्रों के साथ बातचीत करेंगे। भारतीय वायुसेना का एडवेंचर सेल इस रैली का नेतृत्व कर रहा है।

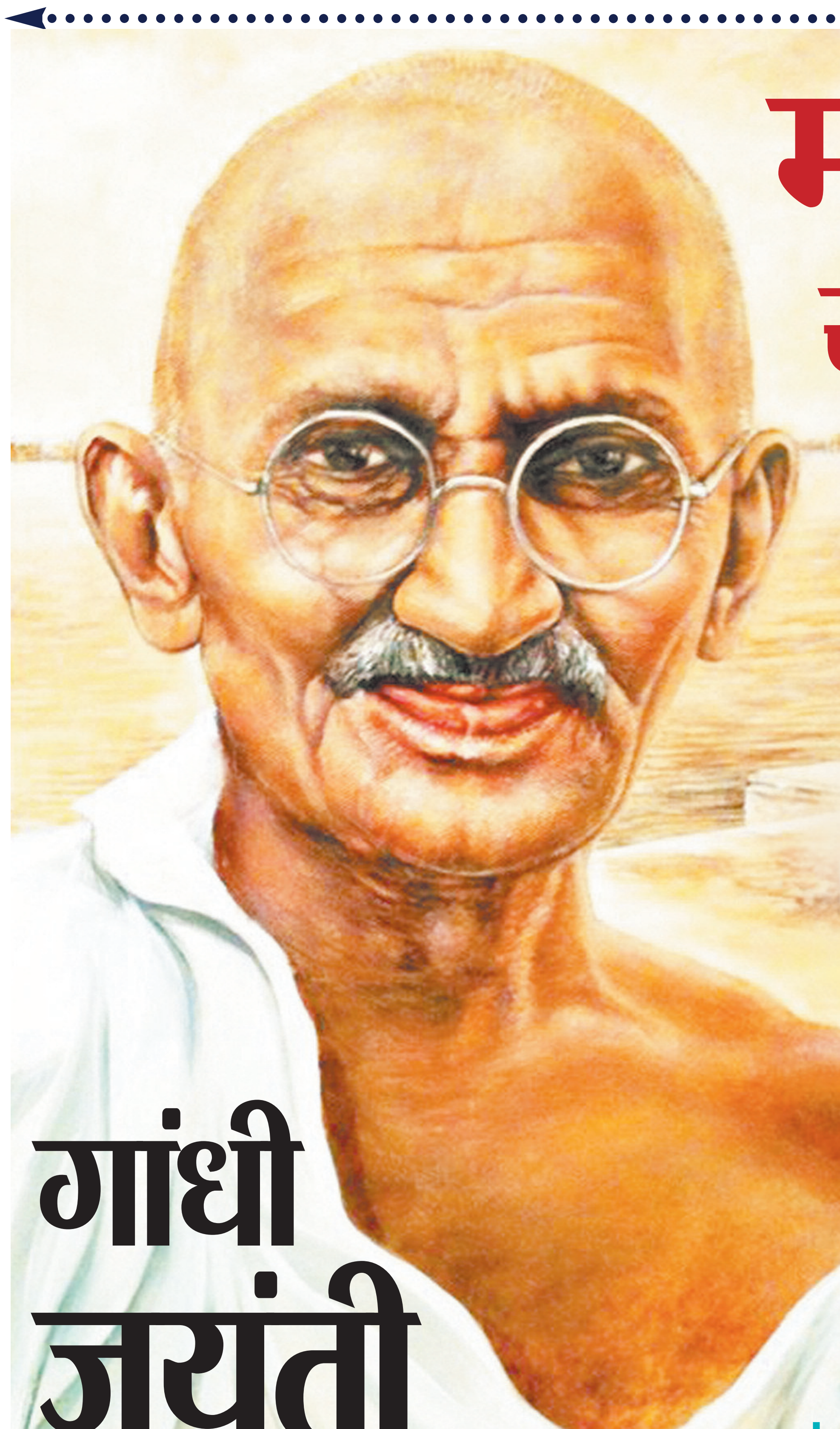

महात्मा गांधी स्वतंत्र भारत के पिता

भारत के राष्ट्रपिता मोहनदास कर्मचंद गांधी जिन्हें बापू या महात्मा गांधी के नाम से भी जाना जाता है, के जन्म दिन 2 अक्तूबर को गांधी जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन को विश्व अहिंसा दिवस के रूप में भी मनाया जाता है। वस्तुतः गांधीजी विश्व भर में उनके अहिंसात्मक आंदोलन के लिए जाने जाते हैं, और यह दिवस उनके प्रति वैश्विक स्तर पर सम्मान व्यक्त करने के लिए मनाया जाता है।

मोहनदास करमचंद गांधी (2 अक्तूबर 1869 – 30 जनवरी 1948) भारत एवं भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के एक प्रमुख राजनैतिक एवं आध्यात्मिक नेता थे। वे सत्याग्रह – व्यापक सविनय अवज्ञा के माध्यम से अत्याचार के प्रतिकार के अग्रणी नेता थे, उनकी इस अवधारणा की नींव संपूर्ण अहिंसा पर रखी गई थी जिसने भारत को आजादी दिलाकर पूरी दुनिया में जनता के नागरिक अधिकारों एवं स्वतंत्रता के प्रति आंदोलन के लिए प्रेरित किया।उन्हें दुनिया में आम जनता महात्मा गांधी के नाम से जानती है। संस्कृत- महात्मा अथवा महान आत्मा एक सम्मान सूचक शब्द जिसे सबसे पहले रवीन्द्रनाथ टेगौर ने प्रयोग किया और भारत में उन्हें बापू के नाम से भी याद किया जाता है। उन्हें सरकारी तौर पर राष्ट्रपिता का सम्मान दिया गया है 2 अक्टूबर को उनके जन्म दिन राष्ट्रीय पर्व गांधी जयंती के नाम से मनाया जाता है और दुनियाभर में इस दिन को अंतरराष्ट्रीय अहिंसा दिवस के नाम से मनाया जाता है। सबसे पहले गांधी ने रोजगार अहिंसक सविनय अवज्ञा प्रवासी वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका, में भारतीय समुदाय के लोगों के नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष हेतु प्रयुक्त किया। 1915 में उनकी वापसी के बाद उन्होंने भारत में किसानों , कृषि मजदूरों और शहरी श्रमिकों को अत्याधिक भूमि कर और भेदभाव के विरूद्ध आवाज उठाने के लिए एकजुट किया। 1921 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की बागडोर संभालने के बाद गांधी जी ने देशभर में गरीबी से राहत दिलाने, महिलाओं के अधिकारों का विस्तार, धार्मिक एवं जातीय एकता का निर्माण, आत्म–निर्भरता के लिए अस्पृश्यता का अंत आदि के लिए बहुत से आंदोलन चलाएं। किंतु इन सबसे अधिक विदेशी राज से मुक्ति दिलाने वाले स्वराज की प्राप्ति उनका प्रमुख लक्ष्य था। गाँधी जी ने ब्रिटिश सरकार द्वारा भारतीयों पर लगाए गए नमक कर के विरोध में 1930 में दांडी मार्च और इसके बाद 1942 में , ब्रिटिश भारत छोड़ो आन्दोलन छेडकर भारतीयों का नेतृत्व कर प्रसिद्धि प्राप्त की। दक्षिण अफ्रीका और भारत में विभिन्न अवसरों पर कई वर्षों तक उन्हें जेल में रहना पड़ा। गांधी जी ने सभी परिस्थितियों में अहिंसा और सत्य का पालन किया और सभी को इनका पालन करने के लिए वकालत भी की। उन्होंने आत्म–निर्भरता वाले आवासीय समुदाय में अपना जीवन गुजारा किया और पंरपरागत भारतीय पोशाक धोती और सूत से बनी शॉल पहनी जिसे उसने स्वयं ने चरखे पर सूत कात कर हाथ से बनाया था। उन्होंने सादा शाकाहारी भोजन खाया और आत्मशुद्धि तथा सामाजिक प्रतिकार दोनों के लिए लंबे–लंबे उपवास भी किए।

गांधी दक्षिण अफ्रीका में (1895)

दक्षिण अफ्रीका में गान्धी को भारतीयों पर भेदभाव का सामना करना पड़ा। आरम्भ में उन्हें प्रथम श्रेणी कोच की वैध टिकट होने के बाद तीसरी श्रेणी के डिब्बे में जाने से इन्कार करने के लिए ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया था। इतना ही नहीं पायदान पर शेष यात्रा करते हुए एक यूरोपियन यात्री के अन्दर आने पर चालक की मार भी झेलनी पड़ी। उन्होंने अपनी इस यात्रा में अन्य भी कई कठिनाइयों का सामना किया। अफ्रीका में कई होटलों को उनके लिए वर्जित कर दिया गया। इसी तरह ही बहुत सी घटनाओं में से एक यह भी थी जिसमें अदालत के न्यायाधीश ने उन्हें अपनी पगड़ी उतारने का आदेश दिया था जिसे उन्होंने नहीं माना। ये सारी घटनाएँ गान्धी के जीवन में एक मोड़ बन गईं और विद्यमान सामाजिक अन्याय के प्रति जागरुकता का कारण बनीं तथा सामाजिक सक्रियता की व्याख्या करने में मददगार सिद्ध हुई। दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों पर हो रहे अन्याय को देखते हुए गान्धी ने अंग्रेजी साम्राज्य के अन्तर्गत अपने देशवासियों के सम्मान तथा देश में स्वयं अपनी स्थिति के लिए प्रश्न उठाये।

1906 के ज़ुलु युद्ध में भूमिका

1906 में, दक्षिण अफ्रीका में नए चुनाव कर के लागू करने के बाद दो अंग्रेज अधिकारियों को मार डाला गया। बदले में अंग्रेजों ने जूलू के खिलाफ युद्ध छेड़ दिया। गांधी जी ने भारतीयों को भर्ती करने के लिए ब्रिटिश अधिकारियों को सक्रिय रूप से प्रेरित किया। उनका तर्क था अपनी नागरिकता के दावों को कानूनी जामा पहनाने के लिए भारतीयों को युद्ध प्रयासों में सहयोग देना चाहिए। तथापि, अंग्रेजों ने अपनी सेना में भारतीयों को पद देने से इंकार कर दिया था। इसके बावजूद उन्होने गांधी जी के इस प्रस्ताव को मान लिया कि भारतीय घायल अंग्रेज सैनिकों को उपचार के लिए स्टेचर पर लाने के लिए स्वैच्छा पूर्वक कार्य कर सकते हैं। इस कोर की बागडोर गांधी ने थामी। 21 जुलाई 1906 को गांधी जी ने इंडियन ओपिनिय में लिखा कि 23 भारतीय निवासियों के विरूद्ध चलाए गए आप्रेशन के संबंध में प्रयोग द्वारा नेटाल सरकार के कहने पर एक कोर का गठन किया गया है। दक्षिण अफ्रीका में भारतीय लोगों से इंडियन ओपिनियन में अपने कॉलमों के माध्यम से इस युद्ध में शामिल होने के लिए आग्रह किया और कहा, यदि सरकार केवल यही महसूस करती हे कि आरक्षित बल बेकार हो रहे हैं तब वे इसका उपयोग करेंगे और असली लड़ाई के लिए भारतीयों का प्रशिक्षण देकर इसका अवसर देंगे।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के लिए संघर्ष

1915 में, गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत में रहने के लिए लौट आएं।उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अधिवेशनों पर अपने विचार व्यक्त किए, लेकिन वे भारत के मुख्य मुद्दों, राजनीति तथा उस समय के कांग्रेस दल के प्रमुख भारतीय नेता गोपाल कृष्ण गोखले जो एक सम्मानित नेता थे पर ही आधारित थे।

चंपारण और खेड़ा – गांधी की पहली बड़ी उपलब्धि 1918 में चम्पारन और खेड़ा सत्याग्रह, आंदोलन में मिली हालांकि अपने निर्वाह के लिए जरूरी खाद्य फसलों की बजाए नकद पैसा देने वाली खाद्य फसलों की खेती वाले आंदोलन भी महत्वपूर्ण रहे। जमींदारों (अधिकांश अंग्रेज) की ताकत से दमन हुए भारतीयों को नाममात्र भरपाई भत्ता दिया गया जिससे वे अत्यधिक गरीबी से घिर गए। गांवों को बुरी तरह गंदा और अस्वास्थ्यकर और शराब, अस्पृश्यता और पर्दा से बांध दिया गया। अब एक विनाशकारी अकाल के कारण शाही कोष की भरपाई के लिए अंग्रेजों ने दमनकारी कर लगा दिए जिनका बोझ दिन प्रतिदिन बढता ही गया। यह स्थिति निराशजनक थी। खेड़ा, गुजरात में भी यही समस्या थी। गांधी जी ने वहां एक आश्रम बनाया जहाँ उनके बहुत सारे समर्थकों और नए स्वेच्छिक कार्यकर्ताओं को संगठित किया गया। उन्होंने गांवों का एक विस्तृत अध्ययन और सर्वेक्षण किया जिसमें प्राणियों पर हुए अत्याचार के भयानक कांडों का लेखाजोखा रखा गया और इसमें लोगों की अनुत्पादकीय सामान्य अवस्था को भी शामिल किया गया था। ग्रामीणों में विश्वास पैदा करते हुए उन्होंने अपना कार्य गांवों की सफाई करने से आरंभ किया जिसके अंतर्गत स्कूल और अस्पताल बनाए गए और उपरोक्त वर्णित बहुत सी सामाजिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए ग्रामीण नेतृत्व प्रेरित किया।

असहयोग आन्दोलन – गांधी जी ने असहयोग, अहिंसा तथा शांतिपूर्ण प्रतिकार को अंग्रेजों के खिलाफ़ शस्त्र के रूप में उपयोग किया। पंजाब में अंग्रेजी फोजों द्वारा भारतीयों पर जलियावांला नरसंहार जिसे अमृतसर नरसंहार के नाम से भी जाना जाता है ने देश को भारी आघात पहुंचाया जिससे जनता में क्रोध और हिंसा की ज्वाला भड़क उठी। गांधीजी ने ब्रिटिश राज तथा भारतीयों द्वारा प्रतिकारात्मक रवैया दोनों की की। उन्होंने ब्रिटिश नागरिकों तथा दंगों के शिकार लोगों के प्रति संवेदना व्यक्त की तथा पार्टी के आरंभिक विरोध के बाद दंगों की भंर्त्सना की। गांधी जी के भावनात्मक भाषण के बाद अपने सिद्धांत की वकालत की कि सभी हिंसा और बुराई को न्यायोचित नहीं ठहराया जा सकता है। किंतु ऐसा इस नरसंहार और उसके बाद हुई हिंसा से गांधी जी ने अपना मन संपूर्ण सरकार आर भारतीय सरकार के कब्जे वाली संस्थाओं पर संपूर्ण नियंत्रण लाने पर केंद्रित था जो जल्दी ही स्वराज अथवा संपूर्ण व्यक्तिगत, आध्यात्मिक एवं राजनैतिक आजादी में बदलने वाला था।

स्वराज और नमक सत्याग्रह – गांधी जी सक्रिय राजनीति से दूर ही रहे और 1920 की अधिकांश अवधि तक वे स्वराज पार्टी और इंडियन नेशनल कांग्रेस के बीच खाई को भरने में लगे रहे और इसके अतिरिक्त वे अस्पृश्यता , शराब, अज्ञानता और गरीबी के खिलाफ आंदोलन छेड़ते भी रहे। उन्होंने पहले 1928 में लौटे एक साल पहले अंग्रेजी सरकार ने सर जॉन साइमन के नेतृत्व में एक नया संवेधानिक सुधार आयोग बनाया जिसमें एक भी सदस्य भारतीय नहीं था। इसका परिणाम भारतीय राजनैतिक दलों द्वारा बहिष्कार निकला। दिसंबर 1928 में गांधी जी ने कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के एक अधिवेशन में एक प्रस्ताव रखा जिसमें भारतीय साम्राज्य को सत्ता प्रदान करने के लिए कहा

गया था अथवा ऐसा न करने के बदले अपने उद्देश्य के रूप में संपूर्ण देश की आजादी के लिए असहयोग आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहें। गांधी जी ने न केवल युवा वर्ग सुभाष चंद्र बोस तथा जवाहरलाल नेहरू जैसे पुरूषों द्वारा तत्काल आजादी की मांग के विचारों को फलीभूत किया बल्कि अपनी स्वयं की मांग को दो साल की बजाए एक साल के लिए रोक दिया। अंग्रेजों ने कोई जवाब नहीं दिया। नहीं 31 दिसंबर 1929 , भारत का झंडा फहराया गया था लाहौर में है . 26 जनवरी 1930 का दिन लाहौर में भारतीय स्वतंत्रता दिवस के रूप में इंडियन नेशनल कांग्रेस ने मनाया। यह दिन लगभग प्रत्येक भारतीय संगठनों द्वारा भी मनाया गया। इसके बाद गांधी जी ने मार्च 1930 में नमक पर कर लगाए जाने के विरोध में नया सत्याग्रह चलाया जिसे 12 मार्च से 6 अप्रेल तक नमक आंदोलन के याद में 400 किलोमीटर (248 मील) तक का सफर अहमदाबाद से दांडी, गुजरात तक चलाया गया ताकि स्वयं नमक उत्पन्न किया जा सके। समुद्र की ओर इस यात्रा में हजारों की संख्या में भारतीयों ने भाग लिया। भारत में अंग्रेजों की पकड़ को विचलित करने वाला यह एक सर्वाधिक सफल आंदोलन था जिसमें अंग्रेजों ने 80,000 से अधिक लोगों को जेल भेजा।

द्वितीय विश्व युद्ध और भारत छोड़ो – द्वितीय विश्व युद्ध 1939 में जब छिड़ने नाजी जर्मनी आक्रमण पोलैंड. आरंभ में गांधी जी ने अंग्रेजों के प्रयासों को अहिंसात्मक नैतिक सहयोग देने का पक्ष लिया किंतु दूसरे कांग्रेस के नेताओं ने युद्ध में जनता के प्रतिनिधियों के परामर्श लिए बिना इसमें एकतरफा शामिल किए जाने का विरोध किया। कांग्रेस के सभी चयनित सदस्यों ने सामूहिक तौर पर अपने पद से इस्तीफा दे दिया। लंबी चर्चा के बाद, गांधी ने घोषणा की कि जब स्वयं भारत को आजादी से इंकार किया गया हो तब लोकतांत्रिक आजादी के लिए बाहर से लड़ने पर भारत किसी भी युद्ध के लिए पार्टी नहीं बनेगी। जैसे जैसे युद्ध बढता गया गांधी जी ने आजादी के लिए अपनी मांग को अंग्रेजों को भारत छोड़ो आन्दोलन नामक विधेयक देकर तीव्र कर दिया। यह गांधी तथा कांग्रेस पार्टी का सर्वाधिक स्पष्ट विद्रोह था जो भारतीय सीमा से अंग्रेजों को खदेड़ने पर लक्षित था। गांधी जी के दूसरे नंबर पर बैठे जवाहरलाल नेहरू की पार्टी के कुछ सदस्यों तथा कुछ अन्य राजनैतिक भारतीय दलों ने आलोचना की जो अंग्रेजों के पक्ष तथा विपक्ष दोनों में ही विश्वास रखते थे। कुछ का मानना था कि अपने जीवन काल में अथवा मौत के संघर्ष में अंग्रेजों का विरोध करना एक नश्वर कार्य है जबकि कुछ मानते थे कि गांधी जी पर्याप्त कोशिश नहीं कर रहे हैं। भारत छोड़ो इस संघर्ष का सर्वाधिक शक्तिशाली आंदोलन बन गया जिसमें व्यापक हिंसा और गिरफ्तारी हुई। पुलिस की गोलियों से हजारों की संख?या में स्वतंत्रता सेनानी या तो मारे गए या घायल हो गए और हजारों गिरफ्तार कर लिए गए। गांधी और उनके समर्थकों ने स्पष्ट कर दिया कि वह युद्ध के प्रयासों का समर्थन तब तक नहीं देंगे तब तक भारत को तत?काल आजादी न दे दी जाए। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस बार भी यह आन्दोलन बन्द नहीं होगा यदि हिंसा के व्यक्तिगत कृत्यों को मूर्त रूप दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उनके चारों ओर अराजकता का आदेश असली अराजकता से भी बुरा है। उन्होंने सभी कांग्रेसियों और भारतीयों को अहिंसा के साथ करो या मरो (अंग्रेजी में डू ऑर डाय) के द्वारा अन्तिम स्वतन्त्रता के लिए अनुशासन बनाए रखने को कहा।

स्वतंत्रता और भारत का विभाजन

गांधी जी ने 1946 में कांग्रेस को ब्रिटिश केबीनेट मिशन के प्रस्ताव को ठुकराने का परामर्श दिया क्योकि उसे मुस्लिम बाहुलता वाले प्रांतों के लिए प्रस्तावित समूहीकरण के प्रति उनका गहन संदेह होना था इसलिए गांधी जी ने प्रकरण को एक विभाजन के पूर्वाभ्यास के रूप में देखा। हालांकि कुछ समय से गांधी जी के साथ कांग्रेस द्वारा मतभेदों वाली घटना में से यह भी एक घटना बनी। चूंकि नेहरू और पटेल जानते थे कि यदि कांग्रेस इस योजना का अनुमोदन नहीं करती है तब सरकार का नियंत्रण मुस्लिम लीग के पास चला जाएगा। 1948 के बीच लगभग 5000 से भी अधिक लोगों को हिंसा के दौरान मौत के घाट उतार दिया गया। गांधी जी किसी भी ऐसी योजना के खिलाफ थे जो भारत को दो अलग अलग देशों में विभाजित कर दे।भारत में रहने वाले बहुत से हिंदुओं और सिक्खों एवं मुस्लिमों का भारी बहुमत देश के बंटवारे के पक्ष में था। इसके अतिरिक्त मुहम्मद अली जिन्ना, मुस्लिम लीग के नेता ने, पश्चिम पंजाब, सिंध, उत्तर पश्चिम सीमांत प्रांत और ईस्ट बंगाल में व्यापक सहयोग का परिचय दिया। व्यापक स्तर पर फैलने वाले हिंदु मुस्लिम लड़ाई को रोकने के लिए ही कांग्रेस नेताओं ने बंटवारे की इस योजना को अपनी मंजूरी दे दी थी। कांगेस नेता जानते थे कि गांधी जी बंटवारे का विरोध करेंगे और उसकी सहमति के बिना कांग्रेस के लिए आगे बझना बसंभव था चुकि पाटर्ठी में गांधी जी का सहयोग और संपूर्ण भारत में उनकी स्थिति मजबूत थी। गांधी जी के करीबी सहयोगियों ने बंटवारे को एक सर्वोत्तम उपाय के रूप में स्वीकार किया और सरदार पटेल ने गांधी जी को समझाने का प्रयास किया कि नागरिक अशांति वाले युद्ध को रोकने का यही एक उपाय है। मज़बूर गांधी ने अपनी अनुमति दे दी।

हत्या

30 जनवरी 1948 गांधी की उस समय गोली मारकर हत्या कर दी गई जब वे नई दिल्ली के बिड़ला भवन के मैदान में रात चहलकदमी कर रहे थे। गांधी का हत्यारा नाथूराम गौड़से हिन्दू राष्ट्रवादी थे जिनके कट्टरपंथी हिंदु महासभा के साथ संबंध थे जिसने गांधी जी को पाकिस्तान को भुगतान करने के मुद्दे को लेकर भारत को कमजोर बनाने के लिए जिम्मेदार ठहराया था। गोड़से और उसके उनके सह षड्यंत्रकारी नारायण आप्टे को बाद में केस चलाकर सजा दी गई तथा 15 नवंबर1949 को इन्हें फांसी दे दी गई।

गांधी जयंती आत्ममूल्यांकन का दिन

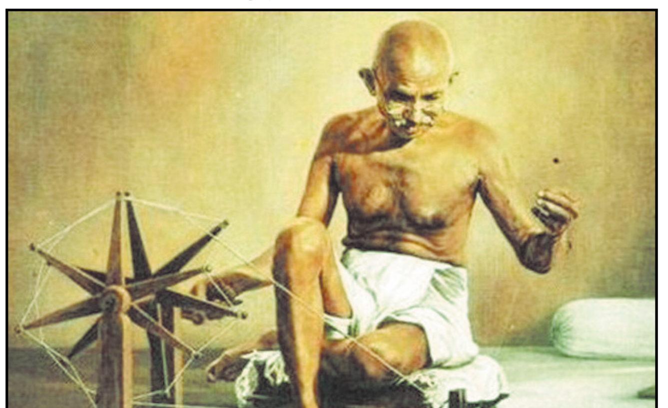

आज गांधी जयंती है। गांधी प्रतिमाओं और उनकी तस्वीरों को पिछली पुण्यतिथि के बाद धोने–पोंछने का यह पहला अवसर आया है। प्रत्येक वर्ष ऐसा ही होता है, जयंती और पुण्यतिथि के बीच की अवधि में गांधीजी के साथ कोई नहीं होता है। कड़वी बात तो यह है कि बचे–खुचे गांधीवादी भी नहीं। वे गांधीजी का साथ दे भी नहीं सकते हैं क्योंकि जरूरतों और परिस्थितियों ने उन्हें भी सिखा दिया है कि गांधी बनने से केवल प्रताड़ना मिल सकती है, संपदा, संपत्ति नहीं। वैचारिक धरातल में यह खोखलापन एक दिन या एक माह या एक वर्ष में नहीं आ गया। जान–बूझकर धीरे–धीरे और योजनाबद्ध ढंग से गांधी सिद्धांतों को मिटाया जा रहा है क्योंकि यह मौजूदा स्वार्थों में सबसे बड़े बाधक हैं। गांधी सिद्धांतों को मिटाने की इस गतिविधि को देखा नहीं गया, ऐसा नहीं है। सब चुप हैं क्योंकि अपना–अपना लाभ सभी को चुप रहने के लिए प्रेरित कर रहा है। आमतौर पर जन्मदिन या जयंती के दिन आस्था के फूल अर्पित करने की परंपरा है। इस दिन कड़वी बातों को कहने का रिवाज नहीं है। यदि इस रिवाज को तोड़ा जा रहा है, तो मजबूरी के दबाव को समझे जाने की आवश्यकता है। यह राष्ट्र नेताओं को महात्मा गांधी के सिद्धांतों पर कीचड़ उछालने की अनुमति कैसे दे रहा है, क्यों दे रहा है? यह कैसी सहिष्णुता है जो राष्ट्र की बुनियादी विचारधारा को मटियामेट करने पर आमादा है?

कहते हैं कि जो राष्ट्र अपने चरित्र की रक्षा करने में सक्षम नहीं है, उसकी रक्षा कोई नहीं कर सकता है। क्या परमाणु बम भारतीयता की रक्षा कर पाएगा? दरअसल, यह भुला दिया गया है कि पहले विश्वास बनता है, फिर श्रद्धा कायम होती है। किसी ने अपनी जय–जयकार करवाने के लिए क्रम उलट दिया और उल्टी परंपरा बन गई। अब विश्वास हो या नहीं हो, श्रद्धा का प्रदर्शन जोर–शोर से किया जाता है। गांधीजी भी श्रद्धा के इसी प्रदर्शन के शिकार हुए हैं। उनके सिद्धांतों में किसी को विश्वास रहा है या नहीं, इससे कुछ फर्क नहीं पड़ता। जयंती और पुण्यतिथि पर उनकी कसमें खाकर वाहवाही जरूर लूटी जा रही है। गांधीजी के विचार बेचने की एक वस्तु बनकर रह गए हैं। वे छपे शब्दों से अधिक कुछ नहीं हैं। इसलिए ही गांधीजी की जरूरत आज पहले से कहीं अधिक है। इस जरूरत को पूरा करने की सामर्थ्य वाला व्यक्तित्व दूर–दूर तक नजर नहीं आ रहा है। हर कोई चाहता है कि आदर्श और मूल्य इतिहास में बने रहें और इतिहास को वह पूजता भी रहेगा। परंतु अपने वर्तमान को वह इस इतिहास से बचाकर रखना चाहता है। अपने लालच की रक्षा में वह गांधी की रोज हत्या कर रहा है, पल–पल उन्हें मार रहा है और राष्ट्र भीड़ की तरह तमाशबीन बनकर चुपचाप उसे देख रहा है। शायद कल उनमें से किसी को यही करना पड़े! अपने हितों की विरोधी चीजों को इतिहास में बदल देने में भारतीयता आजादी के बाद माहिर हो चुकी है। वर्तमान और इतिहास की इस लड़ाई में वर्तमान ही जीतता आ रहा है क्योंकि इतिहास की तरफ से लड़ने वाले शेष नहीं हैं। आज गांधी जयंती है। गांधीजी की प्रतिमा के सामने आंख मूंदकर कुछ क्षण खड़े रहने वाले क्या यह पश्चाताप कर रहे होंगे कि वे गांधीजी के बताए रास्तों पर क्यों नहीं चल रहे हैं? नहीं, वे यह कतई नहीं सोच रहे होंगे। तब वे मन ही मन क्या कह रहे होंगे? सोचिए और उस पर मनन कीजिए। गांधी जयंती पर यही बड़ा काम होगा।

गांधीजी ने बजाया था सत्याग्रह का बिगुल

दक्षिण अफ्रीका से लौटने के बाद भारतवासियों को उनके अधिकार दिलाने के लिए गांधी जी नेशनल इण्डियन कांग्रेस की स्थापना की। पहली बार सत्याग्रह के शस्त्र का प्रयोग किया और विजय भी पाई। इस प्रकार सन्? 1914–15 में गांधी जब दक्षिण अफ्रीका से वापिस भारत लौटे, तब तक इन विचारों और जीवन–व्यवहारों में आमूल–चूल परिवर्तन आ चुका था।

भारत लौटकर कुछ दिन गांधी जी देश का भ्रमण कर वास्तविक स्थिति का जायजा लेते रहे। फिर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस जैसी संस्था को पूर्ण स्वतंत्रता का लक्ष्य देकर संघर्ष में कूद पड़े। क्योंकि प्रथम विश्वयुद्ध में वचन देकर भी अंग्रेज सरकार ने भारतीयों के प्रति अपने रवैये में कोई परिवर्तन नहीं किया था, इससे गांधी जी और भी चिढ़ गए और अंग्रेजी कानूनों का बहिष्कार और सत्याग्रह का बिगुल बजा दिया। भारतवासियों के मानवाधिकारों का हनन करने वाले रोलट एक्ट का स्थान–स्थान पर विरोध–बहिष्कार होने लगा। सन 1919 में जलियां–वाला बाग में हो रही विरोध–सभा पर हुए अत्याचार ने गांधी जी की अंतरात्मा को हिलाकर रख दिया। सो अब ये समूचे स्वतंत्रता आंदोलन की बागडोर सम्हाल खुलम–खुल्ला संघर्ष में कूद पड़े। इनका संकेत पाते ही सारे देश में विरोधी आंदोलनों की एक

आंधी सी छा गई। अंग्रेज सरकार की लाठी–गोलियां भी अंधाधुंध बरसने लगीं। जेलें सत्याग्रहियों से भर उठीं। गांधीजी को भी जेल में डाल दिया गया। बिहार की नील सत्याग्रह, डाण्डी यात्रा या नमक सत्याग्रह, खेड़ा का किसान सत्याग्रह आदि गांधी जी के जीवन के प्रमुख सत्याग्रह हैं। इन्हें कई बार महीने–महीने भर का उपवास भी करना पड़ा। अपने विचारों के प्रचार–प्रसार के लिए इन्होंने नवजीवन और यंग इण्डिया जैसे पत्र भी प्रकाशित किए। विदेशी–बहिष्कार और विदेशी माल का दाह, मद्य निषेध के लिए धरने का आयोजन, अछूतोद्धार, स्वदेशी प्रचार के लिए चर्खे और खादी को महत्व देना, सर्वधर्म–समन्वय और विशेषकर हिन्दू–मुस्लिम एकता के लिए प्रचार इनके द्वारा आरंभ किए गए अन्य प्रमुख सामाजिक सुधारात्मक कार्य माने गए हैं। इस प्रकार के स्वतंत्रता दिलाने वाले प्रयासों के लिए अक्सर बीच–बीच में इन्हें जेलयात्रा भी करनी पड़तीं। सन 1931 में इग्लैंड में संपन्न गोलमेज कान्फ्रेस में भाग लेने के लिए गांधी जी वहां गए, पर जब इनकी इच्छा के विरुद्ध हरिजनों को निर्वाचन का विशेषाधिकार हिन्दुओं से अलग करके दे दिया, तो भारत लौटकर गांधी जी ने पुनः आंदोलन आरंभ कर दिया। बंदी बनाए जाने पर जब ये अनशन करने लगे, तो सारा देश क्षुब्ध हो उठा। फलतः ब्रिटिश सरकार को गांधी जी के मतानुसार हरिजनों का पृथक निर्वाचनाधिकार का हठ छोड़ना पड़ा।

गंगा ग्राम में मनाया स्वच्छता ही सेवा अभियान

संस्कार उजाला

जनपद शाहजहांपुर जिला गंगा समिति शाहजहांपुर एवम माई भारत अंतर्गत नेहरू युवा केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में विकास खंड कलान के गंगा ग्राम हेतमपुर के आर० एस० कॉन्वेंट इंटर कॉलेज में चित्रकला व निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि मंडल अध्यक्ष भाजपा अजय प्रताप सिंह व विशिष्ट अतिथि हेतमपुर ग्राम प्रधान आबिद खान, संचालक जिला सहकारी संघ अशोक यादव व पीटीआई रामनारायण सक्सेना ने महात्मा गांधी व मां भारती के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। निबंध प्रतियोगिता में प्रेमश्री ने प्रथम, अनोज कुमार ने द्वितीय, सचिन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया वही चित्रकला प्रतियोगिता अंतर्गत लाली ने प्रथम, तनु ने द्वितीय व दीपक ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। समस्त विजताओ को अतिथिगणों द्वारा पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर गंगा ग्राम मोहनपुर कलुआपुर स्थित देवस्थान व तालाब पर स्वच्छता व श्रमदान भी किया गया जिसमे आदर्श सरस्वती शिक्षा मंदिर के विधार्थी व ग्राम मोहनपुर कलूआपुर के गंगा सेवको ने श्रमदान किया। इस अवसर पर समाजसेवी एड० मुकेश परिहार ने स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता पर अपने विचार रखते हुए स्वच्छता को अपने दैनिक जीवन में अपनाने और इसको व्यवहार परिवर्तन द्वारा स्वभाव में उतारने की बात कही।

इस अवसर पर जिला परियोजना अधिकारी विनय कुमार सक्सेना ने नमामि गंगे परियोजना पर चर्चा करते हुए नदियों, घाट, गंगा के निकटतम ग्रामों में स्वच्छता का विशेष महत्व बताया। प्रधानाचार्य अतुल चतुर्वेदी व गिरीश यादव ने समस्त प्रतिभागियों को गंगा स्वच्छता शपथ दिलाई व सभी के द्वारा शपथ पर हस्ताक्षर कराए गए। विशेष सहयोग ब्लॉक इंचार्ज यूपी ऊअरढ आशीष यादव, नीतीश यादव, सोनू, किशन कुमार, रक्षपाल, मोरपाल सिंह, अहिबरन सिंह, शिल्पी कुमारी, ओमेंद्र यादव, ओमेंद्र सिंह, सचिन आदि का रहा।

दिनांक वृद्ध महिला एवं पुरुषों को फल मिस्ठान एवं वस्त्र आदि वितरण कर उन्हें सम्मानित किया गया

संस्कार उजाला

डॉ0सै0अब्दुल खबीर

बहराइच अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस के अवसर पर आज नगरौर स्थित वृद्धाश्रम परिसर में वृद्ध कल्याणकारी कार्यक्रमों का आयोजन कर यहाँ रहने वाले वृद्ध महिला एवं पुरुषों को फल मिस्ठान एवं वस्त्र आदि वितरण कर उन्हें सम्मानित किया गया तथा उपस्थित अतिथि व आयोजकों ने वृद्ध जनों के उत्तम स्वास्थ्य व दीघार्यु होने की कामना की। अंतरराष्ट्रीय वृद्ध दिवस के अवसर पर वृद्धाश्रम में आज वृद्ध महिला एवं पुरुषों के द्वारा सामूहिक पूजन अर्चन कार्यक्रम सम्पन्न कराया गया। आयोजित कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सांसद आनंद गौड़ ने वृद्धों के प्रति श्रद्धा की अभिव्यक्ति करते हुए उनके दीघार्यु व उत्तम व बेहतर स्वास्थ्य की कामना की तथा उपस्थित जनों से वृद्ध एवं असक्त लोगों के बेहतर सेवा प्रबंधन का आवाहन किया और इस कार्य हेतु हर सम्भव सहयोग का भी वायदा किया। विशिष्ट अतिथि अपर जिला जज विराट शिरोमणि (सचिव स्थाई लोक अदालत) ने वृद्ध जनों को समाज का गौरव बताते हुए उनके अनुभवों से जीवन के पथ पर लगातार मजबूती से चलने की बात कही तथा वृद्ध महिला एवं पुरुषों को वस्त्र आदि वितरण कर उनके प्रति सम्मान प्रदर्शित किया। मुख्य चिकित्साधिकारी संजय कुमार ने वृद्धों के प्रति श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए उन्हें स्वास्थ्य सवंर्धन टिप्स दिए और स्वास्थ्य शिविर का भी आयोजन किया। प्रबंधक समाजसेवी दिलीप कुमार द्विवेदी ने वृद्ध जनों के कल्याण हेतु चलाए जा रहे विभिन्न उपक्रमो की विशेष चर्चा किया और उपस्थित लोगों से वृद्धाश्रम से सतत संवाद बनाए रखने का आवाहन किया। कार्यक्रम का संचालन सुलह अधिकारी अनिल मिश्र ने किया। धन्यवाद ज्ञापन जिला समाज कल्याण अधिकारी रमा शंकर गुप्त ने किया। आयोजित कार्यक्रम में प्रमुख रूप से संविधान विशेषज्ञ अनिल त्रिपाठी, महामना मालवीय मिशन अध्यक्ष अवध संजीव श्रीवास्तव एडवोकेट, नगर विधायक प्रतिनिधि अशोक जायसवाल, अजय सिंह, मनीष सिंह, डॉ० अभय, विवेक श्रीवास्तव, धर्मेन्द्र व बृजेश सिंह सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

प्राधिकरण लखनऊ द्वारा दिये गये दिषा निदेषों के अनुक्रम में माननीय जनपद न्यायाधीष/अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण

संस्कार उजाला

जनपद शाहजहांपुर

षाहजहॉपुर भानु देव षर्मा के निदेर्षानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकरण षाहजहॉपुर के तत्वावधान में वरिश्ठ नागरिक दिवस के अवसर पर विधिक साक्षरता एवं जागरूकता षिविर/कैम्प का आयोजन विनोवा सेवा आश्रम बन्तारा षाहजहॉपुर में किया गया। षिविर की अध्यक्षता सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण षाहजहॉपुर/अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीष श्री पीयूश तिवारी द्वारा की गई। सचिव द्वारा वृद्धजनों के अधिकारों व कर्तव्यों के बारे में विस्तृत जानकारी देते हुये अपने सम्बोधन में कहा कि हमे वृद्धजनों का आदर व सम्मान करना चाहिये। उन्होने वरिश्ठ नागरिकों को दिये जाने वाले भरण पोशण अधिनियम 2007 को भी अपने विचारों को व्यक्त किया गया। जिला समाज कल्याण अधिकारी श्री राजेष कुमार षर्मा द्वारा भी वरिश्ठ नागरिकों के अधिकारों पर चर्चा की गई। प्रभारी जिला मिषन काडिनेटर श्रीमती अमृता दीक्षित द्वारा अपने सम्बोधन में कहा कि यदि पति-पत्नी दोनों वृद्ध हैं तो दानों में से किसी एक को ही वृद्धा पेन्षन का लाभ मिलेगा। साइकायट्रिक सोषल वर्कर श्रीमती नन्दनी सक्सेना द्वारा वरिश्ठ नागरिकों के अधिकारों के साथ-साथ उनको स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी दी गई। डा0 नेहारिका द्वारा वृद्धजनों को होने वाले रोगों जैसे घुटनों

का दर्द, आखों की क्षमता आदि बीमारियों से अवगत कराया गया और कहा कि इन बीमारियों में आयुवेद का बड़ा महत्व है। षिविर के दौरान संस्था परिसर में विषेश खाद्य साम्रगी व वस्त्र वितरित किये गये। षिविर का संचालन लोक अदालत लिपिक मोहम्मद अफजल द्वारा किया गया। वृद्धा आश्रम के अध्यक्ष श्री रमेष भय्या द्वारा सभी का आभार व्यक्त किया गया। इसके अतिरिक्त इस षिविर में प्रबन्धक श्री बृहम्देव पैरा लीगल वालिन्टियर सैनिक पाण्डेय व अधिक संख्या में वृद्धजन उपस्थित रहे।

संक्षिप्त डायरी

भोवापुर मस्तानगर प्राइमरी स्कूल के बच्चों ने रैली निकाल कर संचारी संक्रमित रोगों से बचाव का दिया संदेश

संस्कार उजाला

रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा

गढ़मुक्तेश्वर/जनपद की तहसील गढ़मुक्तेश्वर के सिभावली ब्लॉक के अंतर्गत आने वाली ग्राम पंचायत भोवापुर मस्तान नगर में स्थित प्राइमरी स्कूल के बच्चों ने स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के तहत अध्यापक अध्यापिकाओं की देखरेख में संचारी संक्रमित बीमारियों के रोकथाम और उनसे बचाव को लेकर रैली निकाल कर जागरूकता का दिया संदेश।

किसान की बेटी ने नीट परीक्षा पास कर गांव का नाम किया रोशन

संस्कार उजाला

जिला प्रभारी अमित शर्मा

गढ़मुक्तेश्वर/जनपद की तहसील गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र के अठसैनी गांव निवासी काजल ने पहली बार में नीट परीक्षा पास कर मात पिता का नाम रोशन करने के साथ जनपद का भी नाम रोशन किया है। बता दे कि गढ़मुक्तेश्वर तहसील क्षेत्र के गांव अठसैनी गांव के एक साधारण किसान सतवीर सिंह के परिवार में जन्मी बेटी काजल ने पहली बार में नीट परीक्षा पास कर माता-पिता व क्षेत्र का नाम रोशन किया है। जिसमें काजल उपलब्धि के आधार पर मेडिकल कॉलेज एमबीबीएस लखीमपुर खीरी में एडमिशन मिलने के साथ गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्र का गौरव मान बढ़ाया है। वही इस उपलब्धि को लेकर बेटी काजल का कहना है कि इस मुकाम तक पहुंचाने में उसके मात-पिता और गुरुओं का बहुत बड़ा योगदान रहा है। इस योगदान के लिए वह भविष्य में हमेशा मात पिता और गुरुओं की ऋणी रहेगी।

जिले में झोलाछाप डॉक्टरों के द्वारा बगैर रजिस्ट्रेशन के प्रेक्टिस नहीं की जाएगी बर्दाश्त/बगैर रजिस्ट्रेशन संचालित दो अस्पताल किए सील/जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉक्टर सुनील कुमार त्यागी

संस्कार उजाला

हापुड़/उत्तर प्रदेश शासन के निर्देश अनुसार स्वास्थ्य विभाग ने जनता जनार्दन के स्वास्थ्य से खिलवाड़ करने वाले बगैर रजिस्ट्रेशन झोलाछाप डॉक्टरों के विरुद्ध अभियान शुरू कर दिया है। जिसको लेकर शहरी एवं ग्रामीण अंचल क्षेत्रों में बगैर रजिस्ट्रेशन के प्रेक्टिस करने वाले डॉक्टरों में हड़कंप मचा हुआ है। बता दे कि उत्तर प्रदेश की योगी सरकार के द्वारा ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में बगैर रजिस्ट्रेशन के प्रेक्टिस करने वाले झोलाछाप डॉक्टरों के विरुद्ध कड़ा रुख अख्तियार करते हुए सीलिंग की कार्यवाही करने के साथ ऐसे चिकित्सकों के विरुद्ध एफआईआर दर्ज कराने को लेकर जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी को आदेश जारी किए हैं। जिसके तहत जिला मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ सुनील कुमार त्यागी के निर्देशन में स्वास्थ्य विभाग टीम के द्वारा बहादुरगढ़ थाना क्षेत्र में छापामार कार्यवाही की गई। जिसके चलते बगैर रजिस्ट्रेशन संचालित हो रहे ।आस्था क्लिनिक,रेनू क्लिनिक एंड नर्सिंग होम सहित दो क्लिनिको पर सीलिंग करने के साथ अग्रिम कार्यवाही की जा रही है। स्वास्थ्य विभाग टीम के एसीएमओ डॉ दिनेश भारती ने बताया कि बगैर रजिस्ट्रेशन क्लीनिक संचालित करने वाले झोलाछाप डॉक्टरों के क्लिनिको पर सीलिंग की कार्यवाही की गई है ।बगैर रजिस्ट्रेशन के किसी भी क्लीनिक का संचालन नहीं होने दिया जाएगा। बगैर रजिस्ट्रेशन क्लीनिक संचालन करने वाले चिकित्सकों के विरुद्ध सीलिंग की कार्यवाही कर रिपोर्ट दर्ज कराकर जेल भेजा जाएगा।

युवाओं को पुलिस कार्यवाही का नहीं खौफ अवैध हथियारों से प्रदर्शन कर बना रहे अपना भौकाल

संस्कार उजाला

रिपोर्टर भूपेंद्र वर्मा

हापुड़/जनपद में युवाओं के द्वारा अवैध हथियारों का खुला प्रदर्शन कर सोशल मीडिया पर अपना भौकाल बनाने के लिए फोटो वीडियो वायरल करने का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। ऐसा ही एक मामला सिंभावली थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले गांव सिखैड़ा मुरादाबाद का बताया जा रहा है। जिसमें युवा के द्वारा पुलिस प्रशासन की कार्यवाही से बैखौफ होकरअवैध तमंचे का खुला प्रदर्शन करने के साथ अपने भौकाल वर्चस्व पैदा कर रहा है। जिसकी वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से दौड़ रही है।

समाजवादी अल्पसंख्यक सभा की मासिक बैठक सम्पन्न

संस्कार उजाला

डॉ0सै0अब्दुल खबीर

बहराइच-समाजवादी पार्टी कार्यालय बहराइच पर दिनांक 01-10-204 को समाजवादी अल्पसंख्यक सभा की मासिक बैठक सम्पन्न हुई। बैठक की अध्यक्षता समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के जिलाध्यक्ष डॉ अनवारूल रहमान खान ने की। बैठक का संचालन समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के जिला अपाध्यक्ष अध्यक्ष जमालुद्दीन खान ने किया। बैठक को सम्बोधित करते हुए डॉ अनवारूल रहमान खान ने कहा कि मौजूदा सरकार की जन विरोधी नीतियों के कारण आम जनमानस त्रस्त है, दिनों-दिन बढ़ती मँहगाई ने जनता का जीना मुश्किल कर दिया है। बैठक को सम्बोधित करते हुए मो रशीद खान ने कहा कि समाजवादी पार्टी ही एक ऐसी पार्टी है, जो जनता को न्याय दिलाने के लिए संघर्ष करती है। अब्दुल कलाम ने कहा कि हम सभी को अनुशासन में रहकर पार्टी के लिए कार्य करना है श्री इसरार ने कहा कि संघर्ष से बड़ा कोई विकल्प नहीं है वाकई यदि हमें कुछ हासिल करना है तो हम सबको संघर्ष करना होगा। समाजवादी अल्पसंख्यक सभा के जिला महामन्त्री इम्त्याज डॉ तनवीर आलम ने कहा कि समाजवादी पार्टी की नीतियों को व सपा सरकार द्वारा किये गये कार्यो को हम सब जनता तक पहुँचाने का कार्य करें। इस अवसर पर मुख्य रूप से अकबर अली,उबैद अहमद,अच्छू भई,रियासत अली,इसरार अहमद आदि लोग उपस्थित रहे

कृषि विज्ञान केंद्र, बाबूगढ़ में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के तत्वाधान में किसान प्रक्षेत्र दिवस का किया गया आयोजन

संस्कार उजाला

हापुड़/कृषि विज्ञान केंद्र बाबूगढ़ के प्रांगण में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद केंद्रीय गोवंश अनुसंधान संस्थान मेरठ के सौजन्य से एक किसान प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम को डीएसटी द्वारा प्रायोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में बाबूगढ़ के आसपास के गांवों के चार दर्जन से अधिक किसानों को भूसे और पराली के अमोनिया यूरिया उपचार द्वारा उसकी गुणवत्ता में वृद्धि करने का प्रदर्शन कर जागरूक किया गया। भूसे या पराली के इस तरह उपचार करने से उसके पोषक मान और पाचकता में वृद्धि होती है। वहीं आयोजित कार्यक्रम के सचिव डॉक्टर अजयवीर सिंह सिरोही, प्रधान वैज्ञानिक ने देशी गोवंश के नस्ल सुधार और उनके समुचित प्रबंधन के बारे में किसानों को विस्तार पूर्वक जानकारी दी। केंद्रीय गोवंश अनुसंधान से आए प्रधान वैज्ञानिक डॉक्टर संजीव कुमार वर्मा ने किसानों और पशुपालकों को पशुओं की दुग्ध उत्पादकता बढ़ाने के लिए आवश्यक खनिज तत्वों के बारे में जानकारी दी। और सभी किसानों को तीन तीन किलो मिनरल मिक्सचर वितरित किया गया। और इस परियोजना से जुड़े डॉक्टर कार्तिक ने किसानों को भूसे और पराली के अमोनिया यूरिया उपचार को करके दिखाया गया। कृषि विज्ञान केंद्र के प्रभारी डॉक्टर अरविंद कुमार ने किसानों को संबोधित करते हुए कहा कि भूसा या पराली के अमोनिया यूरिया उपचार से इसकी गुणवत्ता बढ़ाकर दूध की उत्पादकता में वृद्धि की जा सकती है। कृषि विज्ञान केंद्र की महिला वैज्ञानिक डॉक्टर विनीता सिंह ने उपस्थित महिला किसानों को दूध से विभिन्न दुग्ध उत्पाद बनाकर अधिक धन उपार्जन करने की सलाह दी। डॉक्टर अशोक सिंह ने मृदा स्वास्थ्य के बारे में विस्तार से बताया और किसानों को सही मात्रा में रासायनिक उर्वरक प्रयोग करने की सलाह दी ।कार्यक्रम के अंत में सभी उपस्थित किसानों और पशुपालकों और स्टाफ सदस्यों ने निकटवर्ती शिव मंदिर में जाकर स्वच्छता अभियान तहत साफ सफाई का कार्य भी किया। स्वच्छता कार्यक्रम में मेरठ संस्थान के प्रियांशु, कपिल, प्रदीप आदि ने सहयोग किया।

जिला कार्यालय पर 6 अक्टूबर को लखनऊ में स्वर्गीय महेंद्र सिंह टिकैत की जयंती मनाने को लेकर बीकेयू(टिकैत) की समीक्षा बैठक आयोजित हुई

संस्कार उजाला

हापुड़/किसानों के मसीहा स्वर्गीय चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की पुण्यतिथि 6 अक्टूबर को लखनऊ के डोली बाग में मनाई जाएगी जिसको लेकर जिला कार्यालय पर समीक्षा बैठक आयोजित की गई। जिसमें 5 अक्टूबर की शाम को हापुड़ रेलवे स्टेशन से किसानों का जत्था लखनऊ के लिए होगा रवाना। बता दें कि जिला मुख्य कार्यालय पर 1 अक्टूबर को भारतीय किसान यूनियन (टिकैत) की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। समीक्षा बैठक के दौरान मुख्य चर्चा किसानों के मसीहा स्वर्गीय चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की पुण्यतिथि को लेकर हुई जो लखनऊ के डोली बाग में मनाई जाएगी। समीक्षा बैठक के दौरान जिला अध्यक्ष दिनेश खेड़ा ने जानकारी देते हुए बताया है कि आगामी 6 अक्तूबर को लखनऊ के डोली बाग में गरीब और किसानों के मसीहा स्वर्गीय चौधरी महेंद्र सिंह टिकैत की पुण्यतिथि मनाई जाएगी। जिसके लिए धौलाना व हापुड़ और गढ़मुक्तेश्वर के जबांज माहार्थियों की समीक्षा की गई थी। ताकि बडे समूह के रूप में टिकैत के सिपाही भाग लेंगे। इस अवसर पर समीक्षा बैठक में मौजूद महिला विंग जिलाध्यक्ष नीलम सिंह,रोशनी सैफी, सुमित्रा देवी, कल्पना देवी, कुंवर खुशनूद, नोशाद अली,नोशाद अली, महिपाल सिंह उर्फ गुजराल,डॉक्टर मतलूब पुष्पेंद्र चौधरी,शाहिद अली, जन्म सिंह श्याम सुंदर त्यागी, जितेंद्र यादव सहित अन्य कार्यकर्ता गण उपस्थित रहे।

शिकायत अनुभाग का डीएम ने किया निरीक्षण

संस्कार उजाला

डॉ0सै0अब्दुल खबीर

बहराइच मा. मुख्यमंत्री जी, शासन, आयुक्त, अनुसूचित जाति एवं मानवाधिकार आयोग, राज्य महिला आयोग, पिछड़ा वर्ग आयोग, अल्पसंख्यक कल्याण आयोग, राजस्व परिषद, डीएम की जनसुनवाई तथा अन्य स्तरों से प्राप्त होने वाले संदर्भो के निस्तारण की स्थिति का जायजा लेने के उद्देश्य से जिलाधिकारी मोनिका रानी ने कलेक्ट्रेट स्थित शिकायत अनुभाग का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान डीएम ने विभिन्न पंजीकाओं का अवलोकन करते हुए सन्दर्भो के प्रेषण, प्राप्त आख्या इत्यादि के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करते हुए पटल सहायकों को निर्देशित किया कि समय से आख्या प्राप्त न होने पर अनुस्मारक पत्र प्रेषित कराया जाय तथा सम्बन्धित अधिकारियों से मोबाइल पर वार्ता भी की जाय। निरीक्षण के समय मौजूद मुख्य राजस्व अधिकारी देवेन्द्र पाल सिंह को डीएम ने निर्देशित किया कि वे नियमित रूप से शिकायत प्रकोष्ठ का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं का जायजा लेते रहे।

बीकेयू अराजनैतिक जिलाध्यक्ष पवन हूण गुर्जर के नेतृत्व में 2004 बिजली बिल घोटाले से त्रस्त किसानो की समस्या के संबंध में विभाग के आला अधिकारियों के साथ बैठक हुई आयोजित

संस्कार उजाला

हापुड़/भारतीय किसान यूनियन (अराजनैतिक) जिला अध्यक्ष पवन हूण गुर्जर के नेतृत्व में 2004 बिजली बिल घोटाले से त्रस्त किसानों की समस्याओं के निस्तारण को लेकर विद्युत निदेशक पश्चिमी उत्तर प्रदेश संजय जैन एवं विद्युत चीफ राजीव अग्रवाल, गढ़ एक्शन,धौलाना एक्शन, पिलखुवा एक्शन, के साथ एक बैठक आयोजित की गई। जिसमें निम्न बिंदुओं पर किसने की समस्याओं को लेकर विस्तार से चर्चा हुई।

(1) हापुड़ जिले में 2004 का बिजली घोटाला हुआ था। जिन किसानों के बिल जमा हो गए हैं। इनके बिल बकाया नहीं आने चाहिए,इनके पास जमा रसीद है। सभी किसानों की समस्यायों का निस्तारण हो।

(2.) सरकार के द्वारा की गई घोषणा के अनुसार नलकूपों के 2023 मार्च के बाद के बिल माफ होंगे।

(3.) देहात में 11000 की लाइन खत्म हो

(4.) ग्रामीण व जंगलों की जर्जर लाइन बदली जाए और तार टूटने या जर्जर लाइनों के द्वारा किसने की जलने वाली फसल के मुआवजे की रकम बढ़ाई जाए

(5.) देहात में घरेलू कनेक्शन पर बिजली के बिल ज्यादा आ रहे हैं उनकी जांच कर उन्हें सही करा जाए। इस अवसर पर अधिकारियों के साथ आयोजित की गई बैठक में कटार सिंह गुर्जर, लीले प्रधान, एडवोकेट नरेश नागर, अनिल हूण, सहित अन्य कार्यकर्ता की उपस्थित रहे।

सिंभावली ब्लॉक की ग्राम पंचायत में बने सचिवालय उप स्वास्थ्य केंद्र टूटे मार्गों पर जल भराव शौचालयों पर लटके ताले खुद बयां विकास कार्यों की गति

संस्कार उजाला

गढ़मुक्तेश्वर/जनपद की तहसील गढ़मुक्तेश्वर के सिंभावली ब्लॉक क्षेत्र के गांव में लाखों रुपए की कीमत से बनाए गए सचिवालय, सामुदायिक शौचालय, उप स्वास्थ्य केंद्रों पर लटके ताले और टूटे रास्तों में जल भराव की समस्याएं खुद बयां कर रही हैं। गांव में कराए जा रहे विकास कार्यों की गति। बता दें कि सिंभावली ब्लॉक की ग्राम पंचायत भोवापुर मस्तान नगर,ब्रहमगढी, फुलडेरा ,भोवापुर गांव ,दरियापुर ,सैना, रतुपुरा, सिखैडा, सहित गढ़मुक्तेश्वर ब्लॉक की ग्राम पंचायत अनूपपुर डिबाई, कब्रिस्तान में जल भराव सामुदायिक शौचालय, पर ताला लटकने के साथ उपरोक्त सभी ग्राम पंचायतों में बने सचिवालय उप स्वास्थ्य केंद्र, सामुदायिक शौचालय पर लटके ताले खुद बयां कर रहे हैं। ग्राम पंचायतों में विकास की गति।

अनमोल स्कूल में 45 छात्रों को लगाया गया टीडी का टीका

संस्कार उजाला

डॉ0सै0अब्दुल खबीर

मिहींपुरवा बहराइच

तहसील मिहीपुरवा क्षेत्र अंतर्गत गायघाट कस्बे के आसाम रोड स्थित अनमोल माण्टेसरी स्कूल में टीडी टीकाकरण अभियान चलाया गया, जिसमें लगभग 45 छात्रों को टीडी का टीका लगा। उप स्वास्थ्य केन्द्र गायघाट की क्षेत्रीय एएनएम अंजलि ने बताया की 10 से 16 वर्ष तक के बच्चों को टीडी का टीका लगाया गया है। टिटनेस, डिपथिरिया जैसी बीमारियों से बचाव के लिए यह टीका लगाया जाता है। अनमोल स्कूल के लगभग 45 छात्रों को टीका लगाया गया है और खाने की दवा भी वितरण किया गया है। टीका करण म क्षेत्रीय आशा श्रीमती राजवती ने सहोयग किया। टीकाकरण के दौरान मौके पर प्रधानाध्यापक बरकत अहमद, शिक्षक मोहम्मद जमील कुरैशी, मुजफ्फर अली, क्षेत्रीय आशा राजवती सहित छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

सिंभावली पुलिस ने मोबाइल मैट के मामले में दो पक्षों में हुई मारपीट में दोनों पक्षों के आधा दर्जन लोगों के विरुद्ध की शांति भंग की कार्रवाई

संस्कार उजाला

गढ़मुक्तेश्वर/ सिंभावली थाना क्षेत्र के अंतर्गत हरोडा चेक पोस्ट के पास मंगलवार की सुबह दो पक्षों में मोबाइल चैट करने को लेकर मारपीट हो गई। जिसमें दोनों पक्षों के तीन लोग घायल हो गए। पुलिस ने दोनों पक्षों पर कार्रवाई करते हुए छह लोगों को शांति भंग में निरुद्ध किया। थाना प्रभारी श्यौपाल सिंह ने बताया कि गांव हरोडा के कमरान और रझैटी के सारिक के बीच मोबाइल फोन पर किसी से चैट करने को लेकर कहासुनी होने के बाद मारपीट हो गई ।दोनों पक्षों के लोग आमने-सामने आ गए और मारपीट करने लगे। जिसमें एक पक्ष से रमित और दूसरे पक्ष से सारिक और अंजार घायल हो गए ।पुलिस ने दोनों पक्षों का मेडिकल कराया। साथ ही थाना प्रभारी ने बताया कि इस संबंध में दोनों पक्षों के छह लोगों हरोडा के रमित,जुबैर,कामरान और थाना बहादुरगढ़ के गांव रझैटी के अंजार,सारिक और कैफ पर शांति भंग की धारा में कार्रवाई की है।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं दस्तक अभियान का हुआ शुभारम्भ

जिलाधिकारी ने हरी झण्डी दिखाकर जागरूकता रैली को किया रवाना, विश्व वृद्ध दिवस के अवसर पर लगाया गया नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर

संस्कार उजाला ब्यूरो अशोक शर्मा

सहारनपुर, जिलाधिकारी श्री मनीष बंसल द्वारा माननीय मुख्यमंत्री उ0प्र0 सरकार के निदेर्शानुसार माह अक्टूबर 2024 में 01 अक्टूबर 2024 से 31 अक्टूबर 2024 तक विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं 11 अक्टूबर से 31 अक्टूबर 2024 तक दस्तक अभियान का उद्घाटन किया गया एवं जनजागरूकता रैली को हरी झण्डी दिखाई गयी। इसी के साथ विश्व वृद्ध दिवस के अवसर पर नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर का भी उद्घाटन किया गया। जिलाधिकारी ने कहा कि संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान का उददे्श्य संचारी रोगों पर नियंत्रण हेतु जनता को जागरूक करना एवं रोगों से कैसे बचा जा सकता है के लिये प्रेरित करना है। पूर्व वर्षो में संचारी रोग पखवाडा, संचारी माह मनाये जाने से प्रदेश में अब संक्रामक रोगों में काफी गिरावट आई है। इस अभियान में जनपद स्तर एवं ब्लॉक पर ए0एन0एम0, आशा, एवं आंगनवाडी के सहयोग से संचारी रोगों पर नियंत्रण पाया जा सकता है। जनपद एवं ब्लॉक स्तर पर इस अभियान में संचारी रोग से बचाव हेतु व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार (हॉर्डिग, बैनर, पैम्फलेट एवं माइकिंग आदि) के लिये समस्त तैयारियां पूर्ण कर ली गयी है। मनीष बंसल ने सभी विभागों को निर्देशित किया कि लक्ष्य के सापेक्ष कार्य करें। उन्होने आशा, आंगनवाडी एवं ए0एन0एम0 से संचारी रोग/गैर संचारी रोग के विषय में प्रश्न पूछ कर जानकारी ली। उन्होने विभागों द्वारा लगाये गये स्टॉलों का निरीक्षण किया तथा उनसे कार्यक्रमों के विषय में जानकारी ली। सभी जनमानस को बताया गया कि संचारी रोग नियंत्रण अभियान में अपना सहयोग प्रदान करें। जिससे संचारी रोग जैसे, डेंगू, मलेरिया, चिकनगुनिया,टी0बी0, डायरिया इत्यादि रोगों से बचा जा सकें। मुख्य चिकित्साधिकारी डा0 प्रवीण कुमार ने बताया कि अभियान में संचारी रोगों व दिमागी बुखार पर प्रभावी नियंत्रण के साथ ही दस्तक अभियान के अर्न्तगत फ्रंटलाइन वर्कर्स (आशा) द्वारा बुखार के

रोगियों की सूची, आई0एल0आई0 रोगियों की सूची, क्षय रोग के लक्षण युक्त व्यक्तियों की सूची, कुपोषित बच्चों की सूची, क्षेत्रवार ऐसे मकानों की सूची जहां घरों के भीतर मच्छरों का प्रजनन पाया गया हो आदि की सूची बनाकर अपनी रिपोर्ट के साथ प्रतिदिन कार्य की समाप्ति पर ई-कवच पोर्टल के माध्यम से ब्लॉक मुख्यालय पर उपलब्ध करायेगें। सभी ब्लॉकों एवं ग्राम स्तरों पर अभियान का शुभारम्भ सम्बन्धित अधिकारियों द्वारा किया गया। अभियान के शुभारम्भ के मौके पर वेक्टर जनित रोग नियंत्रण एवं बचाव हेतु स्टाल लगाया गया, जिसमें डेंगू, मलेरिया व अन्य संचारी रोगों से बचाव हेतु क्या करें, क्या न करें के बारे में जनमानस को जानकारी दी। नगर निगम, सहारनपुर द्वारा नालियों की सफाई गड्ढ़ों को बन्द करना, एण्टी लार्वा का छिड़काव एवं फागिंग समय-समय पर कराई जायेगी। जिला मलेरिया अधिकारी श्रीमती शिवांका गौड़ द्वारा बताया गया कि शासन के निदेर्शानुसार दस्तक अभियान में संचारी रोगों रोकथाम एवं नियंत्रण गतिविधियों अभियान के अर्न्तगत आशाओं द्वारा घर-घर जाकर जागरूक करेगी। ग्राम पंचायत द्वारा नाले एवं नालियों की साफ-सफाई, झाडियों की कटाई व जल भराव के निस्तारण, शौचालय की सफाई तथा घर से जलनिकासी का कार्य कराया जायेगा । डब्लू0एच0ओ0/ डी0एम0सी0 द्वारा अभियान का सवेर्लेन्स किया जायेगा, जिसकी रिपोर्ट राज्य मुख्यालय को डब्लू0एच0ओ0 द्वारा प्रेषित की जायेगी। सभी विभाग अपने द्वारा कराये जा रहे कार्यो की रिपोर्ट राज्य मुख्यालय द्वारा निर्गत किये गये डेस्क बोर्ड के माध्यम से स्वत: देख कर आवश्यक सुधार कर पायेगे। उन्होने बताया कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग दिमागी बुखार एवं अन्य वेक्टर जनित रोगों, जल जनित रोगों तथा उष्ण मौसम से संबंधित रोगों परं नियंत्रण गतिविधियों हेतु जनपद, ब्लाक तथा पंचायत/ग्राम स्तरों पर विभिन्न विभागों के बीच समन्वय हेतु नोडल विभाग का कार्य करेगा। नगर विकास विभाग द्वारा नालियों की साफ-सफाई, झाडियों की कटाई व जल भराव के निस्तारण के साथ रोस्टर के अनुसार नगर क्षेत्र में फॉगिंग का कार्य किया जाएगा। आंगनवाडी कार्यकत्रियों के द्वारा अपने क्षेत्र के समस्त कुपोषित तथा अति कुपोषित बच्चों की सूची बनाकर उनकों उचित पोषाहार उपलब्ध कराना तथा आवश्यक होने पर पोषण पुनर्वास केन्द्रों पर उपचार तथा पोषण पुनर्वास हेतु भेजने का कार्य किया जाएगा। एसबीडी जिला अस्पताल के ब्लड बैंक में अमर उजाला फाउण्डेशन एवं एफबीडी संस्था की ओर से रक्तदान का आयोजन किया गया। जिलाधिकारी द्वारा शिविर के उद्घाटन के साथ-साथ रक्तदाताओं को प्रमाण पत्र भी वितरित किए गये। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 प्रवीण कुमार, प्रमुख अधीक्षक डॉ0 रामानन्द, अमर उजाला ब्यूरो चीफ विनीत तोमर जिला मलेरिया अधिकारी श्रीमती शिवांका गौड एवं हास्पिटल का स्टाफ,उपस्थित रहे।

संक्षिप्त डायरी

धनुष यज्ञ व लक्ष्मण-परशुराम संवाद की लीला का मोहक मंचन

संस्कार उजाला

सहारनपुर चिलकाना सुल्तानपुर नगर के पीठ मैदान में एकता मंच पर आयोजित वार्षिक श्री राम लीला में जनकपुरी नगरी में राजा जनक के दरबार मे धनुष यज्ञ में भगवान श्री राम द्वारा शिव धनुष को तोड़कर श्रीराम विवाह संपन्न हुआ। वही शिव धनुष टूटने पर महर्षि परशुराम जी क्रोधित होकर सभा मे पहुँचते है और लक्षण के संवाद करते है जिसे देखकर सभी धर्मप्रेमी आनन्दित होते है। सुल्तानपुर मे होने वाली रामलीला का उदघाटन आयुष सैनी द्वारा किया गया। वहीं गणेश जी की आरती योगेश सैनी, विपिन ज्वैलर्स, हिमांशु, ओर माँ जगदम्बा जी की आरती डॉ दीपक सैनी, डॉ आशीष कुमार, राजेश व श्रीराम चन्द्र जी की आरती प्रभात फोटो स्टूडियो चिलकाना व रोबिन सैनी ने की। श्रीराम के रोल में दीपक, लक्ष्मण के रोल में रोहित, सीता के रोल रायसिंह, राजा जनक के रोल में सुधीर सैनी, हुड़दंग महाराज के रोल राहुल, रावण के रोल में आदेश, स्वामी विश्वामित्र के रोल में विकास, बाणा शुर के रोल में अंशुल कश्यप व परशुराम के रोल में रोहित सैनी ने अपनी भूमिका निभा दर्शकों को मंत्र मुग्ध किया । वहीं श्री रामलीला मंच का सुंदर संचालन आकाश काशी द्वारा किया गया, श्रीराम लीला कमेटी में मंदीप, अमित, संजय, लाजपतराय, सचिन, अंकित, पपन, कनहैया, गणेश, संदीप, दीपक, रोहित आदि मौजूद रहे ।

भाकियू ने धरना प्रदर्शन कर 8 सूत्रीय ज्ञापन जिलाधिकारी को सौंपा

खेती सम्बंधी यंत्रों पर जीएसटी हटाये जाये: डॉ खालिद

संस्कार उजाला

मनोज त्यागी सहारनपुर। भारतीय किसान यूनियन (तोमर) कलेक्ट्रेट पर धरना प्रदर्शन कर 8 सूत्रीय मांगों का ज्ञापन मुख्यमंत्री के नाम जिलाधिकारी को सौंपा। जिसमें उन्होंने जल्द से जल्द किसानों की समस्याओं के समाधान करने की मांग की। भाकियू किसान यूनियन (तोमर) द्वारा दिये ज्ञापन में मांग की गयी कि गन्ने का भाव आगमी सत्र में 600 रुपए प्रति कु0 होना चाहिये। इस मौके पर महानगराध्यक्ष डॉ खालिद एडवोकेट ने धरने को सम्बोधित करते हुए कहा कि फसलों में अधिक लागत लगने व गन्ना मिलों से समय पर भुगतान न होने से किसान कर्ज में डूब रहा है और आये दिन आत्महत्या कर रहा है। इसलिये किसानों के सभी कर्ज.का ब्याज माफ होना चाहिये। उन्होंने कहा कि गन्ना मिलों से किसानों को 14 दिन के अन्दर गन्ना भुगतान कराया जाये। सुप्रीम कोर्ट के आदेशानुसार 14 दिन के बाद मय ब्याज के भुगतान होना चाहिये। इस मौके पर महानगराध्यक्ष डॉ खालिद एडवोकेट ने खेती सम्बंधी यंत्रों पर जीएसटी हटाये जाने की भी मांग की। जिलाध्यक्ष अशोक त्यागी ने भी अपने सम्बोधन में कहा कि एम.एस.पी. को लाभकारी बनाकर गारन्टी कानून बनाया जाये और मनरेगा को सीधा खेती से जोड़कर किसानों को मजदूर उपलब्ध कराये जाये। जिलाध्यक्ष ने आवारा पशुओं की बढ़ती जनसंख्या से किसानों की फसलों को बरबाद होने से बचाये जाने की भी मांग की। युवा प्रदेशाध्यक्ष रईस मलिक ने कहा कि बाजारों में नकली दवाईयां बिक रही है जिस कारण खेती में दवाईयां काम नही कर रही है। नकली दवाईयों की जांच कर नकली दवाईयां जल्द से जल्द बंद करायी जाये और 60 वर्ष की किसान या मजदूरों को वृद्धा पेंशन दिलाये जाये। भारतीय किसान यूनियन (तोमर) ने प्रतिनिधि मण्डल ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से मांग की गयी कि किसानों का प्रतिनिधि मण्डल काफी समय से अपनी मांग कर रहे है लेकिन आज तक इसका कोई समाधान नही किया गया है। प्रतिनिधि मण्डल ने कहा कि जल्द से जल्द किसानों की समस्याओं का समाधान किया जाये। धरना प्रदर्शन में मुख्य रूप से जिलाध्यक्ष अशोक त्यागी, युवा प्रदेशाध्यक्ष रईस मलिक, युवा संगठन मंत्री हाजी इस्लाम, महानगराध्यक्ष डॉ खालिद एडवोकेट, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष रूबी त्यागी, कुवंर पाल, मांगे राम, श्याम लाल, मुन्ना आदि मौजूद रहे।

विकास प्राधिकरण देखता रहा, अवैध निर्माण होता रहा ।

संस्कार उजाला

सहारनपुर :-सील लगने के बाद भी हुआ अवैध निर्माण । सरकारी राजस्व को पहुचाई गई लाखो रुपए की हानि । योगी सरकार में लगातार अवैध निर्माण पर हो रही कार्यवाही के बावजूद भी सहारनपुर विकास पर अधिकरण की मिली भगत से करीब 6 माह से अवैध निर्माण हो रहा है ।और सहारनपुर विकास प्राधिकरण के क्षेत्रीय अधिकारी आखे बंद किए देख रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि लगभग 6 माह से अवैध निर्माण हो रहा है। और प्राधिकरण के जिम्मेदार अफसर उसे रोकने में असफल रहे लेकिन कागजी कार्यवाही में कोई कसर नहीं छोड़ी निर्माण की प्रारंभिक रूपरेखा से प्रतीत होता है कि भवन निर्माण वैध हो रहा है या अवैध किंतु सहारनपुर विकास प्राधिकरण ने पूर्ण रूप से आंखें बंद कर रखी हैं । मामला यह है कि नवादा रोड पेट्रोल पंप के सामने एक भवन एवं दुकानों का अवैध निर्माण चल रहा है। अचानक इस निर्माण को सहारनपुर में कार्य करने वाली संस्कार उजाला की टीम ने अपने कमरे में इस भवन की फोटो कैद कर खबर प्रकाशित की जिसके बाद विकास प्राधिकरण के अधिकारियों ने मौके पर जाकर रउक्त स्थल पर हो रहे निर्माण कार्य पर जाकर भवन स्वामी को नोटिस देकर सील की कार्यवाही की थी मगर प्रॉपर्टी डीलर ने अधिकारियों से साठ गांठ कर सील खुलवाकर फिर निर्माण कार्य शुरू कर दिया है। लेकिन ऐसा नहीं हुआ सील के बाद भी अवैध निर्माण जारी होकर अपनी मंजिल तक पहुंच एस डी ए को आज भी ठेंगा दिखा रहा है अब यह देखना है कि उक्त प्रकरण पर सहारनपुर विकास प्राधिकरण द्वारा क्या कार्यवाही अमल में लाई जाती है।

संक्षिप्त डायरी

राज्य रक्त संचरण परिषद द्वारा रक्तदान क्षेत्र में राज्यस्तरीय सम्मान से फैमिली ऑफ ब्लड डोनर्स को सम्मानित किया गया

ज़िला अस्पताल रक्तकोष में सर्वाधिक रक्तदान के लिए राज्य की 05 प्रमुख संस्थाओ मे शामिल टीम एफ.बी.डी. को अवार्ड मिला

संस्कार उजाला ब्यूरो

सहारनपुर। राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस, पर उत्तर प्रदेश सरकार के अन्तर्गत राज्य रक्त संचरण परिषद, उत्तर प्रदेश एवं राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी द्वारा डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ मे स्वैच्छिक रक्तदाताओं एवं संस्थाओ का सम्मान एवं शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में स्वैच्छिक रक्तदान के क्षेत्र में सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश से मात्र पांच संस्थाएं चुनी गई जिन्होंने सालभर अपने जनपद के ज़िला अस्पताल रक्तकोष को रक्तदान शिविरो के माध्यम से सर्वाधिक रक्त यूनिट रक्तदान करवाई। सहारनपुर की लब्ध प्रतिष्ठित संस्था फैमिली ऑफ ब्लड डोनर्स ट्रस्ट से अध्यक्ष पंकज कुमार को राज्य की प्रमुख संस्था के लिए एवं नीरू सिंह को महिला रक्तदाता के रूप में सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित परियोजना निदेशक (राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी), उपाध्यक्ष (राज्य रक्त संचरण परिषद, उत्तर प्रदेश) आई.ए.एस. अमृता सोनी एवं निदेशक (डॉ. राम मनोहर लोहिया आयुर्विज्ञान संस्थान, लखनऊ) डा० सी.एम. सिंह ने यह सम्मान प्रदान किया। संस्थापक तरुण भोला ने बताया कि यह सम्मान जनपद के सभी रक्तदाताओं को समर्पित है जो पिछले नौ वर्षों से फैमिली ऑफ ब्लड डोनर्स के साथ जुड़कर रक्तदान करते है। आज संस्था का राज्य स्तर पर सम्मानित होना अपने आप में हमारे लिए गर्व का विषय है।

सहारनपुर जिला अस्पताल में आशाओं का मुख्य चिकित्सक अधिकारी के गेट के बाहर धरना

संस्कार उजाला

सुरेंद्र विश्वकर्मा सहारनपुर ,ननौता सीएससी पर एएनएम डॉक्टर एवं आशा के बीच हुए विवाद और मारपीट की घटना के विरोध दस दिन पूर्व आशाओं ने जिला अधिकारी को प्रमोद कुमार डॉक्टर के खिलाफ शिकायती पत्र दिया था. डॉक्टर प्रमोद को हटाने की मांग को लेकर प्रदर्शन किया. और दस दिन बीतने के बाद भी आज तक डॉक्टर पर कोई कार्यवाही नही हुई. डॉ पर कार्यवाही नहीं होने से नाराज अलग-अलग ब्लॉक की सैकड़ो आशाओं ने आज जिला चिकित्सा मुख्यालय पर पहुंचकर डॉक्टर के खिलाफ धरना प्रदर्शन किया, आशाओं ने बताया की डॉक्टर हमारी आशा बहन का मानदेय के वाउचर पर तीन महीने पास नही कर रहा था और हम आशाओं को अभ्रता और आशा के साथ मारपीट की. साथ ही हम आशाओं को एक निजी कंपनी के साथ ब्लॉक में जोड़ा गया है जहां हमे एक निजी कम्पनी के युवक के कहने पर गांव में सभी पांच साल ऊपर युवा महिलाओ को हेपेटाइटिस बी इंजेक्शन लगवाने होंगे,भोले भाले वाले ग्रामीणों को डरा कर उनसे एक राजिस्टेशन कार्ड के ₹10 और इंजेक्शन के 60 से ₹70 लिए जा रहे हैं , सिर्फ एक डॉक्टर बिना डिग्री के गांव ननौता के गांव लैंडोरा में इंजेक्शन लगाने का काम कर रहा है ना तो उसके पास डिग्री है और ना ही किसी सरकार से मान्यता प्राप्त है. अन्य जिले से आकर गांव देहात में हेपेटाइटिस बी का इंजेक्शन लगा रहा है, सीएमओ ने उसे एक लेटर जारी किया की तुम गांव में जाकर आशाओं को साथ में लेकर गांव वालो को इंजेक्शन लगवाओ और उनसे पैसे लो सरकार का आदेश है. वही सरकार का कोई आदेश पैसा लेना का नही आया है सरकार जो भी इंजेक्शन लगाती है उसके लिए सरकार पहले प्रचार प्रसार करती है और सीएससी में फ्री इंजेक्शन लगाया जाता है. बाहर से आए युवक सरकारी स्कूल में बैठकर टीका करण करने में लगा है कल गांव वालों ने हंगामा भी किया और वह तुरंत वहां से भाग गया. इससे साफ जाहिर होता है कि हेपेटाइटिस बी का इंजेक्शन का सरकार का कोई अभियान नहीं है वही सहारनपुर सीएमओ प्रवीण कुमार और कंपनी की मिली भगत से लाखो रुपए की बंदर बाट की जा रही है. संबंधित मामले में सीएमओ प्रवीण कुमार से बात करनी चाहिए तो उन्होंने मीडिया के सवालों का जवाब नहीं दिया और भड़क गए और कहां की इस मामले में कुछ भी नहीं कहूंगा ,इस साफ जाहरी होता है की हेपेटाइटिस बी इंजेक्शन सरकार का अभियान नही हे जिला अस्पताल के सीएमओ और कंपनी की मिली भगत से सब हो रहा है. वही देखने वाली बात होगी की जिले के आला अधिकारी जिले के कोई संज्ञान लेकर कोई कार्रवाई करते या मामले को ठंडा बस्ते में डाला जाएगा.

संसारपुर के प्राथमिक विद्यालय में बच्चों का भविष्य खतरे में है

पानी की निकासी न होने के कारण स्कूल प्रांगण में गंदा पानी फैल रहा है

जबकि स्कूल में लगभग 117 बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं

संस्कार उजाला ब्यूरो

सहारनपुर ,क छुटमलपुर जानकारी के अनुसार संसारपुर गांव में पानी की निकासी न होने के कारण गांव का पानी गांव की नालियों के रास्ते प्राथमिक विद्यालय संसारपुर के प्रांगण में फैल रहा है जिससे स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों को शिक्षा लेने में काफी परेशानी हो रही है उधर प्राथमिक विद्यालय के प्रधानाचार्य का कहना है की यह पानी बिन बारिश के भी चलता रहता है और बारिश के दिनों में दो-तीन फीट पानी स्कूल प्रांगण में भर जाता है तथा ग्राम विकास अधिकारी रामकुमार

तथा ग्राम प्रधान को इसकी सूचना कई बार दी है लेकिन इस समस्या का अभी तक समाधान नहीं हो पाया है इस संबंध में ग्राम विकास अधिकारी रामकुमार से फोन पर बात की गई तो उन्होंने बताया कि गांव की पानी निकासी वाले नाले पर विद्युत विभाग का ट्रांसफॉर्म रखा गया है जिससे वहा पर पानी की निकासी करने के लिए सफाई नहीं हो पा रही है और पानी में करंट फेलने का भय बना रहता है विद्युत विभाग को भी कई बार इसकी की जानकारी दे दी गई है लेकिन विद्युत विभाग इस तरफ कोई ध्यान नहीं दे रहा है जिसकी वजह से स्कूल प्रांगण में गंदा पानी फैल रहा है उधर ग्राम प्रधान से बात फोन पर बात की गई तो उन्होंने बताया कि इसकी कानूनी कार्रवाई की जा रही है लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हो रही है उधर ग्रामीणों का कहना है कि इस तरह गंदा पानी स्कूल प्रांगण में फेलने से बच्चों में बीमारी फैलने की अनहोनी हो सकती है अब क्या कह सकते हैं इसमें ग्राम विकास अधिकारी की गलती है या विद्युत विभाग की गलती है यह तो आने वाला समय ही बताएगा लेकिन स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों का भविष्य खतरे में है क्योंकि बच्चों के साथ में कुछ भी हो सकता है जिसकी जिम्मेदारी किसके पास होगी यह तो आने वाला समय ही बताएगा उधर इस संबंध में कार्यवाहक खंड शिक्षा अधिकारी सुरेश त्यागी से फोन पर बात करनी चाहि तो उन्होंने फोन नहीं उठाया

खजूरवाला में वार्षिक सत्संग में उमड़े श्रद्धालु ,संतों ने की बुरे व्यसनों से दूर रहने की अपील

खजूरवाला में आयोजित वार्षिक सत्संग में मौजूद महिला श्रद्धालु

संस्कार उजाला

सहारनपुर, नागल खजूरवाला में आयोजित वार्षिक विशाल सत्संग में संत सूरज दास ने प्रवचन करते हुए कहा कि स्वामी समनदास जी का संपूर्ण जीवन मानव कल्याण को समर्पित रहा है, लेकिन युवा पीढ़ी नशे की गलत संगत में पड़कर भविष्य खराब करने में लगी है। उन्होंने सभी से बुरे व्यसनों से दूर रहकर समाज हित में कार्य करने की अपील की। भीम आर्मी भारत एकता मिशन के राष्ट्रीय अध्यक्ष विनय रतन सिंह ने कहा कि सभी संतों महापुरुषों के आंदोलन को गति दें तथा अपने गुरुघरो की तन मन व धन से रक्षा करें। भीम आर्मी जय भीम संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष मंजीत सिंह नौटियाल ने कहा कि जिस समाज का इतिहास खत्म हो जाता है, उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है, हमे इतिहास से सबक लेना होगा। सतीश गौतम पीसीएस, जयराम गौतम ने सभी से शिक्षा, चिकित्सा व पर्यावरण को बेहतर बनाने की बात कही। कार्यक्रम में प्रदेश प्रभारी अनिल ओजस्वी, भीम आर्मी जिलाध्यक्ष शौर्य अंबेडकर, सन्नी गौतम, नफेसिंह, बुल्लाशाह, अशोक भारती, संजीव नौटियाल, अनिल रावण, महात्मा सोहन दास व मनीष सहारनपुरिया ने भी विचार रखे। इस दौरान महात्मा अनिल दास, महात्मा जगपाल दास, संत रोशनी दास, महात्मा किशन दास, मूलचंद चौहान, एसडी गौतम, मनोज कुमार, दलसिंह प्रधान, लिल्लू मिस्त्री, रोहित नगली, हिमांशु बोधि, सुमित प्रधान, झासु नेता, डॉ सोनू सिंह, प्रदीप मास्टर, सुरेंद्र मिस्त्री, कपिल बीडीसी, किरणपाल, मिंटू, विपिन मास्टर, रोहित नौटियाल, संदीप नौटियाल, नीटू रविदासिया, विश्वास कुमार आदि रहे।

स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के अन्तर्गत आयोजित हुए विभिन्न गतिविधियां

संस्कार उजाला ब्यूरो

संस्कार उजाला ,नेहा शर्मा

जिलाधिकारी एवं अध्यक्ष जिला स्वच्छता समिति एवं जिला गंगा समिति मनीष बंसल के निदेर्शों के अनुपालन में स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत मनाये जा रहे स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा की निर्धारित गतिविधि के अनुसार जिला गंगा समिति एवं जिला स्वच्छता समिति द्वारा संयुक्त रूप से ग्राम पंचायत शाहजहांपुर विकासखंड सरसावा के किसान मजदूर इंटर कॉलेज सरसावा पर नदी जल सुरक्षा एवं स्वच्छता विषय पर प्रभात फेरी तथा श्रमदान का आयोजन किया गया। इसी के साथ गंगा शपथ एवं स्वच्छता शपथ भी दिलाई गई। कार्यक्रम में प्रबंधक राजवीर सिंह ने छात्र-छात्राओं का आह्वान किया कि स्वच्छता अपना कर विकसित एवं स्वच्छ देश बनाएं। उन्होने स्वच्छता को विचार एवं व्यवहार के रूप में अपनाने के लिए ग्राम वासियों को भी अभिप्रेरित किया गया। जनता इंटर कॉलेज सरसावा पर भी स्वच्छता एवं नदी जल सुरक्षा हेतु चित्रकला तथा निबंध लेखन की प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। विद्यार्थियों को गंगा एवं स्वच्छता शपथ दिलाई गई।

बनारसी दास इंटर कॉलेज खेड़ा मुगल में नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत गंगा यात्रा एवं एक पेड़ मां के नाम वृक्षारोपण अभियान का आयोजन किया गया। गंगा यात्रा के उपरांत एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम के अंतर्गत वन विभाग के सहयोग से भारतवर्ष का मानचित्र बनाकर छात्रों द्वारा एक पेड़ मां के नाम लगाने के लिए गंगा शपथ एवं स्वच्छता शपथ जिला विद्यालय निरीक्षक हर्ष देव स्वामी द्वारा दिलाई गई। गंगा यात्रा एवं स्वच्छता कार्यक्रम के अंतर्गत देव भास्कर पांडे जिला स्वच्छता सलाहकार द्वारा स्वच्छता के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई।

हाईवे पर चोरी करने वाला गिरोह का नागल पुलिस द्वारा पदार्फाश

38 लोहे की प्लेटो और पिकअप गाड़ी के साथ 4 अभियुक्त गिरफ्तार

संस्कार उजाला

नागल सहारनपुर

अजय त्यागी नागल: वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक सहारनपुर के निदेर्शानुसार अपराधों की रोकथाम व वांछित वारंटी, अपराधों की रोकथाम हेतु चलाए जा रहे अभियान के अनुपालन में पुलिस अधीक्षक ग्रामीण एवं क्षेत्र अधिकारी देवबंद के निकट पर्यवेक्षण में प्रभारी निरीक्षक सतपाल भाटी के कुशल नेतृत्व में नागल के ब्लॉक तिराहे पर वाहन चेकिंग के दौरान

1.अमजद पुत्र मुख्तार कुरैशी निरेती चौक शेखपुरा कदीम थाना कोतवाली देहात जिला सहारनपुर
2.अरबाज पुत्र मुकर्रम
3.अरमान पुत्र मुख्तार कुरेती,
4.अजीम पुत्र मुख्तार को गिरफ्तार किया गया। सभी अभियुक्त जिला सहारनपुर के रहने वाले हैं। तलाशी के दौरान अभियुक्त गणों के कब्जे से एक सफेद टाटा गाड़ी up 11 bt

8782 जिसमे चोरी की गई 38 लोहे की प्लेट बरामद की गई। सभी अपराधियों पर मुकदमा पंजीकृत कर जेल भेज दिया गया है। गिरफ्तारी करने वाली पुलिस टीम प्रभारी निरीक्षक सतपाल भाटी,उपनिरीक्षक ओमेंद्र मलिक ,उपनिरीक्षक नरेंद्र नागर, उपनिरीक्षक सचिन त्यागी, हेड कोस्टेबल जितेंद्र सिंह ,हेड कांस्टेबल अनुज कुमार शामिल रहे।

अनूप धानक का बढ़ता जा रहा है दिन प्रतिदिन काफिला खैरी दौलतपुर

कनौह उकलाना में हुआ भव्य स्वागत अनेक परिवारों ने दिया समर्थन

संस्कार उजाला

हरियाणा/हिसार (गरिमा) : भाजपा प्रत्याशी अनूप धानक का काफिला दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है आज खैरी दौलतपुर कनौह उकलाना सहित अनेक गांव में भारी समर्थन मिला उनका स्वागत के रूप में मोटरसाइकिल तथा ट्रैक्टर काफिले के साथ स्वागत हुआ और सैकड़ो परिवारों ने भाजपा प्रत्याशी अनूप धानक को समर्थन दिया इस जन समर्थन को पाकर के भाजपा प्रत्याशी मजबूती के साथ आगे बढ़ते जा रहे हैं और विरोधियों के होसले परस्त हो रहे हैं। वही गांव में मान सम्मान स्वरूप उनको फूलों तथा पगड़ी पहनकर उसका सम्मान किया जा रहा है अनूप धानक ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि जो मान-सम्मान आप लोग दे रहे हैं उसे मान सम्मान का कर्ज वह आजीवन नहीं उतार पाएंगे। जबकि जो आप वह जिम्मेदारी सौंप रहे हैं उस जिम्मेवारी को अगले 5 साल तक निभाने का काम करूंगा। अनूप को ग्रामीण आशीर्वाद दे तो रहे हैं साथ ही उनसे कह रहे हैं की जो सेवा की है उसे सेवा का मेवा भी तुम्हें मिलेगा। इस मौके पर सैकड़ो की संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

मिलेटस गोष्ठी एवं मिलेटस रेसिपी विकास कार्यक्रम का किया गया आयोजन

फसल अवशेष प्रबन्धन जागरूकता वाहनों को हरी झण्डी दिखाकर किया गया रवाना

☛कृषि वैज्ञानिकों द्वारा किसानों को श्री अन्नों की खेती के लिये किया गया प्रोत्साहित

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। जनपद में श्री अन्नों के आच्छादन तथा उत्पादन को बढ़ाये जाने के लिये कृषकों को श्री अन्न उगाने हेतु प्रोत्साहित किये जाने के उद्देश्य से उ0प्र0 मिलेटस पुनरोद्धार कार्यक्रम के अन्तर्गत एक दिवसीय मिलेटस गोष्ठी का आयोजन दिनांक 01अक्टूबर 2024 कृषि भवन खैराबाद के परिसर में किया गया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में फसलों के अवशेष जलाने से हो रहे नुकसान के सम्बन्ध में जागरूकता के प्रसार हेतु फसल अवशेष प्रबन्धन जागरूकता वाहनों को कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर विकास राज्य मंत्री राकेश राठौर गुरू द्वारा हरी झण्डी दिखाकर रवाना किया गया। यह जागरूकता वाहन जनपद के सभी विकास खण्डों में घूम- घूम कर फसल अवशेषों को जलाने से सम्बन्धित होने वाली हानियों के विषय में प्रचार-प्रसार करेंगे। मिलेटस गोष्ठी कार्यक्रम का उद्घाटन मंत्री द्वारा दीप प्रज्वलन कर किया गया। कार्यक्रम में पधारे कृषि एवं विभिन्न विभागों के अधिकारियों द्वारा

अपने विभाग से सम्बन्धित योजनाओं के विषय में कृषकों को जानकारी प्रदान की गयी। मिलेटस रेसिपी विकास एवं उपभोक्ता जागरूकता कार्यक्रम के तहत व्यंजन विकास प्रतियोगिता भी आयोजित की गयी जिसमें जनपद से कुल सोलह प्रतिभागियों द्वारा मिलेटस के विभिन्न जैसे बाजरे की खिचडी, कोदो की खीर, रागी के लडडू, बाजरे की पकौड़ी आदि तैयार कर निर्णायक मण्डल के समक्ष प्रस्तुत किया गया। व्यंजन प्रतियोगिता में प्रथम पुरूस्कार ओजोन फार्मर प्रोड्यूसर कम्पनी द्वितीय पुरूस्कार कृषि विज्ञान केन्द्र कटिया तथा तृतीय पुरूस्कार राजकीय बालिका इण्टर कालेज की छात्राओं को प्रदान किया गया। अन्य सभी प्रति भागियों को सांत्वना पुरूस्कार एवं प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये जिलाधिकारी अभिषेक आनंद द्वारा किसानों से श्री अन्नों की खेती के क्षेत्र में आगे आने की अपील की गयी। उन्होंने बताया कि श्री अन्न- हमारी ऐतिहासिक धरोहर है,जिसकी खेती हमारे पूर्वज सदियों से करते आये हैं। आज पूरा विश्व श्री अन्नों का उपभोग करना चाहता है किन्तु अल्प उपज एवं कम आच्छादन के कारण इसकी पर्याप्त आपूर्ति नहीं की जा पा रही है। श्री अन्नों के पोषक गुणों तथा औषधिक महत्व के चलते वर्तमान तथा आने वाले समय में श्री अन्नों की मांग निश्चित रूप से बढ़ने वाली है। हमारे किसान भाइयों और एफ० पी०ओ० को इस अवसर का लाभ उठाते हुये श्री अन्न उत्पादन के क्षेत्र में आगे आना चाहिए। मंत्री द्वारा कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये बताया गया कि इस तरीके के आयोजनों से निश्चित रूप से श्री अन्नों के आच्छादन तथा उत्पादन को बढ़ाये जाने में सहायता प्राप्त होगी। गोष्ठी कार्यक्रम के लिये कृषि विभाग की सराहना की गयी।

संक्षिप्त डायरी

स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत सभासद नीलू गिरि द्वारा कराया गया 5 किलोमीटर साईकिल रेस का आयोजन।

संस्कार उजाला

निघासन खीरी। स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा के तहत 5 किलोमीटर की साइकिल रेस प्रतियोगिता का आयोजन वार्ड दुगार्पुरम की सभासद नीलू गिरि द्वारा कराया गया। मंगलवार को स्वच्छता पखवाड़ा अभियान के तहत सदर चौराहे से रकेहटी चौराहे तक साइकिल रेस प्रतियोगिता का आयोजन सुबह सात बजे शुरू हुआ।जिसमे तककरीब 50 से अधिक प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया। पांच किलोमीटर की साइकिल रेस मे रवि सिंगाही प्रथम, राजेश सिंगाही द्वितीय और सचिन व रामप्रवेश दोनो एक साथ तीसरे स्थान पर रहे। साइकिल रेस प्रतियोगिता को अध्यक्ष बद्री प्रसाद मौर्य ने हरी झंडी दिखाकर रवाना किया प्रतियोगिता में ईओ दिनेश कुमार शुक्ल ने भी प्रतिभाग किया। इस दौरान चेयरमैन पुत्र विनोद मौर्य, सभासद महेश कनौजिया, राम खेलावन, मुन्ना खांन, विनोद मौर्य,सभासद प्रतिनिधि के.के मौर्य,राजू गिरि सहित तमाम नगरवासी मौजूद रहे।

तिकुनिया कांड में मृतक पत्रकार के भाई से बिजली विभाग के एसडीओ ने की अभद्रता।

संस्कार उजाला

लखीमपुर खीरी। तिकुनियाँ हिंसा कांड में शहीद हुए पत्रकार रमन कश्यप के भाई पवन कश्यप से विद्युत विभाग के एसडीओ पद पर तैनात अधिकारी ने अभद्रता करते हुए जान माल की धमकी दी है। पीड़ित ने कोतवाली में तहरीर देकर न्याय की गुहार लगाई है। पूरा मामला निघासन स्थित विद्युत विभाग कार्यालय का हैं जहाँ पवन कश्यप जो की तिकुनियाँ हिंसा कांड में मारे गए पत्रकार रमन कश्यप के छोटे भाई हैं, अपने घर का बिजली कनेक्शन संबंधित दस्तावेज देने गए थे। तभी कार्यालय पहुँचने पर एसडीओ विकास यादव ने पवन से कहा कि तुम्हारी बिना पूछे अंदर आने की हिम्मत कैसे हो गई, बाहर निकल जाओ और अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए गिरेबान पकड़ लिया। वहीं बाहर खड़े पवन कश्यप के गनर ने एसडीओ व कर्मचारियों के चंगुल से बचाया। इससे पूर्व भी विधुत विभाग का एसडीओ विकास यादव कई लोगों से भी अभद्रता कर चुका हैं। पीड़ित पवन कश्यप ने एसडीओ के खिलाफ निघासन कोतवाली पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर न्याय की गुहार लगाई हैं।

डेंगू मरीजों के साथ हो रही लापरवाही खतरे में जान।

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले में मरीजों के परिजनों ने कहा वार्ड में मच्छर बहुत अधिक हैं। जिला अस्पताल पर मच्छरों के बचाव के लिए कोई खास इंतजाम नहीं है। मरीजों सहित उनके परिजनों को हाथ वाले/ विद्युत पंखों का सहारा लेना पड़ रहा है। स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के कारण जिले में डेंगू के मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। इन मरीजों के इलाज में जिला अस्पताल में लापरवाही बरती जा रही है। डेंगू वार्ड में बिना मच्छरदानी के मरीजों को भर्ती कर दिया गया है। मच्छरों से मरीज व उनके परिजन काफी परेशान हो रहे हैं। इससे संक्रमण दूसरे मरीजों में फैलने का खतरा बना हुआ है। जिले में इस समय डेंगू के पचास मामले हैं। यह मरीज सरकारी व प्राइवेट में इलाज करा रहे हैं। जिला अस्पताल में दो मरीज भर्ती है। इन मरीजों के लिए अलग से दस बेड का डेंगू वार्ड बनाया गया है। इस वार्ड में दो मरीजों का इलाज चल रहा है। जबकि अन्य पांच मरीजों को संदिग्ध मरीज इलाज हो रहा है। लेकिन वार्ड में इलाज में लापरवाही हो रही है। मरीजों के लिए किसी भी बेड पर मच्छर दानी नहीं लगी हुई है। मरीज पंखे के नीचे लेटे हुए है।एक मरीज के परिजन ने बताया यहां पर बहुत मच्छर लग रहे हैं। रात में सोना मुश्किल है। लेकिन अस्पताल की तरफ से कोई मच्छरदानी नहीं दी जा रही है। इससे यह संक्रमण दूसरे मरीजों में फैलने का खतरा बना हुआ है। मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. इंद्र सिंह ने बताया कि अस्पताल में डेंगू मरीजों के लिए पर्याप्त दवाएं उपलब्ध है। मरीजों के लिए मच्छर दानी की भी व्यवस्था है। हर महीने में पंद्रह हजार ब्लड सैंपल लिए जाते हैं सैंपल के सभी किड्स उपलब्ध है जो भी मरीज डेंगू पॉजिटिव निकलता है उसका समुचित इलाज किया जाता है। जिला अस्पताल के चिकित्सक डॉ. गौरव मिश्रा बताते है कि डेंगू मच्छर से फैलता है। मरीज को मच्छर से बचाना चाहिए। अगर मच्छर डेंगू मरीज को काटता है। उसके बाद दूसरे मरीज को काट लेता है तो उस व्यक्ति को भी डेंगू होने की आशंका रहती है। इसलिए अपने घर के आस पास गंदगी न होने दें। मच्छरों से बचने के लिए मच्छरदानी का प्रयोग करें। घर में कूलर व गमलों का पानी बदलते रहे।जिले में मलेरिया के मामले भी बढ़ते जा रहे हैं। तीन माह में जिले में करीब छः सौ पचास मलेरिया के मामले आ चुके है। यह जिला अस्पताल सहित सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र की जांच में सामने आए है। इन मरीजों का इलाज चल रहा है। जिले में रोजाना दो से तीन मामले मलेरिया के आ रहे हैं। यह मरीज सरकारी व प्राइवेट में इलाज करवा रहे है। जिले में डेंगू व मलेरिया के मामले सामने आ रहे हैं। इन मरीजों का इलाज चल रहा है।अभी तक मलेरिया व डेंगू से जिले में किसी की भी मौत नहीं हुई है। सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र व जिला अस्पताल में सुविधाएं मौजूद है।गांवों में जानकारी मिलने पर टीम भेजकर दवाईयां दी जाती है।

तीन से सात अक्टूबर तक सुबह ग्यारह बजे से तीन बजे शाम तक विद्युत आपूर्ति रहेगी बाधित।

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले के उप विद्युत वितरण खण्ड हरगांव के अन्तर्गत हरगांव से लहरपुर 33 के बी की हाइटेंशन लाइन पर पेड़ों की डालें आये दिन गिरने से विद्युत आपूर्ति बाधित हो जाती है। जिससे उपभोक्ताओं को असुविधा का सामना करना पड़ता है। उपभोक्ताओं की समस्या से आजिज आकर उपभोक्ताओं को बेहतर विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कराने के लिए विद्युत विभाग ने लाइन पर पड़ने वाले पेड़ों की कटाई व छटाई का कार्य तीन अक्टूबर से सात अक्टूबर तक करवाने जा निर्णय लिया है। इस सम्बन्ध में उप खण्ड अधिकारी विद्युत (एसडीओ) विनय वर्मा ने बताया कि उपभोक्ताओं को बेहतर विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित कराए जाने के उद्देश्य से विद्युत लाइन पर आने वाले/ पड़ने वाले पेड़ों की कटाई छंटाई का कार्य तीन अक्टूबर से सात अक्टूबर 2024 तक कराया जाएगा। इस दौरान सुबह ग्यारह बजे से शाम तीन बजे तक हरगांव क्षेत्र की विद्युत आपूर्ति बाधित रहेगी।

बिजली विभाग के अवर अभियंता पर अवैध वसूली करने का आरोप।

पैसे न मिलने पर काट दिया कनेक्शन,सही बिल नहीं मिलने से परेशान उपभोक्ता।

क्षेत्र में काफी संख्या में बाकी है बिजली विभाग का पैसा लेकिन एक उपभोक्ता का काट दिया कनेक्शन

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। विद्युत वितरण खण्ड द्वितीय के पावर हाउस देवगवा क्षेत्र में पिसावां के अंतर्गत महोली रोड पर स्थित एक उपभोक्ता का विभाग ने सही बिल नहीं दिया और बिना बिल दिए जेई राजेश गौतम पैसे मांगने लगे जब मांगे गए पैसा का उपभोक्ता द्वारा रसीद मांगी गई तो अवर अभियंता नाराज होकर के उपभोक्ता का विद्युत कनेक्शन काट दिया।उपभोक्ता का आरोप है कि अवर अभियंता राजेश गौतम लगातार क्षेत्र में उपभोक्ताओं का कनेक्शन चेक करने के नाम पर अवैध वसूली करते हैं और जो पैसे नहीं देता है उसका कनेक्शन काट देते हैं।पीड़ित उपभोक्ता ने परेशान होकर ऊर्जा मंत्री सहित विभागीय अधिकारियों को एक्स ट्विटर पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज करायी है।कनेक्शन धारक लक्ष्मी देवी पत्नी धीरेन्द्र कुमार भार्गव अपना संस्थान

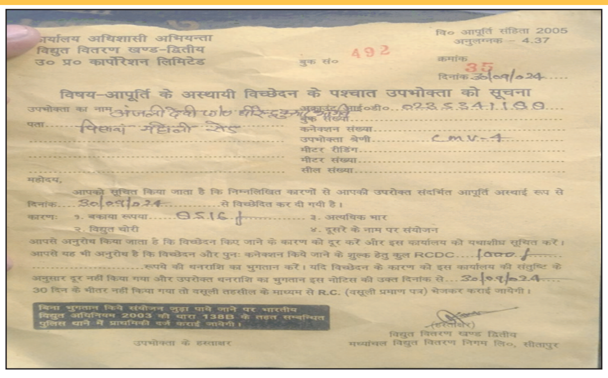

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
विद्युत वितरण खण्ड-द्वितीय
उ० प्र० कार्पोरेशन लिमिटेड

वि० आपूर्ति संहिता 2005
अनुलग्नक - 4.37

बुक सं० 492 क्रमांक 35 दिनांक 30/09/024

विषय-आपूर्ति के अस्थायी विच्छेदन के पश्चात उपभोक्ता को सूचना

उपभोक्ता का नाम ... पता ... कनेक्शन संख्या ... उपभोक्ता श्रेणी ... मीटर रीडिंग ... मीटर संख्या ... सील संख्या

महोदय,
आपको सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित कारणों से आपकी उपरोक्त संदर्भित आपूर्ति अस्थाई रूप से दिनांक 30/09/024 से विच्छेदित कर दी गयी है।
कारण: 1. बकाया रुपया 8516 ... 3. अत्यधिक भार 2. विद्युत चोरी 4. दूसरे के नाम पर संयोजन
आपसे अनुरोध किया जाता है कि विच्छेदन किए जाने के कारण को दूर करें और इस कार्यालय को यथाशीघ्र सूचित करें। आपसे यह भी अनुरोध है कि विच्छेदन और पुनः कनेक्शन किये जाने के शुल्क हेतु कुल RCDC 1000/- ... रूपये की धनराशि का भुगतान करें। यदि विच्छेदन के कारण को इस कार्यालय की संतुष्टि के अनुसार दूर नहीं किया गया और उपरोक्त धनराशि का भुगतान इस नोटिस की उक्त दिनांक से 30/09/024 ... 30 दिन के भीतर नहीं किया गया तो वसूली तहसील के माध्यम से R.C. (वसूली प्रमाण पत्र) भेजकर कराई जायेगी।
बिना भुगतान किये संयोजन जुड़ा पाये जाने पर भारतीय विद्युत अधिनियम 2003 की धारा 138B के तहत सम्बन्धित पुलिस थाने में प्राथमिकी दर्ज कराई जायेगी।
उपभोक्ता के हस्ताक्षर
(हस्ताक्षर)
विद्युत वितरण खण्ड द्वितीय
मध्यांचल विद्युत वितरण निगम लि०, सीतापुर

पिसावां में चलाते हैं जिसका बिजली मीटर खराब था जिसकी मौखिक सूचना अवर अभियंता सहित लाइन मैंन को दी गई और सही बिल माँगा गया लेकिन उपरोक्त द्वारा सही बिल नहीं दिया गया। इस सम्बन्ध में जब उपभोक्ता से पत्रकार द्वारा जानकारी ली गई तो बताया कि मेरा एक बिल इक्किस सौ रुपये का आया था जिसको ऑनलाइन जमा कर दिया गया था और सितंबर माह का बिल विभाग ने नहीं दिया था किन्तु अवर अभियन्ता राजेश भार्गव ने बिना बिल दिए एवं बिना नोटिस दिए मेरा कनेक्शन काट दिया।क्षेत्र में ऐसे तमाम ग्राहक हैं जिनके हजारों रुपये बकाया है किन्तु अवर अभियंता ने उनके कनेक्शन नहीं काटे। क्षेत्र के कई ग्राहकों ने नाम ना छापने की शर्त पर बताया कि अवर अभियंता राजेश कुमार गौतम अवैध वसूली करते हैं और कनेक्शन लेने वाले उपभोक्ताओं से भी अवैध तरीके से पैसे लेते हैं जो उपभोक्ता पैसे नहीं देता है उसको विभाग से भरी भरकम प्राक्कलन दे देते हैं।पैसे जमा करने के लिए उपभोक्ता ने विभाग से बिल माँगा था जिससे नाराज होकर अवर अभियन्ता ने कनेक्शन काट दिया। उपभोक्ता का आरोप है कि मीटर खराब है और पहले एक माह का इक्किस सौ रुपये का बिल आया था उसके बाद दूसरे माह में आठ हजार पांच सौ सोलह रुपये का बिल बकाया बताया जा रहा है जबकि उपभोक्ता का कोई बिल बाकी नहीं था उसके बाद सही बिल मांगा गया था।उपभोक्ता का आरोप है कि अवर अभियन्ता बिजली उपभोक्ताओं का शोषण कर रहे हैं और बिल चेकिंग के नाम पर अवैध वसूली कर रहे हैं। इस सम्बन्ध में जब अवर अभियंता राजेश गौतम के मोबाइल नंबर 99369 43512 पर बात की गई तो उन्होंने कोई जानकारी नहीं दी और बताया कि मुझसे कोई बात ना करें वहीं जब उप खण्ड अधिकारी देवगवां के मोबाइल नंबर 80049 11 693 पर फोन किया गया तो उनका नम्बर बंद था इसलिए उनका पक्ष नहीं मिल सका वहीं पीड़ित उपभोक्ता ने उच्चाधिकारियों से शिकायत करने की बात कही है एवं अवर अभियंता की जांच की मांग की है।

सोलह सूत्री मांगों को लेकर संयुक्त किसान मजदूर संगठन ने मंडी समिति में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कर सौंपा ज्ञापन।

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। संयुक्त मजदूर किसान मोर्चा के जिला संयोजक पिंदर सिंह सिद्धू के नेतृत्व में गल्ला मंडी सीतापुर में एक दिवसीय धरना प्रदर्शन कर ज्ञापन सौंपा गया। इस कार्यक्रम में दूर दूर से किसानों मजदूरों एवं महिलाओं ने भाग लिया इस सभा में सोलह सूत्री मांगों को लेकर उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री को सम्बोधित ज्ञापन को भेजने के लिए सीतापुर सदर तहसीलदार को दिया गया जिसमें किसानों मजदूरों एवं महिलाओं की समस्याओं के साथ सहारा पीड़ित जमा कर्ताओं का शीघ्र भुगतान कराये की मांग की गई। इस जन सभा को सम्बोधित करते हुए सिक्ख संगठन के जिला अध्यक्ष गुरु पाल सिंह ने गन्ना किसानों के गन्ना मूल्य बढ़ाये जाने तथा धान क्रय केन्द्रों पर किसानों को सरकारी मूल्य दिलायें जाने एवं किसान का धान खरीदें जाने की मांग की।पिन्दर सिंह सिद्धू ने कहा कि किसानों के कृषि यन्त्रों पर से जीएसटी हटाई जाये, महिला स्वयं सहायता समूहों का कर्ज माफ किया जाये,तीन सौ यूनिट बिजली फ्री की जाये। आल इण्डिया आजाद

अधिकार सेना एवं सहारा आन्दोलन के जिला अध्यक्ष नवल किशोर मिश्रा ने बताया कि सहारा इण्डिया से पीड़ित जमाकर्ताओं को भुगतान की जगह अट्ठानबे प्रतिशत डिफेसेन्सी लगाई गई है जो सहारा ही ठीक कर सकता है सहारा अपने आफिसों को बन्द कर चुका है। उसके एजेंट फ्रेंचाइजी मैनेजर सभी गायब हो गये हैं जिससे सभी जमा कर्ता परेशान हैं। सहारा की अन्य योजनाओं का पैसा न सहारा दे रहा है और पोर्टल भी नहीं बनाया जा रहा है। सहारा पर सरकार कार्यवाही भी नहीं कर रही है।

लेखपाल संघ कार्यकारिणी का हुआ गठन शिष्य कुमार बने लेखपाल संघ अध्यक्ष

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले की लहरपुर तहसील के सभा गार में उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ की शाखा लहरपुर की नई कार्यकारिणी का चुनाव सम्पन्न हुआ। जानकारी के अनुसार मंगलवार को उत्तर प्रदेश लेखपाल संघ की लहरपुर इकाई का गठन किया गया जिसमें चुनाव अधिकारी प्रतीक गुप्ता तथा चुनाव पर्यवेक्षक निलेश कुमार यादव के द्वारा चुनाव संपन्न कराया गया।तहसील अध्यक्ष पद पर लेखपाल शिष्य कुमार ने अपने निकट तम प्रतिद्वंदी सत्येंद्र वर्मा को छत्तिस मतों से हराकर विजय श्री हासिल की, शिष्य कुमार को पचपन मत मिले तो वहीं सत्येंद्र कुमार वर्मा को मात्र उन्निस मत ही प्राप्त हुए,चुनाव अधिकारी ने उन्हें छत्तिस मतों से विजई घोषित किया। वरिष्ठ उपाध्यक्ष पवन कुमार यादव,कनिष्ठ उपाध्यक्ष संजीव कुमार शुक्ल,मंत्री बलराम यादव, उप मंत्री अजय सिंह, कोषाध्यक्ष राहुल यादव तथा लेखा परीक्षक महेंद्र गुप्ता सभी को निर्विरोध निर्वाचित घोषित किया गया। इस मौके पर नवनिर्वाचित पदाधिकारियों को शपथ भी दिलाई गई। नवनिर्वाचित अध्यक्ष शिष्य कुमार ने बताया कि उनकी प्राथमिकता संघ को और अधिक मजबूत कर अपने साथियों के हितों के लिए और अधिक संघर्ष करना है।

मिलान फाउंडेशन के उन्मुक्त प्रोग्राम के अन्तर्गत बाड़ी में करवाया गया जन चौपाल

सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिले की तहसील सिधौली के ग्राम बड़ी में मिलन फाउंडेशन के तहत चल रहे उन्मुक्त प्रोग्राम के अन्तर्गत बहुत ही जागरूकता युक्त जन चौपाल का आयोजन किया गया इसमें लगभग दो सौ साठ लोग उपस्थित रहे। इस जन चौपाल में मुख्य अतिथि के रूप प्रथम संस्था से धीरज,एक्सिस बैंक के मैनेजर अमित कुमार,पेस संस्था के हरिओम बाजपेई प्रधान संघ के अध्यक्ष रामेंद्र सिंह मिलान फाउंडेशन की ब्लॉकऑर्डिनेटर शैलजा तथा फैसिलिटेटर संतोष चांदनी प्रेम कुमार लवलेश कुमार दुर्गेश नंदिनी रुचि सिंह आदि लोग उपस्थित रहे। इस जन चौपाल का मुख्य उद्देश्य महिला ऑडिट था जिसके अन्तर्गत महिलाओं और किशोरियों की सुरक्षा को और अच्छे से बढ़ाया जा सके।उन्मुक्त प्रोग्राम के किशोर किशोरियों ने बहुत अच्छे से नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया और वूमेन सेफ्टी ऑडिट के ग्यारह पैरामीटर समझाएं तथा उन पैरामीटर के अन्तर्गत जो मांगे जन चौपाल के माध्यम से प्रधान तक पहुंचाई गई उसके बाद गांव की जनसंख्या बहुत उत्साहित दिखी। उन्होंने अपनी खुशी व्यक्त की और कहा कि यह उन्मुक्त प्रोग्राम हम सबके लिए हैं जिसमें हम सब की समस्याओं को ध्यान में रखकर हम सबके गांव की महिलाओं और बेटियों की सुरक्षा को और बेहतर बनाने के लिए कार्य किया जिसके लिए हम मिलान फाउंडेशन तथा उन्मुक्त प्रोग्राम को हृदय से धन्यवाद देते हैं बच्चों ने बहुत अच्छी तैयारी की जिसमें उनके द्वारा जो नुक्कड़ नाटक प्रस्तुत किया गया वह कहीं ना कहीं समाज का आईना था जिसको लेकर जो मुख्य अतिथि रामेंद्र आए। उन्होंने बहुत अच्छे से बताया शैलजा मैम के द्वारा भी मिलान के कार्यों का वर्णन किया गया तथा जन चौपाल का उद्देश्य बताया गया। मिलान फाउंडेशन जो पिछले कई वर्षों से सिधौली ब्लाक में काम कर रहा है उन्मुक्त प्रोग्राम लगभग दो वर्षों से एक सौ गांव में चल रहा है जिसके माध्यम से प्रत्येक गांव में जन चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। इससे जुड़े लोग प्रधान के सम्मुख अपनी मांगे प्रस्तुत कर रहे हैं यह पूरा आयोजन किशोर किशोरियों के द्वारा ही किया जा रहा है जिससे किशोर किशोरियों की प्रतिभा और अच्छे से निखर कर सामने आ रही है वह प्रथम बार मंच पर खुद के द्वारा ही अपने प्रोग्राम का संचालन कर रहे हैं यह एक कौशल को बढ़ाने वाला प्रोग्राम है।

ओल्ड सेक्रेड हार्टियंस एसोसिएशन द्वारा मेधावी छात्र छात्राओं सहित उनके अभिभावकों का किया गया सम्मान।

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की अध्यक्षता में सेक्रेड हार्ट इंटर कॉलेज के पुरा छात्रों के संगठन ओशा (ओल्ड सेक्रेड हार्टियंस एसोसिएशन) द्वारा सेक्रेड हार्ट हायर सेकेण्डरी स्कूल, सीतापुर के सभागार में सत्र 2023-24 के कक्षा दस एवं बारह के मेधावी छात्र- छात्रा ओं एवं उनके अभिभावकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान हाई स्कूल की परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्र/छात्राओं सर्वज्ञ कुमार यादव अतिशय श्रीवास्तव,नविका श्रीवास्तव,श्रुती पाण्डेय, सोहम शुक्ल,अद्या बाजपेयी मोहन प्रताप सिंह,रिद्वी द्विवेदी,अद्या पाण्डेय एवं उनके अभिभावकों का प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इसी प्रकार इण्टरमीडिएट के छात्र/छात्राओं देव केजरी वाल,एश्वर्य किशोर,श्रेया बाजपेयी,अक्षत सिन्हा सौम्या गुप्ता,अक्षय श्रीवास्तव व्यापक महावर, अराध्या भार्गव एवं उनके अभिभावकों को प्रशस्ति पत्र व स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये जिलाधिकारी अभिषेक

आनंद ने सभी छात्र/छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को अर्जित की गयी सफलता पर हार्दिक बधाई देते हुये कहा कि यह सभी के लिये बहुत ही गौरव का पल है।जिलाधिकारी ने कहा कि भारत एक विकासशील देश है और यहां प्रत्येक क्षेत्र में विकास की बहुत अधिक संभावनाएं हैं। उन्होंने सभी छात्र/छात्राओं को लक्ष्य निर्धारित करने एवं उस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये अनवरत कठिन परिश्रम करने हेतु प्रेरित किया। जिलाधिकारी ने विद्यालय द्वारा लम्बे समय से छात्र/छात्राओं को दी

जा रही बेहतर शिक्षा हेतु प्रशंसा करते हुये कहा कि यह जनपद के सबसे पुराने विद्यालयों में से एक है तथा स्थापना से अब तक निरन्तर अच्छा प्रदर्शन किया जाता रहा है। उन्होंने कहा कि भारत युवाओं का देश है, जहां विकास की अपार सम्भावनाएं हैं। उन्होंने आशा व्यक्त की कि सभी छात्र/छात्राएं भारत को नई ऊंचाई पर ले जाने हेतु कठिन परिश्रम करते रहेंगे। सरकार एवं प्रशासन द्वारा हर सम्भव मदद का आश्वासन देते हुये जिला अधिकारी ने सभी छात्र/छात्राओं को उज्जवल भविष्य हेतु शुभकामनाएं भी दीं। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुये विद्यालय के प्रधानाचार्य फादर क्लौडीयस डी अलमेदा ने ओल्ड सेक्रेट हार्टियंस एसोशिएशन की ओर से सभी को शुभकामनाएं देते हुये धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने सभी छात्र/छात्राओं को कड़ी मेहनत के लिये प्रेरित करते हुये शिक्षा में 3 ह्यडीह्यडेडीकेशन,डिटर मिनेशन एवं डिवोशन के विषय में विस्तारपूर्वक बताया तथा 3ह्यडीह्य को अपनाकर सफलता के नए आयाम अर्जित करने हेतु प्रेरित किया।उन्होंने कहा कि अपनी रूचि के अनुसार जो भी आप करना चाहते हैं, उसके लिये लक्ष्य निर्धारित कर पूर्ण मनोयोग, समर्पण एवं दृढ़ इच्छाशक्ति के साथ अनवरत उसे प्राप्त करने के लिये कड़ी मेहनत करें। कार्यक्रम के दौरान उप प्रधानाचार्य फादर लारेंस जोईल,ओशा के अध्यक्ष पियूष श्रीवास्तव एवं सदस्यों संजीव मेहरोत्रा, हरीश रस्तोगी,निशीत रस्तोगी,यशवंत सिंह, यतीश गुप्ता,प्रियदर्शन मेहरोत्रा, श्रीमती सीमा जौहरी एवं कुमारी श्रेया श्रीवास्तव सहित ओल्ड सेक्रेट हार्टियंस एसोशिएशन के सदस्य, छात्र तथा उनके अभिभावक एवं विद्यालय के शिक्षक गण उपस्थित रहे।

मेरा युवा भारत स्वयं सेवकों ने जिले में किया स्वच्छता ही सेवा अभियान संचालित

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। जिला युवा अधिकारी नेहरू युवा केन्द्र सीतापुर स्वभाव स्वच्छता संस्कार का उद्देश्य लेकर नेहरू युवा केन्द्र सीतापुर के तत्वाधान में स्वच्छता पखवाड़े के अन्तर्गत स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम का आयोजन नेहरू युवा केन्द्र सीतापुर द्वारा जनपद के विभिन्न विकास खण्डों में दिनांक 17 सितम्बर 2024 से 02 अक्टूबर 2024 तक चलाए जा रहे। स्वच्छता ही सेवा कार्यक्रम के अन्तर्गत आज कृष्णा इन्स्टीटयूट ऑफ लॉ, अहमदनगर सीतापुर में एन०सी०सी० कैडेट तथा माई भारत युवाओं की सहभागिता सहित स्वच्छता का सघन अभियान आयोजित किया गया। जिसमें सफाई अभियान के अन्तर्गत सिंगल यूज प्लास्टिक एकत्रीकरण का कार्य किया गया। कार्यक्रम में स्वच्छता के संदेश के साथ समस्त युवाओं को स्वच्छता की शपथ दिलाई गयी। कार्यक्रम के सफल आयोजन में अशोक प्रजापति,जन सम्पर्क अधिकारी एवं डॉ०अरूण कुमार त्रिपाठी,प्राचार्य कृष्णा लॉ कॉलेज तथा कॉलेज के समस्त स्टाफ का विशेष योगदान रहा। कार्यक्रम में नेहरू युवा केन्द्र की जिला युवा अधिकारी श्रीमती रोषनी पटवा द्वारा बताया गया कि उक्त अभियान का आयोजन दिनांक 17 सितम्बर से जनपद के विकास खण्डों में युवा मण्डलों के माध्यम से जागरूकता

रैली, दीवार लेखन,पोस्टर प्रतियोगिता इत्यादि के माध्यम से दिनांक दो अक्टूबर तक चलाया जा रहा है तथा प्रत्येक प्रतिभागी को विभाग की ओर से माई भारत टी शर्ट,कैप,पेन तथा डायरी प्रोत्साहन के तौर पर उपलब्ध कराई जा रही है। कार्यक्रम के अन्त में एकत्रित किये

गये कचरे का निपटान कर कॉलेज के प्राचार्य डॉ० अरूण त्रिपाठी द्वारा कार्यक्रम प्रतिभागी समस्त सत्तर युवाओं को स्वच्छता की शपथ दिलाई। कार्यक्रम के सफल आयोजन में पूर्व राष्ट्रीय युवा स्वयं सेवक शीतल गुप्ता, अलाउद्दीन इत्यादि का सराहनीय सहयोग रहा।

संक्षिप्त डायरी

मृदंग केशरी पं० झण्डीलाल द्विवेदी संगीत समारोह सम्पन्न

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बुन्देलखण्ड की तहसील गौरिहार के ग्राम पलटा छतरपुर (म०प्र०) में सन 1909 ई. में जन्मे पं० श्यामसुन्दर ?झण्डीलाल? द्विवेदी मृदंगाचार्य के 115वें जन्मदिवस के अवसर पर जयंती संगीत समारोह 01 अक्टूबर 2024 ई० को रामदरबार मंदिर कटरा (बाँदा) में सम्पन्न हुआ। झण्डीलाल जी पं० कुदऊ सिंह घराने के श्रेष्ठतम मृदंग वादक थे। जयंती संगीत समारोह में कानपुर से आए ख्यातिप्राप्त ध्रुवपद गायक पं० मुकेश द्विवेदी ने राग जयजयवंती में आलाप व चारताल में बंदिश प्रस्तुत किया। बंदिश के बोल थे - (मोर मुकुट कानन कुण्डल) पश्चात मध्य लय में शूलताल प्रस्तुत किया जिसके बोल थे - (जगजननि भवानी) प्रस्तुत करते हुए अपनी प्रस्तुति सम्पन्न किया इनके साथ पखावज पर पं० अवधेश द्विवेदी (मृदंगाचार्य) ने संगति की पश्चात पं० अवधेश द्विवेदी कैपौत्र अनमोल द्विवेदी व शिष्या कु० प्रियंका मणि दोनो ने पखावज चारताल में जुगलबंदी प्रस्तुत की अगले क्रम मे जहानाबाद से पधारे उ० अयाज खाँ ने राग यमन मे आलाप व ध्रुवपद प्रस्तुत किया ।जिसके बोल थे (श्यामसुन्दर प्यारे) व राग जोग में शूलताल की प्रस्तुति दी जिसके बोल थे -(ऐसे झण्डीलाल) इनके साथ चित्रकूट से पधारे पं० लल्लूराम शुक्ल ने पखावज पर सुंदर संगति की। प्रमुदित मिश्र ने झपताल व तराना ख्याल अंग के अंदाज में प्रस्तुत किया इनके साथ तबले पर संगति मिथलेश सिंह व योगेन्द्र पाण्डेय ने की। पं० झण्डीलाल की जीवनी पर प्रकाश डालते हुए आशु कवि जवाहरलाल (जलज) व कविरत्न डॉ० सी०पी० दीक्षित (ललित) ने काव्य पाठ प्रस्तुत कर सांगीतिक व साहित्यिक सामंजस्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन पं० लल्लूराम शुक्ल ने किया।

जिलाधिकारी ने उच्च प्राथमिक विद्यालय का निरीक्षण कर दिए आवश्यक निर्देश

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

जिलाधिकारी नगेन्द्र प्रताप ने मंगलवार को विकास खण्ड महुआ के पीएमश्री कम्पोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय बरईमानपुर का औचर निरीक्षण किया। उन्होंने विद्यालय में पेयजल व्यवस्था, बालक- बालिका शौचालय, फर्नीचर की उपलब्धता, विद्युतीकरण आदि का निरीक्षण करते हुए आवश्यक व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने विद्यालय में पेयजल की समुचित व्यवस्था कराये जाने के साथ बाउन्ड्रीवाल कराये जाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने विद्यालय में निमार्णाधीन कक्षा-कक्ष के निर्माण कार्यों को शीघ्र पूर्ण कराये जाने तथा दिव्यांग शौचालय भी बनाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने शिक्षा की गुणवत्ता के सम्बन्ध में बच्चों से इतिहास व गणित के प्रश्न पूंछते हुए शिक्षा की गुणवत्ता में और अधिक सुधार करने के निर्देश उपस्थित अध्यापकों को दिये। उन्होंने बाल वाटिका कक्ष तथा विभिन्न कक्षाओं का निरीक्षण करते हुए टीएलएम के अन्तर्गत उपलब्ध करायी गयी सामग्री को कक्षाओं में लगाये जाने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने विद्यालय में संचालित स्मार्ट क्लास रूम व लाइब्रेरी की पुस्तकों का निरीक्षण करते हुए लाइब्रेरी में पुस्तकों का रख-रखाव ठीक प्रकार से किये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने विद्यालय में संचालित स्मार्ट क्लास में सभी कक्षाओं के बच्चों को सिफ्ट बार क्लास लगाये जाने के सम्बन्ध में निर्देश दिये। उन्होंने विद्यालय में छात्र/छात्राओं की उपस्थिति एवं अध्यापकों की तैनाती के सम्बन्ध में जानकारी लेते हुए विद्यालय में छात्र/छात्राओं की उपस्थिति कम पाये जाने पर, उपस्थिति बढाये जाने के निर्देश दिये। उन्होंने समस्त खण्ड शिक्षाधिकारियों को निर्देश दिये कि अपने क्षेत्र के विद्यालयों में सप्ताहिक निरीक्षण अवश्य करें तथा विद्यालय में आवश्यक व्यवस्थायें एवं छात्र/छात्राओं की उपस्थिति सुनिश्चित करायें। उन्होंने विद्यालय में सोलर पैनल लगवाये जाने तथा चबूतरे को ठीक कराये जाने के निर्देश प्रधानाध्यापक को दिये। उन्होंने विद्यालय में गन्दगी पाये जाने पर सफाई कराये जाने के लिए निर्देशित किया। उन्होंने सभी अध्यापकों को प्रतिदिन शिक्षक डायरी भरने के लिए भी निर्देशित किया। निरीक्षण के दौरान मुख्य विकास अधिकारी वेद प्रकाश मौर्य, बेसिक शिक्षाधिकारी अव्यक्त राम तिवारी, खण्ड विकास अधिकारी एवं विद्यालय के अध्यापकगण उपस्थित रहे।

वृद्ध हमारे समाज की आधारशिला है : डॉ० अनिल कुमार श्रीवास्तव

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा में अंतर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस पर जिला एन०सी०डी० सेल, जिला चिकित्सालय में संचालित जिरियाट्रिक वार्ड, जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम टीम बांदा द्वारा वृद्ध आश्रम बांदा में एक उपचार एवं जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ० अनिल कुमार श्रीवास्तव द्वारा वृद्धो के हाथों दीप प्रज्वलन कर कराया गया। मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ० अनिल कुमार श्रीवास्तव ने बताया वृद्ध हमारे समाज की आधारशिला है। उनसे ही हमारा व्यक्तित्व बनता है साथ ही उन्होंने कहा कि बचाव के लिए व्यायाम से याददाश्त से जुड़े मस्तिष्क के हिस्सों में रक्त प्रवाह बढ़ता है। व्यायाम से अवसाद और चिंता कम होती है और मूड बेहतर होता है। अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी जिला नोडल ऑफिसर एन०सी०डी० डॉ० आर एन प्रसाद ने बताया कि मधुमेह, रक्तचाप से बचाव के लिए संतुलित आहार लेना चाहिए योग व्यायाम करना चाहिए रुटीन चेकअप कराना चाहिए। डॉ० अर्चना भारती ने वृद्धो की हौसला अफजाई करते हुए कहा वृद्ध हमारे परिवार की नीव है उनकी देखभाल करना हमारा कर्तव्य है। अनुश्रवण एवं मूल्यांकन अधिकारी नरेन्द्र मिश्रा ने बताया कि अल्जाइमर रोग से बचाव के लिए योग व प्राणायाम करना चाहिए सुबह उठकर पैदल चलना चाहिए परिवार के साथ समय बिताना चाहिए। शिविर में डॉ० एस०पी० सिंह ने सामान्य मरीज को उपचारित किया, साइट्रिक नर्स त्रिभुवन नाथ ने निशुल्क दवा वितरित किया। वृद्धो का कान ऑडियोलॉजिस्ट शिवधर यादव के द्वारा कि या गया। जियाउद्दीन द्वारा वृद्धो का नेत्र परीक्षण किया गया साथ ही फिजियोथैरेपिस्ट मोहम्मद शरीफ, निशांत मौर्य व योग शिक्षक नरेंद्र भूषण तिवारी ने योग की क्रियाएं बताई। शिविर में वृद्ध आश्रम के मैनेजर श्याम किशोर त्रिवेदी ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी ? सभी चिकित्सकों का धन्यवाद ज्ञाप किया। शिविर में एफएलसी अरविंद कुमार गुप्ता, लेखा लिपिक आदि ने सहयोग किया। शिविर में मुख्य चिकित्सा अधिकारी द्वारा हियरिंग ऐड (कान में सुनने की मशीन), वाकिंग स्टिक, नी कैप व फल वितरण किए गए।

आगामी पर्वो के मद्देनजर डीएम की अध्यक्षता में संपन्न हुई शांति समिति की बैठक

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

जिलाधिकारी नगेन्द्र प्रताप की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में आगामी दुर्गापूजा, दशहरा व अन्य त्यौहारों को शान्तिपूर्ण एवं कुशलता पूर्वक तथा आपसी भाईचारे एवं सामाजिक सौहार्द के साथ मनाये जाने के सम्बन्ध में जिला शान्ति समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में जिलाधिकारी ने कहा कि परम्परागत रूप से जो कार्यक्रम व जुलूस आदि आयोजित किये जाते रहे हैं, उसी अनुरुप शान्तिपूर्णढंग से कार्यक्रम आयोजित किये जायें। उन्होंने पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारियों को निर्देश दिये कि जुलूस के मार्गों का निरीक्षण करते हुए आवश्यक व्यवस्थाओं को चेक कर लें तथा उन्हें समय से सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों से सम्पर्क करते हुए कार्यों को पूर्ण कराना सुनिश्चित करें। जिलाधिकारी ने कहा कि मूर्ति विसर्जन के लिए तय किये गये रूट को भी देख लिया जाए तथा विसर्जन स्थानों पर लाइट एवं साफ-सफाई के साथ ही अन्य आवश्यक व्यवस्थायें समय से सुनिश्चित कर ली जायें। उन्होंने त्यौहारों के अवसर पर पुलिस अधिकारियों को व्यापक सुरक्षा व्यवस्था एवं सतर्कता बरतने के निर्देश दिये। जिलाधिकारी ने विद्युत विभाग के अधिशाषी अभियंताओं को निर्देशित किया कि त्यौहारों के अवसर पर समुचित विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित करने के साथ जर्जर विद्युत के तारों व यदि कोई विद्युत पोल खराब हो तो उसको तत्काल ठीक कराये जाने के साथ विसर्जन रूट में यदि कोई तार नीचे हैं तो उसे ऊपर करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिशाषी अभियंता जल संस्थान एवं लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिये कि वर्षा के कारण जहां कहीं सड़क में गड्ढे हो गये हैं उनकी मरम्मत कराकर ठीक किया जाए तथा जल संस्थान द्वारा पेयजल की नियमित आपूर्ति की व्यवस्था करने के निर्देश दिये। उन्होंने अधिशाषी अधिकारी नगरपालिका परिषद एवं नगर पंचायतों के अधिकारियों को निर्देशित किया कि आगामी त्यौहारों को दृष्टिगत रखते हुए पूजा पंडालों सहित नगर एवं ग्रामीण क्षेत्रों में अभियान चलाकर सफाई की व्यवस्था की जाए। उन्होंने नगरपालिका परिषद एवं नगर पंचायतों के अधिकारियों को निर्देश दिये कि आवारा जानवर सुअर आदि को बाडों में बन्द करायें। उन्होंने दुर्गा पूजा पण्डालों के पदाधिकारियों को निर्देश दिये कि त्यौहारों को शान्तिपूर्वक एवं कुशलता से मनाये जाने हेतु अपने वालेन्टियर्स भी लगायें तथा पार्किंग आदि कि व्यवस्था भी सड़क से हटकर कराना सुनिश्चित करें। बैठक में उन्होंने शान्ति समिति के पदाधिकारियों से त्यौहारों को शान्तिपूर्ण ढंग से मनाये जाने हेतु उनके सुझावों को आमंत्रित करते हुए सम्बन्धित विभागों के अधिकारियों को उनकी समस्याओं के निस्तारण हेतु कार्यवाही किये जाने के निर्देश दिये। बैठक में, पुलिस अधीक्षक अंकुर अग्रवाल, अपर जिलाधिकारी वि०/रा० राजेश कुमार, अपर जिलाधिकारी न्यायिक अमिताभ यादव, मुख्य विकास अधिकारी वेद प्रकाश मौर्य, अपर पुलिस अधीक्षक शिवराज, नगर मजिस्ट्रेट संदीप केला, समस्त उप जिलाधिकारी, क्षेत्राधिकारी पुलिस एवं शान्ति समिति के पदाधिकारी तथा अन्य गणमान्य लोग उपस्थित रहे।

थाना बबेरु की मिशन शक्ति टीम द्वारा के0जे0एम0 पब्लिक स्कूल बबेरु में शक्ति संवाद का किया गया आयोजन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

मुख्यमंत्री उ०प्र० शासन योगी आदित्यनाथ द्वारा महिला सुरक्षा एवं सशक्तीकरण हेतु चलाए जा रहे मिशन शक्ति अभियान के क्रम में पुलिस अधीक्षक बांदा अंकुर अग्रवाल के निर्देशन में नोडल अधिकारी/क्षेत्राधिकारी मिशन शक्ति अंबुजा त्रिवेदी के नेतृत्व में जनपद बांदा में सघन जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है इसी क्रम में मंगलवार 01 अक्टूबर 2024 को महिला थाना व थाना बबेरु की मिशन शक्ति टीम द्वारा ह्लशक्ति संवादह्व का आयोजन किया गया। क्षेत्राधिकारी अतर्रा प्रवीण कुमार यादव द्वारा मिशन शक्ति टीम के अब्दुल मजीद बाबा मेमोरियल स्कूल बदौसा में जागरुकता कार्यक्रम चलाया गया। कार्यक्रम में बालिकाओं को शासन द्वारा उनकी सुरक्षा एवं सशक्तीकरण हेतु चलाए जा रहे विभिन्न योजनाओं तथा कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी जा रही है। बालिकाओं/महिलाओं को मुख्यमंत्री हेल्पालाइन-1076, वीमेन हेल्पलाइन-1090, चाइल्ड केयर हेल्पलाइन, आपाताकालीन पुलिस सेवा- डायल यूपी 112 जैसी महत्वपूर्ण सेवाओं के बारे में जानकारी दी गई साथ ही प्रोजेक्टर के माध्यम से लघु फिल्मों का प्रसारण कर जागरुक किया गया। इस दौरान बालिकाओं को महिला अपराधों के साथ-साथ मुख्य रुप से साइबर अपराध के तरीकों तथा उनसे बचाव के उपायों के बारे में जानकारी दी गई। छात्राओं को बताया गया कि वर्तमान में साइबर अपराध के मामले काफी तेजी से बढ़ रहे हैं ऐसे में इन अपराधों के तरीकों के बारे में जागरुकता एवं बचाव सबसे महत्वपूर्ण है। बालिकाओं को बताया गया कि सोशल मीडिया पर व्यक्तिगत जानकारी साझा न करें साथ ही किसी अनजान वीडियो कॉल के न रिसीव करें। सोशल मीडिया एकाउंट्स पर टू-स्टेप वेरिफिकेशन अवश्य ऑन रखें। साथ ही बालिकाओं को उनकी सुरक्षा एवं सशक्तीकरण हेतु चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं एवं हेल्पलाइन नम्बरों के बारे में जानकारी दी गई। इसी क्रम थाना बबेरु की मिशन शक्ति टीम द्वारा के०जे०एम० पब्लिक स्कूल बबेरु में शक्ति संवाद का आयोजन कर छात्राओं को विभिन्न योजनाओं एवं हेल्पलाइन नम्बरों के बारे में जानकारी दी गई।

जसपुरा ब्लॉक की आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों ने डीएम बांदा व मंडलायुक्त को शिकायती पत्र सौंपा

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा जनपद में मंगलवार को जसपुरा ब्लॉक की आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों ने अपनी मांगो को लेकर जिलाधिकारी बांदा एवं मंडलायुक्त को शिकायती पत्र सौंपा। शिकायती पत्र में आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों ने सहायक बाल विकास परियोजना अधिकारी जसपुरा आरएस यादव को तत्काल जसपुरा ब्लॉक से हटाने की मांग की गई। बताया गया कि इससे पहले भी 02 सितंबर को आंगनवाड़ी कार्यकत्रियों ने जिलाधिकारी महोदय को शिकायती पत्र देकर सहायक परियोजना अधिकारी आरएस यादव को हटाने की मांग किया था लेकिन कोई कार्यवाही न होने पर आज दोबारा जिलाधिकारी बांदा और मंडलायुक्त की चौखट पर आई हैं। बताया गया कि जिला कार्यक्रम अधिकारी बांदा जांच करने व आगनवाड़ियो के बयान लेने भी जसपुरा बाल विकास कार्यालय गए थे सभी ने अपने बयान भी दर्ज कराए थे और एक सुर में आरएस यादव को जसपुरा ब्लॉक से हटाने का निवेदन मांग किया था। लेकिन हटने की बाद तो दूर उल्टे आरएस यादव आंगनवाड़ियों को व्हाट्सएप ग्रुप में धमका रहे हैं और डिलीट भी कर रहे हैं। सभी आंगनवाड़ियों ने आरएस यादव को तत्काल हटाने की मांग किया है। जिससे कि हमें मानसिक तनाव से मुक्ति मिले।

राष्ट्रीय बौद्ध महासभा धम्म दीक्षा समारोह नागपुर के प्रचार प्रसार के अंतर्गत प्रेस वार्ता का हुआ आयोजन

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

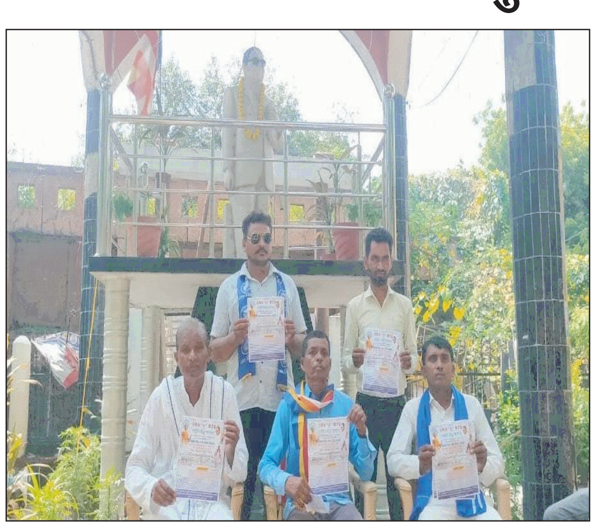

बांदा के नगर क्षेत्र अंतर्गत अंबेडकर पार्क में मंगलवार 01 अक्टूबर 2024 को राष्ट्रीय बौद्ध महासभा धम्य दीक्षा समारोह नागपुर के प्रचार-प्रसार के सम्बन्ध में प्रेस वार्ता की गयी। इस मौके पर सुखलाल बौद्ध जिलाध्यक्ष राष्ट्रीय बौद्ध महासभा बाँदा, संतोष वर्मा जिला संयोजक बाँदा, शिवबरन वर्मा पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, सुलतान प्रजापति, रामशरन वर्मा, मलखे श्रीवास पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, छेदीलाल वर्मा पूर्व प्रधान, लवलेश वर्मा, एडवोकेट रिंकी वर्मा आदि समस्त साथी उपस्थित रहे। सुखलाल बौद्ध ने कहा चक्रवर्ती अशोक सम्राट ने 304 ईसा पूर्व, 232 ईसा पूर्व में मौर्य समाज के संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के पोते व बिन्दुसार के पुत्र के रूप में सम्राट अशोक का जन्म 304 ई.पू. बिहार प्रान्त के पाटिलपुत्र पटना में हुआ था। सम्राट अशोक कलिंग युद्ध के पश्चात भयंकर विनाश और खून खराबा देखकर सम्राट अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ और तथागत बुद्ध की शिक्षा से प्रभावित होकर बौद्ध धर्म अपनाया। इसके बाद अशोक भारत और अन्य देशों में (पश्चिम एशिया मिश्र, भूटान, श्रीलंका, अफगानिस्तान) में भी बौद्ध धर्म का प्रचार प्रसार किया। यहाँ तक अपने पुत्र व पुत्री को श्रीलंका में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए भेजा। संतोष वर्मा ने कहा कि आर.बी.एम. के तत्वाधान में भरत में तथागत बौद्ध धम्म के प्रचार- प्रसार व नागपुर (महाराष्ट्र) दीक्षा भूमि में धम्म दीक्षा समारोज में सम्मिलित होने के लिए आवाहन किया है।

वार्षिक उत्सव के अवसर पर रक्तवीरों को रक्तवीर सम्मान से नवाजा गया

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा में सेवर्स ऑफ लाइफ के तत्वाधान में मंडपम मैरिज हॉल में वार्षिक उत्सव में रक्त वीरों का सम्मान समारोह 2024 संपन्न हुआ। उक्त कार्यक्रम में मुक्त अतिथि के रूप में मालती बासू गुप्ता अध्यक्ष नगर पालिका परिषद बांदा, विशिष्ट अतिथि राजेश कुमार वर्मा एडीएम वित्त एवं राजस्व बांदा, संदीप केला सिटी मजिस्ट्रेट बांदा, अनिल कुमार श्रीवास्तव मुख्य चिकित्सा अधिकारी बांदा उपस्थित रहें। कार्यक्रम की शुरूआत दीप प्रज्वलित कर एवं मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर की गई, जिसमें मुख्य अतिथि के साथ सभी अतिथियों डॉ० शबाना रफीक संरक्षक, शेख सादी जमा साहब संरक्षक, सलमान खान सुनील सक्सेना राजकुमार राज एवं सभी पदाधिकारी ने मिलकर किया। मौलाना सिद्दीक मेमोरियल पब्लिक स्कूल के बच्चों ने स्वागत गीत प्रस्तुत कर सभी का मन मोह लिया एवं रक्त दान के प्रति जागरूकता से संबंधित एक लघु नाटक का भी प्रस्तुतीकरण किया जिसको सभी ने सराहा। मुख्य अतिथि के भाषण के रूप में मालती बासू गुप्ता ने अपने संबोधन में सेवर्स ऑफ लाइफ के द्वारा किए जा रहे रक्तदान शिविरों, डेली रक्तदान कार्य की सराहना की एवं रक्त वीरों को जिन्होंने सेवर्स ऑफ लाइफ के साथ जुड़कर कई लोगों को रक्तदान कर महादान दिया है उन्हें बहुत- बहुत शुभकामनाएं दी। इसी क्रम में अपर जिलाधिकारी राजेश कुमार वर्मा ने सेवर्स ऑफ लाइव के द्वारा किए जा रहे कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की एवं उन्होंने बताया कि खुद फोन करके तीन बार संस्था के माध्यम से वे रक्त ले चुके हैं। वही मुख्य चिकित्साअधिकारी अनिल कुमार श्रीवास्तव ने अपने संबोधन में कहा कि उनको यहां आए हुए 04 वर्ष हो गए हैं और इस संस्था भी 04 वर्षो से मानव हित के कार्य कर रही है और मैं चार वर्षो से इनको निरंतर देख रहा हूं। उनके कार्यों को देखते हुए मुझे अपार खुशी हो रही है कि यह लोग मानवहित के लिए निरंतर प्रतिदिन इस कार्य को अंजाम देते हैं मैं उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता हूं। वहीं संस्था की संरक्षक डॉक्टर शबाना रफीक ने संस्था के सभी पदाधिकारी और रक्तवीरों को हृदय से आशीर्वाद दिया और निरंतर इस कार्य को करने की सलाह दी ताकि मानव का जीवन बच सके। सभी अतिथियों के द्वारा एवं सेवर्स ऑफ लाइफ परिवार ने सभी रक्तवीरों को मोमेंटो, माला एवं शाल भेंट कर सभी का सम्मान किया। कार्यक्रम में संरक्षक सादी जमा साहब, चंदमौली भारद्वाज, अध्यक्ष सलमान खान, सलाहकार मीडिया प्रभारी सुनील सक्सेना, राजकुमार राज, अमित सेठ भोलू, योग गुरु प्रकाश साहू जी, रिजवान अली, डॉ० प्रदीप सिंह, डॉ० नीलम सिंह, मनोज जैन, मनीष श्रीवास्तव, संजय गुप्ता, नरेंद्र सिंह, कनक ध्वज सिंह, आलोक सिंह, भानु प्रताप सिंह मनतसा कातिव, सुनीता गुप्ता, बसंत गुप्ता, पुनीत त्रिवेदी, इमरान अली, शादाब अहमद, अंसार अहमद, अजहर अहमद, मोहम्मद अजहर, अशफाक अहमद, अभय सिंह, जीशान उल हक, सलमान खान, रजत सक्सेना, आदित्य मिश्रा, रियाज अहमद, शुभम मिश्रा, आसिफ अंसारी, मौलाना उमैर, रिजवान अली, मिथुन पुरुश्वनी, शुभम पुरुषवानी, शादाब अहमद, जावेद खान, आसिम अल्वी, मयंक धुरिया, अवकेश गुप्ता, आदि इस रक्तवीर सम्मान समारोह में उपस्थित रहें। कार्यक्रम का सफल संचालन सुप्रसिद्ध उद्घोषक जी म्यूजिकल इवेंट संजय ककोनिया ने किया, संजय काकोनिया को भी संस्था के द्वारा रक्तवीर सम्मान से नवाजा गया।

संचारी रोग से बचाव कार्यक्रम में डीएम ने रैली को दिखाई हरी झंडी

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

संचारी रोग नियंत्रण एवं दस्तक अभियान का उद्घाटन जिलाधिकारी नगेन्द्र प्रताप बांदा ने कलेक्ट्रेट परिसर में छात्रों, समस्त स्टाफ एवं आशाओं को संचारी रोगो से बचाव की शपथ दिलाकर व रैली को हरी झण्डी दिखाकर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। बताया गया कि यह अभियान 01 अक्टूबर 2024 से 31 अक्टूबर 2024 तक चलाया जायेगा। जिलाधिकारी ने बताया कि संचारी रोग यथा मलेरिया, फाइलेरिया, डेगू, टी0बी0, कुष्ठ, डायरिया आदि वायरस या बैक्टीरिया के कारण होने वाली बीमारियाँ है। यह रोग मच्छर, मक्खी, पशुओ एवं गंदगी के कारण फैलते है। जिन स्थानों पर जल जमाव, गंदगी, एवं कूडा जमा रहता है एवं साफ पानी पीने की लिये उपलब्ध नहीं होता है ऐसे स्थानों पर संचारी रोग फैलने की सम्भावना अधिक होती है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डा० अनिल कुमार श्रीवास्तव द्वारा बताया गया कि संचारी रोगों से बचाव हेतु 13 सहयोगी विभागों द्वारा अभियान के अन्तर्गत समस्त जनमानस को रोगों से बचाव हेतु जागरूक करना, कूडा निस्तारण, नालियों की सफाई, स्वच्छ जल की उपलब्धता, खुले में शौच न करना, शौच के बाद व खाना खाने से पहले साबुन से हाथ धोना, जल जमाव की परिस्थिति को समाप्त करना, घरेलू पात्रों में एक सप्ताह से अधिक पानी एकत्रित न होने देना, नियमित साफ सफाई करना, घर वा घर के आस पास तथा नालियों से गंदगी एवं झाडी को हटाना , इण्डिया मार्का हैण्ड पम्प का पानी पीने के लियें प्रयोग करना, यदि साफ पानी उपलब्ध न हो तो, पानी को उबालकर प्रयोग करने के बारे में जागरूक करना, प्रचार-प्रसार एवं व्यवहार परिवर्तन की गतिविधियां करना, शहरी क्षेत्रों में फॉगिंग करवाना, क्लोरिनेशन डेमों, पेयजल उबालना के विषय में जागरूक करना, कृंतक (चूहा, छछूदर) नियंत्रण के प्रभावी एवं सुरक्षित उपाय बताना, पॉच साल से कम उम्र के बच्चो वाले घरों में आशा द्वारा ओ०आर०एस० एवं जिंक का वितरण करना आदि निरोधात्म्क कार्यवाही की जायेंगी। दस्तक अभियान जो कि दिनांक 11 अक्टूबर 2024 से 31 अक्टूबर 2024 तक चलेगा, जिसमें घर-घर भ्रमण के दौरान आशा एवं आंगनवाडी कार्यकत्रियों द्वारा घरों पर स्टीकर लगाये जायेगें, क्षय रोग (टी०बी०) के रोगियों का चिन्हिकरण कर लाइन लिस्ट बनायेगी, घरों पर जाकर मच्छरों के पैदा होने वाली परिस्थितियों का निरीक्षण करना, बुखार के केस चिन्हित कर उनकी लाइन लिस्ट तैयार करना, बुखार के रोगियो को निकटतम चिकित्सालय पर सन्दर्भित करना, आई0 एल0 आई0 (इन्फ्लुएंजा लाई इलनेस) रोगियों एवं कुपोषित बच्चों की सूची बनायेगी साथ ही प्रत्येक घर पर जा कर समस्त जन मानस की आभा आई०डी० बनाकर उपलब्ध करायेगी। कार्यक्रम में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० अनिल कुमार श्रीवास्तव, समस्त अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डा० आर०एन० प्रसाद, डा० अजय कुमार, उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा० मुकेश पहाडी, जिला मलेरिया अधिकारी पूजा अहिरवार, सहायक, मलेरिया अधिकारी बिजय बहादुर, डी०एम०सी० अवन्तिका तिवारी, जिला वेक्टर जनित रोग सलाहकार प्रदीप कुमार, बायोलॉजिस्ट अतुल कुमार, समस्त मलेरिया एवं फाइलेरिया निरीक्षक एव समस्त स्टाफ राजकीय इण्टर कालेज बांदा से छात्र, अर्बन आशाओं एवं मलेरिया विभाग के समस्त कर्मचारियों द्वारा रैली में प्रतिभाग किया गया। दूर हो संचारी रोग, यदि मिले आप का सहयोग

कई दिनों पुराने गौवंश के शव, नही ध्यान देता कोई जिम्मेदार

संस्कार उजाला ब्यूरो बांदा

बांदा की ग्राम पंचायत बदौसा से संचालित अस्थाई गौशाला में दो गोवंश मृत मिले तथा एक गोवंश बीमार अवस्था में मिले। जहां पर गोवंश को अंतिम संस्कार के लिए गड्ढा खोदा गया है वहां पर गोवंश को गड्ढे में फेंक दिया गया लेकिन ऊपर से मिट्टी नहीं डाली गई तो गोवंश को कुत्ते अपना भोजन बना रहे हैं। यह सारी जानकारी गौ रक्षा समिति के द्वारा प्रदान की गई। मंगलवार को विश्व हिंदू महासंघ गौ रक्षा समिति के जिलाध्यक्ष महेश कुमार प्रजापति ने अपनी टीम के साथ बदौसा में संचालित अस्थाई गौशाला में जाकर देखा कि गौशाला के हालात देखकर ऐसा लग रहा था कि कोई यहां पर गोवंशों के साथ अमानवीय व्यवहार कर रहा है। ऐसा प्रतीत हो रहा है कि गोवंशों को सिर्फ दिखावे के लिए गौशाला में रखा गया है और मौके में ग्राम प्रधान को बुलाया गया और उनसे पूछा गया कि जय गोवंश कब से मृत पड़े हुए हैं लेकिन ग्राम प्रधान ने बताया कि आज के ही हैं लेकिन उनके कर्मचारियों ने बताया कि कल के गोवंश मृत पड़े हुए हैं कोई उठाने वाला नहीं है। इस दौरान ग्राम प्रधान ने पशु डॉक्टर के ऊपर आरोप लगाया कि पशु डॉक्टर गौशाला की डिमांड नहीं लगा रहा और कह रहा है कि अगर 33% मुझे कमीशन नहीं देते हो तो मैं आपकी डिमांड नहीं लगाऊंगा। उक्त आरोप ग्राम प्रधान के द्वारा लगाया गया। वहीं बिसंडा ब्लाक के अंतर्गत ग्राम पंचायत गाडाव संचालित अस्थाई गौशाला में देखा गया कि गोवंश कीचड़ में फंसे हुए थे जिसको कर्मचारियों द्वारा पूछा गया कि यह हालात कैसे हैं उन्होंने बताया कि यहां जिम्मेदार अधिकारी कभी- कभी आते हैं और डॉक्टर भी कभी-कभी आते हैं एक गोवंश बीमार अवस्था में मिला। इस मौके पर शिव शंकर द्विवेदी, महेंद्र सिंह आदि लोगों उपस्थित रहे।

आरटीओ गाजियाबाद ने फहराया ग्वाटेमाला में साहित्य और संस्कृति का परचम ,ग्वाटेमाला, होंडुरास और अल सल्वाडोर (मध्य अमेरिका) के संयुक्त भारतीय दूतावास में 24 सितंबर को प्रवासी भारतीय समुदाय के बीच आयोजित

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

हिंदी भाषा: हमारी पहचान३ विषयक कार्यक्रम में आरटीओ गाजियाबाद के.डी.सिंह गौर, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि और मुख्य वक्ता के रूप में सम्मिलित हुए। कार्यक्रम के आयोजक भारतीय राजदूत डा.मनोज महापात्र की अध्यक्षता में संपन्न इस कार्यक्रम में आरटीओ के.डी.सिंह गौर द्वारा भारत की राष्ट्रभाषा हिंदी पर सारगर्भित विचार रखे गए। आरटीओ के.डी.सिंह गौर ने बताया कि उपस्थित प्रवासी भारतीय समुदाय में अपनी भाषा हिंदी को लेकर रुचि और उत्साह, सुखद और आश्वस्त करने वाला था। भारत के विभिन्न प्रांतों से आकर ग्वाटेमाला में रह रहे, काम कर रहे भारतीयों को एक भाषा सूत्र में बंधे होने का अहसास ही उन्हे यहां अपनी अलग पहचान और सामुदायिकता का बोध कराता है। उक्त कार्यक्रम में, विगत 24 सितंबर को दूतावास द्वारा आयोजित हिंदी भाषी और अहिंदी भाषी प्रवासी भारतीयों के लिए निबंध, कविता, एवं अन्य प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय और तृतीय पुरस्कार प्राप्त प्रतियोगियों को सिंह द्वारा पुरस्कार वितरण भी किया गया। कार्यक्रम के बाद एवं मनोज महापात्र ने के डी सिंह गौर तथा उनकी धर्मपत्नी प्रियंका सिंह के सम्मान में एक प्रीतिभोज का आयोजन किया, जिसमे ग्वाटेमाला के सभी सम्मानित प्रवासी भारतीय उद्योगपति, साहित्यकार, कलाकार, कवि और लेखक गण उपस्थित थे। भारतीय साहित्य और संस्कृति के प्रसार की इस कड़ी में 25 सितंबर को ग्वाटेमाला की 348 साल पुरानी यूनिवर्सिटी सैन कार्लोस डी ग्वाटेमाला में विश्विद्यालय के छात्रों के बीच भारतीय भाषाएं, साहित्य और संस्कृति : वैश्विक परिदृश्य विषय पर आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में श्री सिंह का अकादमिक व्याख्यान हुआ, जिसमे विश्विद्यालय प्रबंधन, विभागाध्यक्ष और भारतीय दूतावास के अधिकारियों के साथ बड़ी संख्या में छात्र छात्राओं की उपस्थिति रही।

सोनभद्र में आयोजित मलखम्भ प्रतियोगिता का किया गया समापन।

संस्कार उजाला

अरविंद गुप्ता ब्यूरो चीफ सोनभद्र।

सोनभद्र । उ0प्र0 वार्षिक खेलकूद-2024 में निर्धारित खेलकूद के अनुसार अपर पुलिस महानिदेशक, अध्यक्ष जोनल खेलकूद समिति वाराणसी जोन के अनुमोदनोपरान्त वाराणसी जोन की अन्तर जनपदीय मलखम्भ प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 30.09.2024 से 01.10.2024 तक जनपद सोनभद्र के पुलिस लाइन में सम्पन्न करायी जानी थी। उपरोक्त आयोजित मलखम्भ प्रतियोगिता का उद्घाटन पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अशोक कुमार मीणा द्वारा दिनांक 30.09.2024 को किया गया । जिसका समापन आज दिनांक 01.10.2024 को हुआ ।इस प्रतियोगिता में वाराणसी जोन के 10 टीमों को प्रतिभाग करना था। जिसमें जनपद सोनभद्र, गाजीपुर, भदोही एवं आजमगढ़ की टीमों ने प्रतिभाग किया। अपरिहार्य कारणों से जनपद मीरजापुर, बलिया, जौनपुर, मऊ, चन्दौली, एवं वाराणसी की टीमें प्रतिभाग नही कर सकी। प्रतियोगिता में प्रतिभाग करने वाली सभी टीमों द्वारा खेल भावना तथा सौहार्दपूर्ण माहौल में अनुशासित रहते हुए अपने खेल का प्रदर्शन किया गया । प्रतियोगिता मे सामूहिक टीम में जनपद सोनभद्र द्वारा सर्वाधिक 83 अंक के साथ प्रथम स्थान प्राप्त किया गया जबकि जनपद आजमगढ़ की टीम ने 33 अंक के साथ द्वितीय स्थान प्राप्त किया ।इस दौरान अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय द्वारा पुलिस अधीक्षक सोनभद्र श्री अशोक कुमार मीणा को स्मृति चिन्ह प्रदान किया गया । समापन समारोह में पुलिस अधीक्षक सोनभद्र द्वारा विजेता टीम सोनभद्र को विजेता शील्ड दी गयी तथा प्रतियोगिता में आरक्षी सूरज यादव जनपद सोनभद्र की तरफ से सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन कर सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी का पुरस्कार प्राप्त किये साथ ही साथ प्रतिभाग करने वाली अन्य टीमों को भी पुरस्कृत करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया गया । इस मौके पर अपर पुलिस अधीक्षक (मुख्यालय) सोनभद्र श्री कालू सिंह, क्षेत्राधिकारी सदर श्री संजीव कटियार, क्षेत्राधिकारी पिपरी अमित कुमार, प्रशिक्षु क्षेत्राधिकारी राज सोनकर, प्रतिसार निरीक्षक मु0 नदीम सहित अन्य अधिकारी एवं कर्मचारीगण मौजूद रहे ।

जनपदीय कानून/सुरक्षा व्यवस्था के दृष्टिगत वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक इटावा के निर्देशन में समस्त थाना प्रभारी/थानाध्यक्षों द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्र अंतर्गत पैदल गस्त एवं संदिग्ध व्यक्ति/ वाहन चेकिंग की गयी ।

संस्कार उजाला

विशेष संवाददाता मनोज पाठक इटावा

जनपद की कानून व्यवस्था/ सुरक्षा व्यवस्था को प्रभावी तथा सुदृढ़ बनाए रखने हेतु वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक इटावा श्री संजय कुमार के निर्देशन में आज दिनांक 01.10.2024 को जनपद के समस्त थानाध्यक्ष/ थाना प्रभारियों द्वारा अपने-अपने थाना क्षेत्र में पुलिस बल के साथ आबादी वाले क्षेत्रों, चौराहों, बाजारों एवं भीड़भाड़ वाले स्थानों पर पैदल गस्त एवं संदिग्ध व्यक्ति/ वाहन चेकिंग करते हुए आम लोगों से संवाद किया गया एवं उनको सुरक्षा के प्रति आश्वस्त किया गया ।

बिजली विभाग के अवर अभियंता एसके पाल को एंटी करप्शन टीम रंगे हाथों घूस लेते पकड़ा

संस्कार उजाला

सीतापुर राकेश पाण्डेय। बिजली विभाग के अवर अभियंता एसके पाल को हुसैनगंज पावर हाउस में एन्टी करप्शन टीम ने एस के पाल नामक अवर अभियंता को उस समय रंगे हाथों घूस लेते दबोच लिया जब वह एक किसान से घूस के पैसे ले रहे थे। बताया जाता है इसके पहले भी उपेंद्र कुमार पाण्डे नामक व्यक्ति ने जिला अधिकारी सीतापुर को अवगत कराया था कि एस के पाल अवर अभियंता किसानों को बिजली कनेक्शन देने के लिए बगैर घूस लिए सामग्री नहीं देते हैं इस बात की लिखित रूप से शिकायत पांडे जी के द्वारा पूर्व में की गई थी आज पुनः एक किसान जब अपने बिजली कनेक्शन का सामान लेने आया था और उससे घूस के पैसे लेकर गिन रहे थे उसी बीच एंटी करप्शन टीम ने एस के पाल अवर अभियंता विद्युत वितरण खंड को रंगे हाथों घूस लेते पकड़ लिया तथा उनको अपने साथ लेकर चले गये गए जहां पर उनके विरुद्ध विधिक प्रक्रिया की कार्रवाई चल रही है।

स्वच्छता ही सेवा - स्वभाव एवं संस्कार का हिस्सा होना चाहिए : अजीतपाल त्यागी

संस्कार उजाला

स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत ' स्वच्छता ही सेवा' कार्यक्रम का आयोजन न्यू लाइट शिक्षा समिति तथा नेहरू युवा केंद्र गाजियाबाद के तत्वाधान में राजनगर एक्सटेंशन के राज नगर रेजिडेंसी आयोजित किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री अजीत पाल त्यागी, माननीय विधायक मुरादनगर ने किया ने दीप जलाकर किया । श्रीमती निधि शर्मा ने पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया। कार्यक्रम में सभी युवाओं तथा सफाई सवायनसेवको को संबोधित करते हुए माननीय विधायक जी ने कहा कि यदि हम सभी सफाई को अपने स्वभाव और संस्कार में ग्रहण कर ले तो हमें सफाई कर्मचारियों पर ज्यादा पैसा खर्च नहीं करना पड़ेगा और सभी सड़कों रोड़ों तथा सार्वजनिक स्थानों की सफाई सुनिश्चित की जा सकेगी। उन्होंने पॉलिथीन को समाज एवं पर्यावरण के किया अभिशाप बताया । इस अवसर पर नेहरू युवा केंद्र, गाजियाबाद के उपनिदेशक श्री देवेंद्र कुमार ने सभी युवाओं को संबोधित करते हुए बताया कि गांधी जी ने जो सपना स्वतंत्रता का देखा था उसके साथ-साथ ही उन्होंने भारत को एक स्वच्छ भारत के रूप में प्रस्तुत करने का निश्चय किया था। स्वतंत्रता तो हमने प्राप्त कर ली लेकिन स्वच्छता के विषय में अभी स्वच्छता पर और काम करने की आवश्यकता है ताकि हम विश्व में स्वच्छता के लिए मेरिट में आ सकें। न्यू लाइट शिक्षा समिति की अध्यक्ष श्रीमती निधि शर्मा ने सभी महिलाओं तथा लड़कियों से आग्रह किया की कोई भी सामान पॉलिथीन में ना खरीदें और जब भी कोई कुछ खरीदने जाए तो हमें अपने थैली का उपयोग करना चाहिए ताकि हम सिंगल यूज प्लास्टिक को जड़ से खत्म करने में अहम भूमिका निभा सकें। कार्यक्रम का संचालन श्रीमती दुर्गेश शर्मा अध्यक्ष महिला उन्नति प्रशिक्षण संस्थान, मुरादनगर ने किया। इस जगन्नाथ कैंसर हॉस्पिटल के द्वारा स्वास्थ्य कैंप का आयोजन भी किया गया जिसमें दर्शकों ने स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्राप्त की तथा कुछ लोगों ने रक्त का परीक्षण भी कराया। छोटे-छोटे बच्चों ने इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम कर सबका ध्यान अपनी और आकर्षित किया तथा कुछ बच्चों ने स्वच्छता के ऊपर अपने विचार व्यक्त किया और अपने गाने के माध्यम से स्वच्छता को अपनाने का आह्वान किया । कार्यक्रम के अंत में न्यू लाइट शिक्षा समिति के उपाध्यक्ष श्री संदीप कुमार शर्मा ने सभी अतिथियों एवं बच्चों को ट्रॉफी देकर सम्मानित किया। कार्यक्रम में नेहरू युवा केंद्र के पूर्व राष्ट्रीय युवा स्वयंसेवक तालिब तथा आशीष गुंजन शर्मा प्रकाश तिवारी ने भाग लिया प्रेषक: देवेंद्र कुमार उपनिदेशक नेहरू युवा केंद्र गाजियाबाद युवा कार्यक्रम एवं खेल मंत्रालय, भारत सरकार

युवा केन्द्र गाजियाबाद में अनुरक्षण कार्यों के एस्टीमेट / प्रस्ताव के मूल्यांकन एवं औचित्य परीक्षण समिति की बैठक आहूत

संस्कार उजाला

गाजियाबाद। युवा कल्याण विभाग गाजियाबाद के अन्तर्गत स्थापित युवा केन्द्र गाजियाबाद में अनुरक्षण कार्यों हेतु अधिशासी अभियन्ता ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग गाजियाबाद के द्वारा प्रस्तुत रू0 65.55 लाख के प्रांकलन/ प्रस्ताव के परीक्षण हेतु जिलाधिकारी महोदय गाजियाबाद की अध्यक्षता में गठित मूल्यांकन एवं औचित्य परीक्षण समिति की बैठक का आयोजन कलक्ट्रेट सभागार में किया गया, जिसमें मुख्य विकास अधिकारी महोदय गाजियाबाद, अधिशासी अभियन्ता लोक निर्माण विभाग एवं ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग तथा जिला युवा कल्याण अधिकारी द्वारा प्रतिभाग किया गया। अधिशासी अभियन्ता ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग गाजियाबाद द्वारा प्रस्तुत प्रांकलन का परीक्षण समिति द्वारा किया गया, जिसमें पाया गया कि जिम परिसर में इन्टरलॉकिंग कार्य के बजाए युवा केन्द्र की बाउण्ड्रीवाल का कार्य कराया जाना अधिक औचित्यपूर्ण है। जिलाधिकारी महोदय गाजियाबाद द्वारा अधिशासी अभियन्ता ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग गाजियाबाद को संशोधित एस्टीमेट तैयार कर प्रस्तुत करने एवं एस्टीमेट का परीक्षण लोक निर्माण विभाग से कराकर प्रस्तुत करने के निर्देश दिये गये।

मैं प्यासे खेतों तक पानी पहुंचाना चाहता हूं : प्रो छत्रपाल सिंह

आम आदमी पार्टी करेगी अपने वादों को पूरा: प्रो छत्रपाल सिंह

संस्कार उजाला

हरियाणा/हिसार (गरिमा) : जन आशीर्वाद कार्यक्रमों के तहत सोमवार को आम आदमी पार्टी से बरवाला हल्के के उम्मीदवार प्रो छत्रपाल सिंह जी गांव मिर्का, तलवंडी राणा, सतरोड़ कैंट, सतरोड़ खास और मिलगेट में जन मानस से वातार्लाप करने पहुंचे। प्रो साहब के साथ पंजाब सरकार में मंत्री इंदरबीर सिंह जी और पार्टी की स्टार प्रचारक अनु कादियान विशेष तौर पर पहुंची। विभिन्न कार्यक्रमों में आम आदमी पार्टी की स्टार प्रचारक अनु कादियान ने अपने संबोधन में कहा की अब समय बदलाव का आ गया है। ऐसे में ये बदलाव केवल आपका वोट ही ' सकता है। उन्होंने कहा कि जिस तरह आम आदमी पार्टी ने दिल्ली और पंजाब की जनता का दिल जीता है, उन्हें सभी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध करवाई हैं। उसी तरह अब आम आदमी पार्टी हरियाणा में भी काम करना चाहती है। अगर आप प्रो छत्रपाल सिंह को वोट देते है तो हम आपके वोट को जाया नही होने देंगे। प्रो छत्रपाल सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि आम आदमी के वोट में इतनी ताकत है कि वो सरकारें हिला सकता है। मैं चाहता हूं कि आपका एक एक वोट ईमानदार और सशक्त उम्मीदवार को मिले और आपका वोट ये हुंकार भर दे कि जो काम करेगा उसे ही जानता का समर्थन मिलेगा। प्रो साहब ने कहा कि अगर आप काम करने वाले व्यक्ति को चुनेंगे तो हर नेता ये सोचने पर मजबूर हो जायेगा कि हमें काम करना चाहिए नही तो जनता बाहर का रास्ता दिखाना भी जानती है। उन्होंने कहा की आपका वोट अमूल्य है इसकी कोई कीमत नहीं लगाई जा सकती। आपके वोट का कर्जा सिर्फ पूरे पांच साल आपकी सेवा करके चुकाया जा सकता है। मेरी दिली इच्छा है कि मेरे हल्के का विकास हो, इसके प्यासे खेतों को पानी मिले। लोगो को सभी सुविधाएं मिले। साफ सुथरा वातावरण हो। प्रो साहब के संबोधन ने सबके दिलो में ऐसी जगह बनाई की पूरा पंडाल तालियों से गूंज उठा। आम जनता से मिले आपार स्नेह ने प्रो छत्रपाल सिंह को भी भावुक कर दिया । इस मौके पर अशोक पुत्र सूरजभान, सरपंच प्रतिनिधि राशीराम मोलिया, राम सिंह फौजी, लखमी चांद चोपड़ा, शीशपाल ग्रोवर, नरेश भगाना, विक्रम गोरसी, विनोद चेची, तुलसी भाटिया, प्रकाश, प्रताप सिघाना, पूर्ण सिंह गुरी और सुनी पोसवाल इत्यादि विशेष तौर से उपस्थित रहे।

संक्षिप्त डायरी

हरी झण्डी दिखाकर संचारी रोग अभियान रैली का मुख्य विकास अधिकारी ने किया शुभारम्भ।

संस्कार उजाला

ब्यूरो चीफ सोनभद्र अरविन्द गुप्ता।

रावर्टसगंज/सोनभद्र।

विशेष संचारी रोग नियंत्रण अभियान एवं दस्तक अभियान के तृतीय चरण के सफल संचालन हेतु संचारी रोग अभियान का शुभारम्भ मुख्य विकास अधिकारी जागृति अवस्थी व मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ0 अश्वनी कुमार द्वारा संयुक्त रूप से मुख्य चिकित्सा अधिकारी कैम्पस से हरी झण्डी दिखाकर किया गया। रैली में स्वास्थ विभाग से समस्त अपरध्उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी, नगरीय प्रा०स्वा०केन्द्र की समस्त आशा, ए०एन०एम० व समस्त कर्मचारी, कार्यालय जिला मलेरिया अधिकारी के समस्त अधिकारी कर्मचारी, बाल विकास पुष्टहार विभाग की नगरीय आंगनबाडी, नगर पालिका के समस्त सफाई कर्मी, अधिशासी अधिकारी, इत्यादि उपस्थित रहे। दिनांकः 01-31 अक्टूबर, 2024 तक संचारी अभियान तथा दिनांकः 11-31 अक्टूबर, 2024 तक दस्तक अभियान चलाया जायेगा। इसी क्रम में पूर्वान्ह 11रू30 बजे से कलेक्टेट सभागार मे संचारी अभियान की द्वितीय अन्तर्विभागीय बैठक मुख्य विकास अधिकारी महोदया की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। नवीन घटक के रूप में आशा द्वारा नान कम्युनिकेबल डिजीज के 30 वर्ष के ऊपर के 5 पात्र व्यक्तियों को चिन्हित करते हुए सी बैंक फार्म पूर्ण किया जायेगा। साथ ही ई-कवच पोर्टल पर रोगियों की लिस्ट अपडेट की जायेगी, रैली के माध्यम से नगर वासियों को संक्रामक रोग से बचने हेतु जागरूक किया गया।

कोन क्षेत्र में दो सगे भाईयों ने किया क्षेत्र का नाम रौशन, लोगों में खुशी की लहर।

क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।

कोन /सोनभद्र- कोन थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत पीपरखाड़ के टोला केवाल निवासी अलखनारायण शुक्ला भाजपा नेता के दो बेटों का चयन क्रमशः मेडिकल व इंजीयरिंग में हुआ। इनके चयन से क्षेत्रों में खुशी की लहर है। इसी क्रम में बतातें चलें कि अलख नारायण शुक्ला के दो बेटे धीरज शुक्ला व शिवगंगा शुक्ला का चयन क्रमशः आईआईटी कानपुर में मैकेनिकल इंजीनियरिंग व दूसरे बेटे शिवगंगा शुक्ला का चयन नीट के तहत एमबीबीएस चंदौली में हुआ। इनके चयन की खबर से परिजनों समेत पूरे क्षेत्र में खुशी का माहौल देखा जा रहा है। क्षेत्र के वरिष्ठ समाजसेवी डॉक्टर जगदीश प्रसाद शर्मा व संतोष जायसवाल ने कहा कि क्षेत्र में योग्य डॉक्टर की बहुत कमी है जिससे इन छात्रों के चयन से क्षेत्र में खुशी की लहर के साथ साथ ऐसे लड़कों पर गर्व है और आज समूचा क्षेत्र खुशी से झूम उठा। वहीं दूसरी ओर इन छात्रों के कामयाबी पर लोगों का बधाई देने का तांता लगा रहा।

बाइक सवार ने पुलिया में मारा जोरदार टक्कर एक के मौके पर मौत दो गंभीर रूप से घायल एक को मामूली लगी चोट।

संस्कार उजाला

क्राईम ब्यूरो विकास कुमार हलचल।

सोनभद्र। चोपन थाना क्षेत्र के गुरमुरा क्षेत्र में एक बाइक की पुलिया से जबरदस्त भिड़ंत हो गई। हादसे में बाइक सवार चार युवकों में से एक की मौके पर ही मौत हो गई। जबकि एक को मामूली चोट और दो युवक गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल बाइक सवार युवकों को एसीपी टोल प्लाजा की एंबुलेंस से चोपन अस्पताल पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों की देख रेख में इलाज चलने के बाद अन्य दो घायलों को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। वही मौके पर पहुंची पुलिस ने मृत युवक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और अग्रिम विधिक कार्रवाई में जुट गई। मिली जानकारी अनुसार बीती रात करीब 2:00 बजे एक बाइक पर चार युवक सवार होकर चोपन बाजार से हाथीनाला की तरफ जा रहे थे कि गुरमुरा बाजार से करीब 500 मीटर आगे वाराणसी-शक्तिनगर मार्ग के किनारे पुलिया में बाइक अनियंत्रित होकर टकरा गई। बाइक की जबरदस्त टक्कर हो जाने से बाइक पर सवार प्रभात गुप्ता (21) पुत्र मुन्ना गुप्ता निवासी चोपन गांव की मौके पर ही मौत हो गई है। बाइक पर सवार अन्य तीन घायल युवकों को एसीपी टोल प्लाजा की एंबुलेंस द्वारा सीएचसी चोपन भेजा गया। जहां से प्राथमिक इलाज के बाद धीरज निषाद (21) पुत्र रामसेवक को मामूली चोट आने पर डिस्चार्ज कर दिया गया। जबकि सर और अंदरूनी चोट आने की वजह से दो युवकों करण निषाद (18) पुत्र गुलजार निषाद और संतोष गौड़ (18) पुत्र कमलेश गौड़ की गंभीर स्थिति को देखते हुए बेहतर इलाज के लिए जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। घटना के संबंध में पुलिस द्वारा मृतक व घायलों के परिजनों को सूचना दे दी गई। जिसके बाद अस्पताल में परिजनों और शुभचिंतकों की भीड़ जमा हो गई। वही चोपन पुलिस द्वारा शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया और अग्रिम विधिक कार्रवाई में पुलिस जुट गई।

गाजियाबाद से सुप्रसिद्ध डॉक्टर मिलिंद गौतम ने 10 किलो की पेट की गांठ का किया सफल ऑपरेशन

संस्कार उजाला

गाजियाबाद संवाददाता कपिल शर्मा

गाजियाबाद के सुप्रसिद्ध डॉक्टर मिलिंद गौतम ने लक्ष्मी नाम की पेटेंट जिसकी उम्र 45 वर्ष है फरुखनगर की रहने वाली पेट की गांड से पीड़ित थी यूरिन तथा खाने के रास्ते में बहुत परेशानी हो रही थी तभी परेशान पीड़ित महिला तुरंत डॉक्टर मिलिंद गौतम के पास पहुंची तभी डॉक्टर ने अपनी पूरी टीम के साथ मिलकर जिसमें डॉ माधुरी डॉ संदीप डॉ अर्शना जय किशन और राहुल इस टीम द्वारा लक्ष्मी पेशेंट का 10 किलो की पेट की गांठ का सफल ऑपरेशन किया गया इसी के चलते ही सभी ने डॉक्टर मिलिंद गौतम को और उनकी पूरी टीम को बहुत-बहुत हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई और पेशेंट लक्ष्मी ने भी डॉक्टर का तहे दिल से बहुत-बहुत धन्यवाद किया

संक्षिप्त डायरी

हनुमान सेना राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव चौधरी 9 अध्यापकों की शैक्षिक शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारीओ पर कार्यवाही की मांग

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

इंग्राम इंटर कॉलेज गाजियाबाद में प्रधानाचार्य सहित 9 अध्यापकों की शैक्षिक योग्यताएं संध्यात्मक जांच में पाई हनुमान सेना राष्ट्रीय अध्यक्ष शिव चौधरी इन सभी की जांच संयुक्त शिक्षा निदेशक प्रथम मंडल मेरठ के द्वारा सह जिला विद्यालय निरीक्षक गाजियाबाद से पत्रांक जांच 9005-06/2022-23 दिनांक 9 दिसंबर 2022 को जांच आख्या के अनुसार जांच 10 बिंदुओं पर की गई है। जिसमें साफ-साफ शब्दों में बताया गया है कि प्रधानाचार्य अध्यनरत छात्रों से द्वेषपूर्ण व्यवहार करते हैं इन सभी की शैक्षिक योग्यताएं संदेहात्मक पाई गई हैं।आख्या में दशार्या गया है कि उपरोक्त वर्णित तथ्यों के आधार पर विद्यालय की प्रबंधन समिति के विरुद्ध उत्तर प्रदेश शिक्षा अधिनियम 1921 व वेतन वितरण अधिनियम 1971 में विहित प्राविधानों के अनुसार कार्यवाही किया जाना उचित होगा। विद्यालय का शैक्षिक वातारण सुद्रण नहीं है संस्थाहित छात्रहित विद्यालय का शैक्षिक वातारण सुद्रण किए जाने हेतु ठोस कार्यवाही किए जाने की अति आवश्यकता है। और इन सभी की शिकायत गाजियाबाद पुलिस में भी कशिव चौधरी ने बताया की GRS के माध्यम से कराई गई। जांच पुलिस उपायुक्त नगर कमिश्नरेट गाजियाबाद और उपनिरिक्षक थाना कवि नगर विनीत चौधरी गाजियाबाद ने भी आख्या में कार्यवाही शिक्षा विभाग के द्वारा होना दशार्या गया है। प्रतीत होता है कि शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारी इन सभी को निजी लाभ लेकर बचाते चले आ रहे हैं। जांच हुए लगभग 22 महीने हो चुके हैं।इसके बावजूद भी विद्यालय प्रशासन पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गई है। हजारों बच्चों के भविष्य के साथ शिक्षा विभाग खिलवाड़ कर रहा है। सभी साक्ष्यओ को संज्ञान में लेते हुए दोषियों पर कानूनी कार्यवाही की जाए इन सभी की सैलरी पर रोक लगाई जाए जितना पैसा सैलरी के रूप में सरकार से लिया है पूरे पैसे की रिकवरी की जाए।22 महीने से उत्तर प्रदेश सरकार और जिला शासन प्रशासन को हनुमान सेना के द्वारा समय-समय पर लिखित रूप में शिकायत भेजी जाती रही हैं। इसके बावजूद भी शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों ने आज तक कोई कार्यवाही नहीं की है। अध्यापकों को बचाने वाले जिला शिक्षा विभाग के उच्च अधिकारियों पर सख्त से सख्त कार्यवाही की जाए। अन्यथा अब कार्यवाही नहीं की गई तो हनुमान सेना के द्वारा पूरे उत्तर प्रदेश में आंदोलन शुरू कर दिया जाएगा जिसकी जिम्मेदारी उत्तर प्रदेश सरकार की होगी। आज की प्रेस वार्ता में उपस्थित रहे। रूबी माधवाल,नीतू चौधरी,विमल गुप्ता,गोकलेश दुबे,अनिल, विमलेश भारद्वाज,नीतू भारद्वाज,जयवीर चौधरी, सतवीर शर्मा,लोकेश शर्मा, और हनुमान सेना के समस्त पदाधिकारी उपस्थित रहे।

गाजियाबाद विधानसभा उपचुनाव को लेकर कांग्रेस के बाद बसपा से भी वैश्य उम्मीदवार ! भाजपा के दावेदारों की बढ़ गई टेंशन

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

यूपी में विधानसभा उपचुनाव को लेकर सरगर्मियां बढ़ी हैं, इसी के साथ गाजियाबाद का सियासी पारा भी चढ़ने लगा है। बसपा के द्वारा घोषित प्रत्याशी डॉ. रवि गौतम का टिकट काटे जाने से ह्लकूलह्व महसूस हो रहे सियासी वातावरण में तड़का लग गया है। रवि गौतम ने टिकट काटे जाने के बाद और रुपये मांगे जाने के आरोप भी लगाए हैं। हालांकि आरोपों की पिच पर उन्होंने संभलकर बैटिंग की, लेकिन माना जा रहा है कि बसपा किसी वैश्य उम्मीदवार को मैदान में उतार सकती है। आजाद समाज पार्टी जाट समाज से आने वाले सत्यपाल चौधरी को उम्मीदवार घोषित कर चुकी है। सपा इस सीट को कांग्रेस के लिए छोड़ सकती है। बसपा वैश्य प्रत्याशी के साथ आ सकती है मैदान में सियासी जानकारों का कहना है कि कांग्रेस पूर्व सांसद सुरेंद्र प्रकाश गोयल के बेटे सुशांत गोयल पर दांव लगाने का मन बना चुकी है। हालांकि 2022 के विधानसभा चुनाव में भी कांग्रेस ने सुशांत गोयल पर ही दांव लगाया था और कांग्रेस मात्र 11,818 वोट पर चौथे नंबर पर जा गिरी थी। उन्हें मात्र 4.8 प्रतिशत वोट मिले थे जबकि भाजपा के अतुल गर्ग ने 61 प्रतिशत से अधिक मत हासिल किए थे। ऐसे में यदि डा. रवि गौतम का टिकट काटकर बसपा से वैश्य उम्मीदवारी से वैश्य मतों का बंटवारा हो जाएगा और ऐसा होने से किसकी राह आसान होगी, कहने की जरूरत नहीं है। पहली बार उपचुनाव लड़ेगी बसपा ध्यान देने वाली बात यह भी है कि बसपा ने चरम पर होते हुए भी कभी सूबे में उपचुनाव नहीं लड़ा और छह माह पूर्व लोकसभा में जीरो पर आउट हुई बसपा इस बार उप- चुनाव लड़ेगी। माना जा रहा है कि उपचुनाव में बसपा के चुनाव लड़ने से कई सीटों पर हार जीत के समीकरण बदल सकते हैं, और यही महत्वपूर्ण है। हालांकि 2012 के विधानसभा चुनाव में स्वर्गीय सुरेश बंसल भाजपा को पटखनी देकर यह सीट बसपा की झोली में डाल दी थी। लंबी है भाजपा में टिकट के दावेदारों की कतार इस सीट पर बड़ी दावेदार मानी जा रही भाजपा में टिकट के दावेदारों की कतार लंबी है। लेकिन सबसे ज्यादा दावेदार इस सीट पर महत्वपूर्ण माने जाने वाले वैश्य और ब्राहमण समाज से ही हैं। यह भी लगभग तय मानिए कि कांग्रेस और बसपा से वैश्य उम्मीदवार मैदान में आने के बाद भाजपा अपने ब्राहमण दावेदारों में से ही किसी की उम्मीदवार पर विचार करेगी। भाजपा में ब्राहमण समाज से दावेदारों की बात करें तो पूर्व महानगर अध्यक्ष अजय शर्मा और वर्तमान महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा के नाम मुख्य हैं। वैश्य समाज से टिकट के दावेदारों में मयंक गोयल, पवन गोयल और समरकूल कंपनी के मालिक संजीव गुप्ता का भी नाम लिया जा रहा है। हालांकि पवन गोयल को पार्टी जीडीए बोर्ड मेंबर बनाकर पहले ही एडजेस्ट कर चुकी है और मयंक गोयल का उपयोग संगठन में किया जाता रहा है। ब्राहमण प्रत्याशी पर दांव लगा सकती है भाजपा लोकसभा चुनाव में जिले के सभी विधायकों ने सदर विधायक अतुल गर्ग के टिकट की पैरवी की थी, संगठन का भी सपोर्ट मिलने पर अतुल गर्ग उस समय के सांसद जनरल वीके सिंह का न केवल टिकट काटने में कामयाब हो गए थे बल्कि अच्छे खासे मार्जिन से चुनकर संसद में भी पहुंच गए, अब अतुल गर्ग सांसद हैं। जाहिर तौर पर लोकसभा चुनाव के टिकट के लिए की गई फी ल्डिंग में मददगार रहे और उप- चुनाव में टिकट के दावेदार की मदद करना उनकी नैतिक जिम्मेदारी होगी। साथ ही सियायत यह भी कहती है कि वह किसी गैर वैश्य की पैरवी करें। ऐसे में उप- चुनाव में भाजपा प्रत्याशी को लेकर बहुत साफ ही है। भाजपा के लिए उपचुनाव सबसे अहम यह उपचुनाव भाजपा के लिए सबसे अहम होगा। उसका सबसे बड़ा कारण तो यही है कि 2022 में यह सीट भाजपा को मिली थी। दूसरे प्रदेश और देश में भाजपा की सरकार है, और गाजियाबाद महत्वपूर्ण सीट है। इसका चुनाव परिणाम बड़े संदेश वाला होगा। शहर में पार्टी के एक केबिनेट मंत्री और एक राज्यमंत्री हैं, मेयर और सांसद भी भाजपा के हैं, किसी वजह चुनाव में कोई चूक तो संदेश बहुत नेगेटिव हो जाएगा। 2022 में विधानसभा चुनाव में स्थिति

भाजपा - अतुल गर्ग - 1,50,205
सपा- रालोद - विशाल वर्मा - 44,668
बसपा - केके शुक्ला - 32691
कांग्रेस - सुशांत गोयल - 11,818 सीट के मतदाताओं के बारे में जानें

कुल मतदाता	: 457980
वैश्य	: 75 हजार
मुस्लिम	: 75 हजार
एससी	: 75 हजार
पंजाबी	: 50 हजार
पहाड़ी	: 30 हजार

वन्य जीव प्राणी सप्ताह के अवसर जिलाधिकारी ने रैली को दिखाई हरी झण्डी

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) छात्र छात्राओं को दी वन्य जीवों से सम्बंधित महत्वपूर्ण जानकारी, कहा वन्य जीवों की सुरक्षा करना हमारा कर्त्तव्य गाजियाबाद वन्य जीव प्राणी सप्ताह के अवसर पर इन्द्र विक्रम सिंह, गाजियाबाद (आशा चौधरी) जिलाधिकारी, द्वारा जिला अधिकारी कार्यालय, कलैक्ट्रेट परिसर से वन्य जीव प्राणी सप्ताह के अवसर पर आयोजित रैली को हरी झंडी दिखाकर शुभारम्भ किया। जिला अधिकारी द्वारा स्कूल के बच्चो से वन्य जीव से सम्बन्धित प्रश्न भी किये गये और बच्चो को वन्य जीवों से सम्बन्धित जानकारी भी दी और कहा वन्य जीवों की सुरक्षा करना हमारा कर्तव्य है। इन्ग्राह्म स्कूल के छात्र छात्राओं द्वारा रैली का आयोजन किया गया। जिला अधिकारी कार्यालय से राजनगर सै0-11 होते हुए इन्ग्राह्म स्कूल पर रैली का समापन किया गया, जिसमें इन्ग्राह्म स्कूल के राजीव मेसी प्रिंसिपल, नोवल मेसी, वाइस प्रिंसिपल व अध्यापक व अध्यापिका और छात्र छात्रों द्वारा भाग लिया गया। वन विभाग के क्षेत्रीय वन अधिकारी, विकास सिन्टोरिया, मुकेश कुमार वन दरोगा, श्याम बिहारी वन दरोगा, रामवीर सिह वन दरोगा, हरप्रसाद वन दरोगा, सुनील कुमार व बबली भी उपस्थित रहे।

भारतीय जनता पार्टी गाजियाबाद महानगर ने बनाये 3लाख से अधिक सदस्य

संस्कार उजाला

गाजियाबाद(आशा चौधरी)

2 सितम्बर 2024 कों भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जे. पी. नड्डा के नेतृत्व में नरेन्द्र मोदी कों भाजपा का सदस्य बनाकर राष्ट्रीय सदस्यता अभियान -2024 संगठन पर्व का प्रारम्भ केंद्रीय कार्यलय से हुआ, उत्तरप्रदेश में भूपेंद्र चौधरी के नेतृत्व में उत्तरप्रदेश में 03सितम्बर से प्रारम्भ हुआ उसी क्रम में गाजियाबाद महानगर में पश्चिम क्षेत्र के क्षेत्रीय अध्यक्ष सतेंद्र शिशोदिया के नेतृत्व में और महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा की अध्यक्षता में 05 सितम्बर 2024 से औपचारिक शुरूआत हुई,भारतीय जनता पार्टी गाजियाबाद महानगर की तीनो विधानसभा में सदस्यता अभियान बहुत अच्छी गति से चाल रहा है, गाजियाबाद विधानसभा प्रदेश की 403 विधानसभा में प्रथम, द्वितीय, और तृतीय स्थान पर बनी हुई है, गाजियाबाद महानगर कों प्रदेश नेतृत्व द्वारा तीन लाख का लक्ष्य प्राप्त जिसको महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा के नेतृत्व में 20 मण्डल 356 शक्तिकेंद्र और 2145 बूथों पर पूर्ण किया गया, गाजियाबाद महानगर के जनप्रतिनिधि, वरिष्ठ नेतागण,संगठन के सभी 20 मण्डल अध्यक्ष, प्रभारी, सभी मोर्चो के अध्यक्ष, महानगर पदाधिकारीगण, प्रकोष्ठ, प्रकल्प एवं विभाग के संयोजक एवं सह संयोजक ने पूरी मेहनत और तन्मयता के साथ सदस्यता अभियान में लगकर कार्य कों गति देने का काम किया भारतीय जनता पार्टी महानगर गाजियाबाद द्वारा 232000 ऑनलाइन के माध्यम से और 156000 ऑफलाइन(केवल मिस्ड कॉल और ऑफलाइन फार्म के माध्यम से) सदस्य बनाये,अभी तक भारतीय जनता पार्टी महानगर गाजियाबाद द्वारा 378000 सदस्य बन चुके है, और द्वितीय चरण की सदस्यता 01 अक्टूबर 2024 से प्रारम्भ होंगी और 15 अक्टूबर 2024 तक चलेगी।

वरिष्ठ समाजसेवी रोटेरियन अनिल कुमार गर्ग व शिक्षा विद् समाजसेवी रोटेरियन रामअवतार जिन्दल द्वारा मुख्य चिकित्सा अधिकारी के अनुरोध पर पोस्टमार्टम हाउस गाज़ियाबाद में कोल्ड रूम का निर्माण का उद्घाटन किया गया

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी) रोटरी क्लब विकास के अध्यक्ष रो० विनीत माहेश्वरी ने बताया की इसमे 30 शवो को रखा जा सकेगा । लोकार्पण सांसद अतुल गर्ग द्वारा किया गया , उनके द्वारा रोटरी के सेवा कार्यो की प्रशंसा करते हुए कहा कि अनिल गर्ग व राम अवतार जिन्दल गाज़ियाबाद में लगातार सेवा के कार्य में कर रहे हैं।मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने रोटरी क्लब आफ गाज़ियाबाद विकास के कार्यो की प्रशंसा की । रोटरी डिस्ट्रिक्ट गवर्नर रो० प्रशान्त राज शर्मा ने रोटरी क्लब आफ गाज़ियाबाद विकास की प्रशंसा करते हुए कहा कि रोटरी क्लब लगातार सेवा कार्य कर रहा है ।क्लब सचिव नलिन गोयल तथा कोषाध्यक्ष रो० कैलाश गोयल द्वारा सभी का अभार व्यक्त किया गया । कार्यक्रम का संचालन संजय अग्रवाल द्वारा किया गया । कार्यक्रम में विशेष रूप से अंजू अग्रवाल, शिखा माहेश्वरी, रेखा गर्ग, चम्पा जिन्दल , रो० कैलाश मंगला, योगेश गर्ग, पवन गुप्ता,संजय गर्ग , विजय जिन्दल, रामअवतार जिंदल, अरविंद गर्ग, अनिल गर्ग,अशोक अग्रवाल और सतीश गर्ग चिकित्सा विभाग से डा० विक्रम , प्रशासनिक अधिकारी योगेश्वर सिंह आदि ने भाग लिया ।

गाजियाबाद में रेल ट्रैक पर पत्थर की सूचना पाकर दौड़ी पुलिस, जानिए क्या निकला मामल

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

रेलवे ट्रैक पर पत्थर रखे देख लोको पायलट ने अंबाला एक्सप्रेस को बीच ट्रैक पर रोकने के बाद मुरादनगर स्टेशन मास्टर का सूचना की ट्रैक पर पत्थर रखे हुए हैं। तत्काल मुरादनगर थाना पुलिस के साथ जीआरपी और आरपीएफ को भी सूचना दी गई। पुलिस दौड़ी- दौड़ी मौके पर पहुंची। पुलिस को देख ट्रैक के पास मौजूद किशोर उखलारसी कालोनी की ओर भागने लगे। बच्चों ने खेल-खेल में रख दिए थे ट्रैक पर पत्थर सीओ जीआरपी सुदेश गुप्ता ने बताया कि मौके से तीन किशोरों को स्थानीय लोगों की मदद से हिरासत में लिया गया था। तीनों से पूछताछ की गई तो पता चला की उन्होंने खेल- खेल में ट्रैक पर पत्थर की गिट्टियां रख दी थीं, वो देखना चाहते थे ट्रेन गुजरेगी तो क्या होगा। पूछताछ में किसी साजिश जैसी कोई बात सामने न आने पर नाबालिगों को काउंसलिंग करने के बाद उनके परिजनों के सुपुर्द कर दिया गया। करीब पांच मिनट खड़ी रही अंबाला इंटरसिटी ट्रैक पर पत्थर रखे होने की सूचना पर अंबाला इंटरसिटी करीब पांच मिनट तक खड़ी। ट्रैक पर कोई व्यवधान न होने के की तसल्ली करने के बाद ट्रेन को रवाना कर दिया गया। सीओ सुदेश गुप्ता ने बताया कि मामले में किसी साजिश का अंदेशा नहीं है, फिर भी छानबीन की जा रही है, ट्रैक के पास की आबादी से आए लोगों को बताया कि गया कि ट्रैक पर कोई भी सदिग्ध गतिविधि नजर आए तो तत्काल सूचित करें।

महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा के निदेर्शानुसार व्यापार प्रकोष्ठ संयोजक अनुज मित्तल की देखरेख में भारतीय जनता पार्टी व्यापार प्रकोष्ठ के संयोजक अनुज मित्तल के देखरेख में व्यापारी सम्मेलन

संस्कार उजाला

गाज़ियाबाद (आशा चौधरी) जीटी रोड स्थित वेस्ट व्यू बैंकेट में किया गया। कार्यक्रम में पहुंचे मुख्य अतिथि कौशल विकास मंत्री कपिल देव अग्रवाल ने संबोधन में कहा कि महानगर अध्यक्ष संजीव शर्मा को एक ही दिन में पार्टी के 10 कार्यक्रम करने पर शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं। उन्होंने उनकी प्रशंसा करते हुए बताया कि संजीव शर्मा एक अध्यक्ष के रूप में बहुत ही ऊजार्वान और कुशल नेतृत्व के धनी है गाजियाबाद में संजीव शर्मा के नेतृत्व में भारतीय जनता पार्टी प्रतिदिन नए कीर्तिमान स्थापित कर रही है। व्यापारियो से सम्मुख होते हुए उन्होने कहा 2017 से पहले देश प्रदेश में किस प्रकार एक भय का माहौल व्याप्त था जगह-जगह व्यापारियों का उत्पीड़न किया जाता था फिरौती हफ्ता वसूली जैसी घटनाएं आए दिन सामने आती थी एक जाति विशेष एवं एक समाज के लोगों का राज चलता था जिनके द्वारा जमीनों पर कब्जे कराए जाने का काम किया जाता था लेकिन 2017 में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी की सरकार आने के बाद से उत्तर प्रदेश प्रतिदिन फल फूल रहा है कानून का राज स्थापित हुआ है और व्यापारी खुशहाल हुआ अनेक प्रकार के नए व्यापार को बढ़ाने के लिए लोन की व्यवस्था की गई सुरक्षा की व्यवस्था की गई और पूरी दुनिया और देश के विभिन्न प्रदेशों का उत्तर प्रदेश में विश्वास बढ़ा और नये व्यापार स्थापित हुए बहुत सारे प्रदेश और विदेशी कंपनियों ने उत्तर प्रदेश में निवेश करना शुरू किया और देश प्रदेश की स्थिति तेजी से बदलती चली गई आज महिला रात को भी कहीं अकेले जा सकती है यह केवल भाजपा की सरकार में ही हुआ उन्होंने व्यापारियों को उत्साहित करते हुए कहा कि आप लोग निश्चिंत रहें आपके जिले के प्रत्येक जनप्रतिनिधि आपके साथ हैं हम हर समस्या में व्यापारियों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं। गाजियाबाद सांसद अतुल गर्ग ने अपने संबोधन से पहले सर्वप्रथम लोहा मंडी के व्यापारियों को सड़क निर्माण के कई कार्यों को कराने का टेंडर आदेशित पत्र दिया। लोहा मंडी के गड्ढा मुक्त करने वाले फरमान पत्र को लोहा व्यापार मंडल के अध्यक्ष अतुल जैन , सुभाष चंद्र गुप्ता ने प्राप्त करते ही उनका एवं भाजपा सरकार का धन्यवाद दिया। अतुल गर्ग ने बताया कि किस प्रकार विपक्षी दलों के द्वारा कहा जा रहा है कि अफसर की नियुक्ति जातिगत होनी चाहिए जो की एक अभिशाप से कम नहीं है अधिकारी एक समाज का प्रतिनिधित्व करने वाला व्यक्ति होता है उन्होंने बताया कि विपक्षों ने कहा कि बांग्लादेश जैसा एक आंदोलन भारत में भी होना चाहिए जबकि हमारी शक्ति एकता में है विरोधी इस भुलावे में ना रहे कि किसी भी प्रकार से भारत के लोगों को भड़काया जा सकता है उन्होंने कहा भारत की अखंडता का सबसे बड़ी पूंजी भारत में एकता की शक्ति है। पूर्व दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री व्यापारी नेता अशोक गोयल ने व्यापारियों को संबोधित करते हुए बताया कि गाजियाबाद के समस्त जनप्रतिनिधि आपकी आवाज को मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री तक ले जाने के लिए सक्षम है और सदा इसके लिए आप सबके साथ खड़े हैं और प्रयास करते रहेंगे। इस कार्यक्रम में अनेक जनप्रतिनिधि एवं पदाधिकारी भी सम्मिलित हुए कार्यक्रम अनेक व्यापार मंडलों के अध्यक्ष पार्टी के कार्यकर्ता थे जिनमें महानगर महामंत्री पप्पू पहलवान महानगर महामंत्री गोपाल अग्रवाल पूर्व दर्जा प्राप्त राज्य मंत्री बलदेव राज शर्मा , राजेंद्र मित्तल, संजीव मित्तल यशवर्धन गुप्ता , प्रदीप चौधरी, बालकिशन गुप्ता बालू , अशोक भारतीय, मनोज गुप्ता, आशू पंडित, कार्यक्रम सह संयोजक अनिल सांवरिया , विपिन गोयल , राकेश गर्ग , सुभाष छाबड़ा, राजू छाबड़ा, मनबीर नागर, संजीव लहोरिया,कामेश्वर त्यागी, विरेंद्र सारस्वत, हरिओम शर्मा, नीरज त्यागी, आलोक त्यागी, संदीप बंसल लोहा विक्रेता मंडल अध्यक्ष अतुल जैन अन्य व्यापारी नेता उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन पंकज गर्ग ने किया।

अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस के अवसर पर राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अन्तर्गत लाभार्थियों को किये उपकरण वितरित

संस्कार उजाला

गाजियाबाद (आशा चौधरी)

विधायक मुरादनगर अजीत पाल त्यागी सहित अन्य गणमान्यों एवं वृद्धाश्रम के संवासियों ने केक काटकर किया कार्यक्रम का उद्घाटन विधायक एवं ब्लॉक प्रमुख रजापुर ने राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अन्तर्गत चिन्हित 73 वरिष्ठ नागरिकों को किये सहायता उपकरण वितरित उत्तर प्रदेश माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों का भरण पोषण तथा कल्याण नियमावली -2014 में दिये गये प्राविधानों के अन्तर्गत जनपद में समाज कल्याण विभाग द्वारा सहायता प्राप्त पी०पी०पी० मॉडल पर अशर्फी ग्रामोद्योग संस्था, छर्रा कालोनी, अलीगढ द्वारा संचालित वृद्धाश्रम, सर छोटूराम छात्रावास, निकट ग्रीन लैण्ड पब्लिक स्कूल, दुहाई, गाज़ियाबाद में दिनांक 01 अक्टूबर 2024 को ₹अन्तर्राष्ट्रीय वृद्धजन दिवस' के अवसर पर राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अन्तर्गत चिन्हित वरिष्ठ नागरिकों को सहायता उपकरण वितरित कराये जाने का कार्यकम आयोजित किया गया। माननीय विधायक मुरादनगर श्री अजीत पाल त्यागी, ब्लॉक प्रमुख रजापुर राहुल चौधरी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, गाज़ियाबाद अमर जीत सिंह व खण्ड विकास अधिकारी, रजापुर डा० आदेश कुमार एवं वृद्धाश्रम के संवासियों द्वारा केक काटकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर मा० विधायक, मुरादनगर द्वारा अपने उदबोधन में वृद्धाश्रम में आवासित वृद्धजनों को शासन द्वारा प्रदत्त समस्त सुविधाओं का लाभ दिलाये जाने का आश्वासन दिया गया। ब्लॉक प्रमुख, रजापर द्वारा शासन द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं से अतिरिक्त अन्य किसी भी प्रकार की सहायता के लिये उपस्थित वृद्धजनों को आश्वस्त किया गया। आज के कार्यक्रम में मा० विधायक एवं ब्लॉक प्रमुख रजापुर के माध्यम से राष्ट्रीय वयोश्री योजना के अन्तर्गत चिन्हित 73 वरिष्ठ नागरिकों को सहायता उपकरण के रूप में व्हील चेयर, श्रवण यंत्र, एल०एस० बेल्ट, छड़ी, कोहनी बैसाखी, वॉकर, चश्मे, कमोड व्हीलचेयर, कमोड स्टूल व अन्य सहायक उपकरण वितरित कराया गया। कार्यक्रम में लायन्स आई हास्पिटल के माध्यम से वृद्धाश्रम में आवासित संवासियों एवं बाहर से आये वरिष्ठ नागरिकों हेतु नेत्र परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। वृद्धजन दिवस के अवसर पर सभी संवासियों को माला पहनाकर सम्मानित किया गया एवं सभी संवासियों को नये वस्त्र वितरित कराया गया। कार्यक्रम का संचालन पूनम शर्मा द्वारा किया गया। कार्यक्रम में अमर जीत सिंह, जिला समाज कल्याण अधिकारी, डा० आदेश कुमार, खण्ड विकास अधिकारी, रजापुर सहित समाज कल्याण विभाग एवं वृद्धाश्रम प्रभारी अर्पित एवं वृद्धाश्रम की अधीक्षिका इन्द्रेश सहित समस्त कर्मचारी उपस्थित रहे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक राजकुमार शर्मा ने वैकुंठ मीडिया प्राइवेट लिमिटेड सी -285, सेक्टर-11, विजय नगर, गाजियाबाद से छपवाकर कार्यालय 178 राहुल विहार विजय नगर,गाजियाबाद से प्रकाशित किया है। किसी खबर या लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निस्तारण जिला न्यायालय गाजियाबाद में होगा। प्रबंध संपादक-महेश कुमार - 9911733939, कानूनी सलाह- नरेंद्र सिंह रणोत एडवोकेट, सलाहकार कुशल सिंह, RNI No-UPHIN/2013/50466, Editor R.K. Sharma : 09456278011